के लिए खड़ा करवाया। सपा सरकार की मशीनरी ने संगीता सेंगर को हरवाने के लिए पूरा जोर लगा दिया था लेकिन कुलदीप सिंह सेंगर अपनी पत्नी को अध्यक्ष बनवाने में कामयाब रहे। आज भी अगर वे इस्तीफा देकर चुनाव लड़ेंगे तो जीत जाएंगे। कहते हैं कि राजनीति के साथ-साथ ठेकेदारी में हाथ आजमाने वाले कुलदीप सिंह सेंगर ने जो पैसा कमाया है, उसे अपने क्षेत्र के लोगों के बीच खूब बांटा भी है। अपने इलाके के हर घर परिवार में होने वाले आयोजन में पहुंचकर वहां कुछ ना कुछ मदद करने का भाव उनमें रहा है। ऐसे में हो सकता है कि कुलदीप सिंह सेंगर ज्यादा अंतर से चुनाव जीत जाएं। ये भी हो सकता है कि उन्हें भाजपा की भी जरूरत नहीं हो। कुलदीप सिंह सेंगर का ये दबदबा तब देखने को मिला जब वे परंपरागत तौर पर भारतीय जनता पार्टी के तौर पर प्रशिक्षित नेता नहीं हैं। वे ना तो संघ की शाखाओं में निखरे हैं और ना ही भारतीय जनता पार्टी के मूल्यों में उनकी कोई आस्था रही है। वे पूरी तरह से अवसरवादी राजनीति का चेहरा हैं। बीते 17 साल से विधायकी और 50 साल से परिवार की पंचायती और प्रधानी ने कुलदीप सिंह सेंगर को वो दबंगई तो दी ही है जिसकी वजह से बलात्कार के आरोपों के बीच कभी वो मुख्यमंत्री सचिवालय में खिलखिलाते नजर आए और कभी लखनऊ के वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक के आवास के बाहर कहते हैं कि आरोप ही लगा है, भगोड़ा तो नहीं हूं। राजनीतिक तौर पर उनके खिलाफ साजिश होने की बात भी होती रही है, लेकिन आशंका के पक्ष में कोई ठोस वजह नजर नहीं आती। इसकी क्या वजह हो सकती है? वजहें दो दिख रही हैं- एक तो कुलदीप सिंह सेंगर, योगी आदित्यानाथ की बिरादरी से आते हैं। संयोग ऐसा है कि जिस थाने ने पीड़िता का मामला दर्ज नहीं किया था, वहां के थानेदार से लेकर जिला पुलिस प्रमुख से लेकर राज्य पुलिस के मुखिया तक, सब ठाकुर हैं। यूपी के मुख्यमंत्री के साथ पुलिस महानिदेशक भी ठाकुर हैं और कुलदीप सिंह सेंगर भी। ऐसे में समझना मुश्किल नहीं है कि उन्हें इसका फायदा तो मिला होगा क्योंकि यूपी की राजनीति में यह हमेशा नजर आता है कि जातीयता एक बड़ा रोल निभाती रही है। हालांकि, एक बात ये भी कही जा रही है कि जिन लोगों के दामन के सहारे कुलदीप सिंह सेंगर बीजेपी में आए थे, वो योगी आदित्यनाथ के दूसरे खेमे के लोग हैं। माना जाता है कि राज्य में बीजेपी के संगठन मंत्री सुनील बंसल और उप-मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य, कुलदीप सेंगर को बीजेपी के पाले में लेकर आए थे। लेकिन सबसे बड़ा सवाल

यही है कि भारतीय जनता पार्टी के लिए वे क्यों जरूरी बने हुए हैं? इसके जवाब में बीजेपी के एक नेता कहते हैं कि वे जेल में हैं ही, सीबीआई जांच कर ही रही है और क्या किया जाए। आरोप सिद्ध तो नहीं हुआ है कि पार्टी निकाल बाहर करें। लेकिन जानकार यही बताते हैं कि बेटी पढ़ाओ, बेटी बचाओ की नीति को आगे बढ़ाने वाले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और उनकी भारतीय जनता पार्टी की छवि को कुलदीप सिंह सेंगर की वजह से पूरे देश में नुकसान पहुंच रहा है। दूसरी तरफ इस मामले पर विपक्षी पार्टियां सड़क से लेकर संसद तक में सवाल उठा रही हैं। सबसे बड़ा सवाल तो हादसे के बाद यही उठ रहा है कि इस मामले में पीड़िता के साथ मौजूद सुरक्षाकर्मी उस दिन कहां गायब थे, इस सवाल का कोई ठोस जवाब ना देने के बाद हादसे के बाद जब यूपी पुलिस के मुखिया ओमप्रकाश सिंह जब मीडिया के सामने आते हैं तो कहते हैं, प्रथम दृष्टया ये मामला ओवरस्पीडिंग का लगता है। ओपी सिंह अपने बयान में जिस मासूमियत से ये कहते नजर आते हैं उससे उनका वो चेहरा तत्काल याद आता है जब ठीक 15 महीने पहले उनका विभाग कुलदीप सिंह सेंगर को गिरफ्तार नहीं करने की वजहें बता रहा था। वे खुद कह रहे थे कि माननीय विधायक जी पर तो अभी आरोप ही लगे हैं। इन दोनों हालात में एक अंतर ये जरूर आया है कि अब कुलदीप सिंह सेंगर जेल में हैं लेकिन जेल में रहने से उनके रसूख में कहीं से कोई कमी आई हो, ऐसा नहीं कहा जा सकता। हादसे से जुड़े तमाम सवाल जिनके जवाब अभी तक नहीं मिले हैं, लेकिन सबसे बड़ा सवाल यही है कि कुलदीप सिंह सेंगर अब तक पार्टी में क्यों बने हुए हैं? इसके बारे में मीडिया ने जब संसद के बाहर यूपी से बीजेपी की सांसद चुनी गईं रीता बहुगुणा जोशी से जब पूछा गया तो उन्होंने टालने जैसा जवाब देते हुए कहा कि बीजेपी वैसी पार्टी है जो अपराधियों को संरक्षण नहीं देती है। हाल ही में यूपी बीजेपी के अध्यक्ष बनाए गए स्वतंत्र देव सिंह ने इस बारे में बात आगे बढ़ाते हुए कहा है कि कुलदीप सिंह सेंगर पार्टी से निलंबित किए गए थे और अभी भी निलंबित हैं। लेकिन कुलदीप सिंह सेंगर कब तक पार्टी में बने रहेंगे और क्यों अब तक पार्टी में बने हुए हैं, इस पर कोई सामने आकर कुछ नहीं कहना चाहता। राष्ट्रीय कार्यकारिणी में शामिल यूपी के एक वरिष्ठ बीजेपी नेता ने कहा कि ये बात सही है कि सार्वजनिक रूप से पार्टी की छवि को जरूर नुकसान पहुंचा है, लेकिन पार्टी इस पर विचार करके जो भी फैसला लेगी वो सामने आ जाएगा। दरअसल, इस पूरे मामले को अगर सिलसिलेवार देखें तो ये समझना मुश्किल नहीं है कि कुलदीप सिंह सेंगर के रसूख के सामने पहले योगी आदित्यनाथ की सरकार और अब बीजेपी भी बेबस नजर आ रही है। दरअसल कुलदीप सिंह सेंगर बीजेपी के टिकट पर उन्नाव जिले की बांगरमऊ सीट से विधायक हैं। उन पर उनके गांव माखी की रहने वाली नाबालिग लड़की ने 4 जून, 2017 को रेप करने का आरोप लगाया था। लेकिन विधायक पर कोई मामला लड़की दर्ज नहीं करा पाई थी। मामला दर्ज हो पाता, उससे पहले 8 अप्रैल, 2018 को पीड़िता के पिता को उन्नाव पुलिस ने आर्म्स एक्ट में गिरफ्तार कर लिया। इसके बाद पीड़िता ने प्रदेश के मुख्यमंत्री आवास के सामने आत्मदाह करने की कोशिश की, जिसमें उन्हें बचा लिया गया। लेकिन पीड़िता के पिता की कस्टडी में हुई पिटाई की वजह से मौत हो गई। सोशल मीडिया में जिस तरह की तस्वीरें और वीडियो पीड़िता के पिता के आए हैं, उससे यही जाहिर होता है कि जब सत्ता आपके हाथ में हो तो सिस्टम को आप कैसे मखौल उड़ा सकते हैं और आम आदमी सत्ता में मदांध तंत्र के सामने कितना निरीह हो सकता है। ये झलक उस बानगी में भी दिखी जिसमें योगी आदित्यनाथ का बयान कि 'किसी को भी बख्शा नहीं जाएगा', बावजूद राज्य के गृह विभाग के सचिव और उत्तर प्रदेश के पुलिस महानिदेशक कुलदीप सिंह सेंगर को विधायक जी और माननीय विधायक जी कहते नजर आए। जब पत्रकारों ने पुलिस महानिदेशक के माननीय कहने पर आपत्ति जताई तो राज्य के पुलिस प्रमुख ये बताने लगे कि अभी तो उन्हें दोषी नहीं माना जा

सकता, अभी तो आरोप लगे हैं। इस पर जब मीडिया में हंगामा मचा तो 12 अप्रैल, 2018 को मामले को सीबीआई को सौंप दिया गया। इसके बाद 7 जुलाई, 2018 को सीबीआई ने पीड़िता के पिता की मौत के मामले में आरोपपत्र दाखिल किया। इसके बाद 11 जुलाई, 2018 को विधायक पर बलात्कार का मामला दर्ज किया। पीड़िता नाबालिग है, इसलिए पॉक्सो एक्ट (प्रोटेक्शन ऑफ चिल्ड्रेन फ्रॉम सेक्शुअल ऑफेंसेस एक्ट, 2012) के तहत भी ये मामला दर्ज किया गया है। 13 जुलाई, 2018 को कुलदीप सिंह सेंगर से सीबीआई ने लगातार 16 घंटे पूछताछ करने के बाद उन्हें गिरफ्तार किया। इसके बाद 13 जुलाई को ही सीबीआई ने कुलदीप सिंह सेंगर पर पीड़िता के पिता के खिलाफ झूठा आरोप लगाने का मामला दर्ज किया। लेकिन इन मामलों में अब तक किसी की सुनवाई शुरू नहीं हो पाई है।

विडम्बना है कि पूरे भारतवर्ष के सबसे शक्तिशाली नेता के तौर पर नरेन्द्र मोदी को जिस तरह देखा जाता है, वह आखिर उन्नाव बलात्कार कांड को लेकर चुप्पी क्यों साधे हुए हैं। एक तरफ जहां मुस्लिम महिलाओं पर सियासी राजनीति करने को लेकर संसद में ट्रिपल तलाक को बंद कर दिया गया, जिसकी खुशी पार्टी के हर सदस्य और नेता को है। किन्तु उस नाबालिग पीड़िता की वेदना माननीय प्रधानमंत्री तक नहीं पहुंच रही! उन्नाव बलात्कार कांड की पीड़ित पर जानलेवा हमले के बाद बीजेपी की सरकार को जवाब देना चाहिए कि भारत में उनका सुशासन चलता है या दबंगों का राज? पुलिस सुरक्षा देने में क्यों विफल है? एक बहुत ताकतवर विलेन, जिसका दबदबा राजनीति में है। पुलिस भी उसके इशारों पर नाचती है। उसके खिलाफ शिकायत करने वाला बर्बाद हो जाता है। यह 1990 के दशक की बॉलीवुड फिल्म नहीं है। यह उन्नाव केस का सच है, जिसमें विलेन की भूमिका में बीजेपी के नेता कुलदीप सेंगर हैं। सुशासन का नारा देने वाली पार्टी बीजेपी के विधायक सेंगर पर बलात्कार का आरोप लगाने वाली युवती जिंदगी और मौत से जूझ रही है। दो साल के भीतर वह इस कगार पर पहुंची है। वह अन्याय का विरोध करने की सजा भुगत रही है। पहले बलात्कार की शिकायत दर्ज कराने के लिए उत्तर प्रदेश की पुलिस के सामने कई बार गिड़गिड़ाना पड़ा। धमकियां झेलनी पड़ी। लेकिन युवती और उसका परिवार अडिग रहा। अदालत ने मामले को अपने संज्ञान में लेते हुए पुलिस को मामला दर्ज करने का आदेश दिया। लेकिन जैसे ही मामला दर्ज हुआ, उसके कुछ ही दिन बाद मामूली विवाद में पिता को पुलिस ने हिरासत में ले लिया। हिरासत में पिता की मौत हो गई। उत्तर प्रदेश पुलिस पर आरोप लगा कि उसके पिता को पीट पीटकर मार डाला गया। पिता बलात्कार के मामले में गवाह थे। बाद में एक और गवाह की भी मौत हो गई। विधायक की गिरफ्तारी के बीच कोर्ट में मामला चलता रहा। इस बीच पीड़ित परिवार जान बचाने के लिए दर दर भटकने लगा। प्रशासन की तरफ से सुरक्षा भी मुहैया कराई गई। लेकिन इसके बावजूद दो साल बाद एक ट्रक ने पीड़िता की कार को टक्कर मार दी। पीड़ित युवती बुरी तरह जख्मी हुई। उसकी मौसी और चाची की मौके पर ही मौत हो गई। वकील भी घायल हो गया। यह सब

1990 के दशक की बॉलीवुड फिल्म की तरह लगता है, लेकिन यह 2019 के भारत की सच्चाई है और वह भी उस भारत की जिसकी बागडोर सुशासन का नारा देने वाली पार्टी के हाथ में है। जिसकी उत्तर प्रदेश समेत ज्यादातर प्रांतों में सरकार है। वह पार्टी बलात्कार और हत्या का मुकदमा झेल रहे विधायक को अब तक नहीं निकाल सकी है। लोक सभा चुनावों में जेल में जाकर बीजेपी के उम्मीदवार उससे समर्थन मांग चुके हैं। 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' के नारे के बीच उन्नाव का मामला बताता है कि जमीन पर हालात बदले नहीं है। वहां लोकतांत्रिक भारत नहीं बल्कि दबंगों का भारत बसता है। करीब करीब कांग्रेस मुक्त भारत पर राज करने वाली बीजेपी पर अब ये बताने की जिम्मेदारी है कि महिलाओं के खिलाफ हिंसा में कोई कमी क्यों नहीं आ रही है? पुलिस और कानून से निराश भीड़ लोगों को पीट पीटकर क्यों मार रही है? सुशासन वाली सरकार की पुलिस अब भी स्थानीय दबंगों की कठपुतली क्यों बनी हुई है? और अगर ये सब ऐसे ही चलता रहा तो फिर से कोई कुलदीप सेंगर सामने आयेगा और किसी नाबालिग की इज्जत-आबरू पर बलात्कार की चादर चढ़ायेगा तथा लड़कियां न्याय की आश में वेदना भरी चित्कार से अंततः मर जायेगी, जिसका जिम्मेदार देश के वजीरे आजम होंगे? ●

स्वतंत्रता दिवस एवं रक्षाबंधन के शुभ अवसर पर सभी पुलिसकर्मियों एवं हरनौत की समस्त जनता को हार्दिक शुभकामनाएँ।

-: निवेदक :-

ऋतुराज

थानाध्यक्ष, हरनौत थाना, नालंदा

मौत का सेंटर है पारस हॉस्पीटल

● शशि रंजन सिंह/प्रदीप कु० सिन्हा

पारस हॉस्पीटल दरभंगा के डायलिसिस युनिट द्वारा इलाजरत मरीजो को हैपेटाइटिस C से संक्रमित करने का गम्भीर आरोप लगा है और इसके विरुद्ध सिविल सर्जन के पास एक लिखित शिकायत भी दर्ज की गई है। पारस हॉस्पीटल प्रबंधन और डॉक्टर पर लापरवाही का यह आरोप लगा है की मेडिकल नियमों को ताक पर रख कर मरीजों का ईलाज किया जा रहा है जिससे मरीज और भी खतरनाक संक्रमित बिमारियों के शिकार हो रहें है। पारस हॉस्पीटल दरभंगा द्वारा अक्टूबर 2018 में पुराने नेफ्रॉलोजिस्ट के जाने के बाद पारस मे ही कार्यरत डा. अब्दुल वहाब जो की आर.एम.ओ थे उनको प्रमोट कर नेफ्रोलॉजिस्ट बना कर किडनी के मरीजों का ईलाज किया गया। ये सारा खेल पारस युनिट हेड संदीप घोष, डा. अब्दुल वहाब और टेक्नीशियन राहुल मौर्य के मिलीभगत से खेला गया। ताजा घटना के अनुसार एक ही डायलिसिस मशीन पर एक हैपेटाइटिस C संक्रमित मरीज के डायलिसिस के उपरांत उसी मशीन पर दूसरे मरीज का डायलिसिस किया गया जिससे वो मरीज भी हैपेटाइटिस C से संक्रमित हो गया। सूत्रों के अनुसार अभी तक 5 से 6 मरीज इस खतरनाक संक्रमण की चपेट में आ चुके हैं और नियमित डायलिसिस करवा रहे मरीज कभी भी इस संक्रमण का शिकार हो सकते हैं, क्योंकि अस्पताल प्रबंधन इसके प्रति कोई ठोस कार्रवाई करते नहीं दिख रहा है। मरीज के परिजन का कहना है की उन्होंने सर्वप्रथम इसके खिलाफ अस्पताल मे ही वरिष्ठ अधिकारियों से बात की थी और कहा था की ऐसे मे हमारे मरीज को संक्रमण होने की सम्भावना है परंतु उन्होंने ये अस्वस्थ किया की अस्पताल किसी भी मरीज की जिन्दगी से नहीं खेल सकता जो की बाद में उनकी सारी बातें खोखली निकली। उनमें कुछ ऐसे मरीज भी हैं जो किडनी प्रत्यारोपण के लिए प्रयासरत थे उनके पास डोनर है और बिहार स्वास्थ विभाग द्वारा एन.ओ.सी भी प्राप्त है और प्रिट्रांस्प्लांट टेस्ट में वो पेशेंट हैपेटाइटिस C से संक्रमित पाई गई जिसके पश्चात पटना पारस के वरिष्ठ डाक्टरों ने उस मरीज के किडनी प्रत्यारोपण के लिए साफ साफ मना कर दिया। इससे साफ पता चलता है की जो मरीज पुर्णत: स्वस्थ हो सकता था, आज के समय में लाचार है और उसपर ईलाज का अतिरिक्त बोझ भी बढ गया है। मरीज के परिजन का यह भी कहना है की शिकायत करने के पश्चात निष्कर्ष देने की जगह विभिन्न तरीकों से मरीज और परिजन को प्रताड़ित किया जाने लगा, कभी बहुत सारे टेस्ट करवाने को कहा जाता है तो कभी डायलिसिस के लिए समय नहीं दिया जाता। इस तरह मरीज और उसके परिजन का मनोबल तोड़ने को हॉस्पीटल प्रबंधन प्रयासरत है। पारस द्वारा कोई हल नहीं मिलने पर कुमार अभिषेक ने 11 मई को मौखिक और 14 मई को लिखित शिकायत सिविल सर्जन औफिस में दी, परंतु 15 दिन तक जब वहां भी कोई कार्रवाई नहीं हुई तो मरीज एवं परिजन ने 6 जून से अनिश्चितकालीन भूख हड़ताल पर जाने का निश्चय किया, जिसके बारे मे लिखित जानकारी सिविल सर्जन, डी एम दरभंगा और एस एस पी दरभंगा को दी गई। मामले को बिगड़ता देख आनन फानन मे एक मेडिकल टीम गठित हुई परंतु शिकायतकर्ता का कहना है की मेडिकल टीम महज का रवैया महज खानापूर्ति करने जैसा रहा। मरीज और परिजन का कहना है की अब जब तक न्याय नहीं मिलेगा वो लोग सिविल सर्जन कार्यालय पर भूख हड़ताल पर रहेंगे।

निजी अस्पताल पर कार्रवाई के लिए भूख हड़ताल पर बैठे मरीज व परिजन

स्कर

पारस अस्पताल में जांच में लापरवाही बरते जाने के विरोध में की भूख हड़ताल

लापरवाही का आरोप, भूख हड़ताल पर बैठे परिजन

अस्पताल पर लापरवाही का आरोप, अनशन पर बैठे

☆ पारस हॉस्पीटल के खिलाफ जांच :- पारस हॉस्पीटल में डायलिसिस में अनियमितता के कारण मरीज को हैपेटाइटिस C से संक्रमित करने के आरोप मे गठित जांच कमिटी की रिपोर्ट आ गई, इस संदर्भ में जांच कमिटी ने सिविल सर्जन को रिपोर्ट दी जिसमे पारस के विरुद्ध उच्च स्तरीय जांच की अनुशंषा की गई है, मामले की सम्पुर्ण जानकारी सिविल सर्जन दरभंगा द्वारा डी एम दरभंगा को दी गई। जिसके पश्चात सिविल सर्जन ने स्वास्थ विभाग को उच्च स्तरीय जांच की अनुशंसा की है। शिकायतकर्ता कुमार अभिषेक को सिविल सर्जन ने आश्वस्त किया की इस पूरे मामले का अनुसंधान निष्पक्ष की जाएगी और दोषियों के विरुद्ध कार्रवाई की जाएगी, सिविल सर्जन के आश्वासन उपरांत शिकायतकर्ता कुमार अभिषेक ने अपना 32 घंटे का अनशन तोड़ा, आशा करते हैं की जांच में दोषियों के विरुद्ध कार्रवाई होगी। शेष अगले अंक में। ●

रोटा वायरस की जकड़ में फंसते बच्चे

● रणजीत कुमार सिन्हा

बीते 03 जुलाई 2019 को सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र फुलवारी पटना में विकास आयुक्त, बिहार सरकार, के कर कमलों द्वारा बच्चों को रोटा वायरस से होने वाली जानलेवा दस्त से बचाव हेतु पिलाई जाने वाली वैक्सिन का शुभारंभ किया गया। प्रधान सचिव के द्वारा बताया गया कि रोटा वायरस दस्त के कारण गम्भीर अवस्था में बच्चों को अस्पताल में भर्ती होना पड़ता है। कभी-कभी दस्त जानलेवा भी हो जाती है। हर्ष का विषय है कि राज्य के नियमित टिकाकरण कार्यक्रम में आज एक नई वैक्सिन शामिल की जा रही है, जो रोटा वायरस के कारण होने वाली गम्भीर दस्त से सुरक्षा प्रदान करायेगी। रोटा वायरस वैक्सिन को मिलाकर राज्य में कुल 12 प्रकार के जानलेवा बिमारियों यथा: (1. टी.वी., 2. पोलियो, 3. हेपेटाईटिस 'बी', 4. गलघोटू, 5. काली खाँसी, 6. टेटनस, 7. हिमोफिलस इन्फ्यूऐंजा (हिब), 8. निमोनिया, 9. खसरा, 10. रूबैला, 11. जापानी इन्सेफलाइटिस एवं 12. रोटा वायरस) से बच्चों को सुरक्षा प्रदान किया जा सकेगा। रोटा वायरस वैक्सिन की 5 बूंदे बच्चों को 6, 10 एवं 14 सप्ताह पर पेन्टावैलेंट के साथ पिलाई जानी है। अब बिहार देश का 16 ऐसा राज्य हो जायेगा जो इस वैक्सिन से बच्चों को रोटा वायरस से पूर्ण प्रतिरक्षित करेगा। रोटा वायरस वैक्सिन बच्चों को रोटा वायरस दस्त से बचाने के साथ-साथ कुपोषण दर में भी कमी लाती है। यह वैक्सिन अभी तक भारत के 15 राज्यों में 4.14 करोड़ खुराक बच्चों को पिलाई जा चुकी है और यह वैक्सिन पूर्णत: सुरक्षित है। बिहार में रोटा वायरस वैक्सिन की मदद से हर साल डायरिया से 33 लाख नवजात शिशुओं का बचाव किया जा सकेगा। विश्व भर में अभी तक 98 देशों में रोटा वायरस वैक्सिन दिया जा रहा है एवं जिन देशों में रोटा वायरस वैक्सिन दी जा रही है वहाँ रोटा वायरस के कारण अस्पताल में भर्ती और मृत्यु के दर में कमी दर्ज की गयी है। राज्य भर में रोटा वायरस को नयमित टीकाकरण में शामिल किये जाने हेतु सभी आवश्यक तैयारी पूरी कर ली गयी है, इस हेतु राज्य, जिला एवं प्रखण्ड स्तर तक चिकित्सा पदाधिकारी, ए.एन.एम., आशा, आंगनबाड़ी एवं अन्य सहयोगी कर्मियों को प्रशिक्षित किया जा चुका है एवं राज्य के सभी 663 शीत् श्रृंखला भंडार गृहों पर वैक्सिन की उपलब्धता सुनिश्चित की जा चुकी है। रोटा वायरस वैक्सिन शुभारंभ के अवसर पर कार्यपालक निदेशक राज्य स्वास्थ्य समिति श्री मनोज कुमार (भा.प्र.से.), अपर निदेशक (प्रतिरक्षण)-सह-राज्य प्रतिरक्षण पदाधिकारी डॉ. नरेन्द्र कुमार सिन्हा, राज्य कार्यक्रम पदाधिकारी श्री रामरतन, सिविल सर्जन, पटना, जिला प्रतिरक्षण पदाधिकारी पटना, स्वास्थ्य विशेषज्ञ यूनिसेफ डॉ. सैयद हुब्बे अली, वरीय तकनिकी प्रबंधक जे.एस.आई., राज्य कार्यक्रम पदाधिकारी यू.एन.डी.पी., विश्व स्वास्थ्य संगठन के अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

☞ **रोटा वायरस से संबंधित जानकारी :-** राज्य सरकार स्वस्थ्य बिहार, समृद्ध बिहार के लक्ष्य की प्राप्ति हेतु कृत संकल्पित है। कहा गया है कि "Prevention is better than Cure"

इसी क्रम में टीकाकरण बच्चों के बहुमूल्य जीवन के बचाव का एक सशक्त माध्यम है। पूर्व में राज्य में नियमित टीकाकरण का आच्छादन काफी कम अर्थात् लगभग 18% (स्रोत : CES वर्ष 2005) था, जिसका मुख्य कारण स्थानीय स्तर पर टीकाकरण सेवाओं का अभाव था। नियमित टीकाकरण की महता एवं बच्चों के बहुमूल्य जीवन को सुरक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से सरकार द्वारा नियमित टीकाकरण के क्षेत्र में विगत वर्षों में विशेष ध्यान देते हुए विभिन्न प्रयास किये गए, जिसके अन्तर्गत प्रतिरक्षण सप्ताह, मुख्यमंत्री सघन टीकाकरण अभियान, मिशन इंद्रधनुष आदि अभियानों का संचालन कर आच्छादन प्रतिशत में आशातीत बढ़ोतरी कर इसे 84% तक (डब्लू.एच.ओ. मॉनिटरिंग डाटा) लाया गया है। इसके साथ ही समय-समय पर जनमानस में जागरूकता हेतु भी प्रयास किये जा रहे हैं। टीकाकरण के आच्छादन प्रतिशत में हो रही वृद्धि का प्रतिफल राज्य में शिशु मृत्यु दर में हो रही गिरावट के रूप में परिलक्षित हुआ है, जो वर्ष 2005 में 61 से घटकर 2019 में 35 दर्ज किया गया है। राज्य में विभिन्न बीमारियों की रोकथाम हेतु नये टीकों को समय-समय पर नियमित टीकाकरण में शामिल किया जाता रहा है। पूर्व में हेपेटाइटिस 'बी', जापानी इंसेफलाइटिस (चिन्हित 24 जिलों), पेन्टावैलेन्ट, पी.सी.वी., आई.पी.वी., खसरा-रूबैला आदि टीकों को शामिल किया गया है। निमोनिया एवं डायरिया, बच्चों की मृत्यु का मुख्य कारण है। निमोनिया से बचाव हेतु 2017-18 में निमोकोकल कंजुगेट वैक्सिन (पी.सी.वी.) नियमित टीकाकरण अन्तर्गत राज्य में शामिल किया जा चुका है। डायरिया के कारण अस्पताल में भर्ती होने वाले बच्चों में से लगभग 40% बच्चे रोटा वायरस संक्रमण से ग्रसित होते हैं। यही कारण है कि भारत में प्रतिवर्ष लगभग 32.7 लाख बच्चे अस्पताल की ओ.पी.डी. में आते हैं, इनमें से लगभग 8.72 लाख बच्चों को अस्पताल में भर्ती करना पड़ता है तथा प्रतिवर्ष लगभग 78 हजार बच्चों की मृत्यु भी हो जाती है। रोटा वायरस एक अति संक्रामक वायरस है। आम तौर पर रोटा वायरस एक बच्चे से दूसरे बच्चों में दूषित पानी, दूषित भोजन एवं दूषित हाथों के संपर्क में आने से फैलता है। सामान्य उपाय जैसे कि अच्छी स्वच्छता, बार-बार हाथ धोने, साफ एवं स्वच्छ पानी पीने एवं ताजा एवं सुरक्षित खान-पान आदि, से रोटा वायरस संक्रमण से बचाव किया जा सकता है, परन्तु यह विकल्प रोटा वायरस जनित दस्त रोग को फैलने से रोकने के लिए पर्याप्त नहीं है। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि पाश्चात्य देशों में भी जहाँ स्वच्छता उनकी पहचान है, वहाँ के बच्चे भी रोटा वायरस जनित डायरिया से ग्रसित होते हैं। रोटा वायरस टीकाकरण रोटा वायरस डायरिया से रोकथाम का एक मात्र कारगर उपाय है। वर्तमान में अभी विश्व के 98 दिशों में इसका टीकाकरण कराया जा रहा है एवं भारत के 15 राज्यों में 2016 से दिया जा रहा है। रोटा वायरस वैक्सीन पूर्णत: सुरक्षित वैक्सीन है एवं अभी तक अन्य राज्यों में 4.14 करोड़ से अधिक खुराक बच्चों को पिलाई जा चुकी है।

इसी क्रम में नियमित टीकाकरण के अन्तर्गत बिहार में रोटा वायरस वैक्सिन का टीकाकरण दिनांक 3 जुलाई 2019 से प्रारम्भ किया जा रहा है, इस हेतु राज्य स्तर पर तीन बैच में कुल 238 Naster Trainer को प्रशिक्षित किया गया जिनके द्वारा जिला एवं प्रखण्ड स्तर पर चिकित्सा पदाधिकारी एवं स्वास्थ्य कर्मियों को प्रशिक्षण दिया गया। ●

अंचल कैंप के नाम पर सिर्फ होती है खानापूर्ति

● रणजीत कुमार सिन्हा

बिहार के पटना जिला अंतर्गत सदर अंचल में दिनांक 25 जुलाई 2019 को एक कैंप लगाया गया कैंप में सिर्फ खानापूर्ति किया गया इसकी आंखों देखा हाल मैं बता रहा हूं वहां उपस्थित राजस्व कर्मचारी अपने साथ अनाधिकृत रूप से चार से पांच व्यक्ति अपने अपने साथ सदर अंचल कैंप में प्रति हल्का में बिठाकर काम नहीं करने एवं पैसा उगाही करने का मामला प्रकाश में आया है अंचल में पहुंचे अनंत सिंह बाटा दीघा पटना रामराज चौधरी दीघा संजय कुमार दीघा सचिन आनंद जी दिलीप कुमार गुड्डू जी सबलपुर सोनू जी राम कृष्णा नगर महेंद्र जी कंकड़बाग कई ऐसे प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि बगैर पैसा के कोई भी कर्मचारी काम करने के लिए तैयार नहीं है अंचल अधिकारी के अनुपस्थिति में यह कैंप चल रहा है इसको देखने वाला कोई नई बात नहीं है सिर्फ जो पैसा देता है उसको भी दौड़ा-दौड़ा कर तंग करने के बाद राम प्रवेश शर्मा बिंदेश्वर सिंह एवं श्रीवास्तव जी जैसे कर्मचारी राजस्व काम करते हैं सिर्फ कैंप में जो पहले से केस नंबर निष्पादित रहता है उसी को करंट में निष्पादन संख्या बताया जाता है जब एक दिन में 10000 की संख्या का निष्पादित होता है तो पूरे कार्यकाल में कर्मचारी क्यों नहीं निष्पादित करते हैं सिर्फ बहाना बनाकर पूर्व मालिक का जमीन रसीद मांगा जाता है जबकि सरकार का प्रावधान यह भी है कि एक सूचना निबंधक के नाम से चिपकाकर आपत्ति पत्र लेकर भी केस को निष्पादित किया जा सकता है परंतु ऐसा देखने को कभी नहीं मिलता है ऐसे सैकड़ों पब्लिक ने इस बात की पुष्टि की है सोचनीय बात है कि 1 दिन के कैंप में 10000 केस निष्पादित किया जाता है तो साल में कितने केस निष्पादित हो सकता है आखिर नहीं होने का क्या कारण है जनता का कहना है कि नियम कानून किए बगैर प्रवाह किए पैसा लेकर काम करते हैं सालों महीनों से हम लोग घूमते रहते हैं और किसी का कोई सुनता नहीं है दिनांक 11 जुलाई 2019 को भी एक कैंप लगा था दिनांक 20 जुलाई 2019 को भी एक कैंप लगा था और आज दिनांक 25 जुलाई 2019 को भी कैंप लगा है जिसमें टेबल संख्या एक पर कर्मचारी विदेश किशोर सिंह, राजस्व कर्मचारी श्रीवास्तव जी, हल्का नंबर 1 और 2, टेबल नंबर 3, संख्या 3 पर कर्मचारी प्रदीप विश्वकर्मा हल्का नंबर 3 और 4 सहित सभी कर्मचारी भाड़े पर कमरा लेकर एक प्राइवेट कार्यालय खोल रखे हैं जिसमें अनाधिकृत व्यक्ति चार से पांच की उपस्थिति रहती है कर्मचारी से पहले वही लोग जनता से बात करते हैं पैसे की भी उगाही होती है दाखिल खारिज में 2000 से 10000 तक की रकम वसूल करने की बात सामने आई है मैं पूछना चाहता हूं कि विभाग एवं सरकार से अनाधिकृत रूप से बैठने वाले व्यक्ति का मानदेय का भुगतान कौन करता है? विभाग, सरकार या राजस्व कर्मचारी ऐसी कोई व्यवस्था है? क्या इसके बाद काम नहीं होता है? क्यों बरसो महीनों जनता चक्कर काटते एवं परेशान होते रहते हैं? आखिर काम किसी का भी सुचारू रूप से नहीं होता है क्यों? ●

बिहार का लंगड़ा डॉन बना विकाश कुशवाहा

● डॉ० लक्ष्मीनारायण सिंह

आज अधिकांश थानेदार का खौपनाक छवि से आम नागरिक के पसीने छूटने लगते हैं। बात यह है कि कब किसे अकारण जेल मे ठूंस दे पिटायी कर दे तथा अपराधी का ताज पहना दे कहा नही जा सकता। थानेदार को नियंत्रण करने लिए डी0 एस0 पी0, ए0 एस0 पी0, एस0 एस0 पी0, डी0 आई0 जी0, आई0 जी, आई0 जी0, ए0 डी0 जी0, डी0 जी0 पी0 आदि है वावजूद थानेदार की छवि सुधर नही रही है। आज लाखों निर्दोष लोग जेल में बंद है। घटनाओं की भरमार है कहाँ से शुरूआत करें यह भी मुश्किल है। यहाँ एक उदाहरण सिर्फ है पटना जिला के खुशरूपुर थाना काण्ड सख्या 221/2019 के

अभियुक्त विकास कुमार कुशवाहा, जो, दोनों पैर से विकलांग है। जो ठीक से चल भी नही सकता है। उसके खिलाफ रंगदारी मांगने का मुकदमा ठोका गया है, दरअसल मुकदमा करने के कारण नल जल योजना, आदि में भ्रष्टाचार को उजागर किया था। थाने में थानेदार ने विकाश कुशवाहा के विरूद्ध धारा 341, 323, 504, 506, 34, 389, 386, 3 (1), (5), एस0 सी/ एस0 टी0 एक्ट दर्ज किया। थानेदार ने अपने दिमाग की डायरेक्टी के सभी धाराएं लगाकर बिहार के चर्चित लगड़ा डॉन घोषित कर दिया है। सबसे रोचक घटना है कि भ्रष्टाचार के विरोध के कारण विकास कुशवाहा को पिटाई कर दिया था। पिटाई के बाद विकास थाने में जाकर मुकदमा दर्ज कराया। जो मुकदमा संख्या 220/2019 में दर्ज है। मुकदमा दर्ज करने के बाद विकास कुशवाहा से ही पीटने वाला को फोन नम्बर मांग कर थानेदार ने उसे बुलाया तथा पीटने वाला से विकास कुमार के विरूद्ध मुकदमा दर्ज करवा दिया। जिसका मुकदमा संख्या 221/2019 है। आज भी अपवाद में चरित्रगण और संस्कारी पुलिस अधिकारी है जैसे फतुहा में थे नवल सिंह, असरार अहमद, के के साहु, जितेन्द्र सिंह यादव, रघुनाथ सिंह आदि फतुहा में एक मात्र डी0 एस0 पी0 थे नीलेश कुमार उन अधिकारियों के नाम आज भी सभी के जुवानो पर हैं।

उपरोक्त पुलिस अधिकारियों की प्रशंसा आज भी होती है। क्योंकि इन लोगों ने बेहद ईमानदारी से अपने कर्त्तव्य को पूरा किया और पुलिस की मान-मर्यादा को जनता के बीच स्थापित किया तथा अनेक दबंग अपराधियों को भी जेल भेजने का काम किया। ●

Wahe Guru Developers Pvt. Ltd.
..... For the rest of your life !
Wahe Guru Developers
Anant Kumar
Director
Mob.: +91 7762089999

CIN NO. :- U45201BR2015PTC024013 GST No. :- 10AABCW6394B1ZN
Head Office : Station Road, Nawada.
Ph.: 06324 210204, Mob.: +91 7762079999, 7762089999
E-Mail: wahegurudevelopers15@gmail.com, anantraajnwd@gmail.com
Web. : www.wahegurudevelopers.com
Nawada, Rajgir, Gaya, Bodhgaya, Patna & many more area
अब सपनों का घर खरीदना हुआ आसान, घर बैठे सम्पर्क करे।

हरनौत रेलवे स्टेशन पर यात्रि सुविधाओं का आभाव

● मुन्ना पाण्डेय

स्थानीय रेलवे स्टेशन पर यात्री सुविधाओं का घोर अभाव है। इसके चलते यात्रियों के साथ-साथ रेलकर्मियों को भी परेशानी हो रही है। रेल कारखाना स्थापित होने से हरनौत रेलवे स्टेशन का देश मे एक अलग पहचान बन गया है। लेकिन यात्री सुबिधा के नाम पर अन्य स्टेशनों से बहुत पीछे है। बख्तियारपुर राजगीर रेल लाइन में राजगीर एवं बिहार शरीफ के बाद हरनौत स्टेशन से सबसे ज्यादा राजस्व आता है। इसके बाद भी रेलवे के अधिकारी यात्री सुविधाओं का ख्याल नहीं रख रहे हैं। ।5 अप्रैल 2004 को तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ एपीजे अब्दुल कलाम रेल कोच मरम्मत कारखाना का शिलान्यास करने आए थे। तब आनन फानन में दिन-रात एक कर मॉडल रेलवे स्टेशन का रुप दिया गया था। उसके बाद से आज तक यहां यात्री सुविधाओं के लिए कोई व्यवस्था नहीं किया गया है। यहां तक की उपलब्ध सुविधाएं भी धीरे धीरे गायब होते जा रहे हैं। स्टेशन पर यात्रियों को बैठने के लिए कोई व्यवस्था नहीं है। न शौचालय और नहीं पीने के लिए पानी की व्यवस्था है। जीआरपी पोस्ट नहीं रहने के चलते स्टेशन पर यात्रियों व रेलकर्मियों का सुरक्षा व्यवस्था भी भगवान भरोसे रहता है।

☞ **पेयजल की समस्या है गंभीर** :- यादव ने बताया कि रेलवे स्टेशन पर दो प्लेटफॉर्म है। दोनों प्लेटफार्म पर दो दो चापाकल तो है, लेकिन पिछले कई महीना से खराब पड़ा है। जिसके चलते यात्रियों को भारी परेशानियों का सामना करना पड़ता है। लोग पानी के लिए इधर-उधर भटकते नजर आते हैं। स्टेशन पर लगाए गए नल से पानी निकलना बहुत पहले बंद हो चुका है। क्योंकि एक साल पहले मोटर जल गई है। प्यास बुझाने के लिए यात्री एक से दूसरे प्लेटफार्म पर पानी खोजते नजर आते हैं। हर दिन हजारों यात्रि आते जाते हैं। फिर भी पानी के लिए पानी-पानी होना पड़ रहा है। यहां तक कि रेल कर्मियों को भी पानी के लिए सोचना पड़ता है।

☞ **स्टेशन पर नहीं है शौचालय** :- राजद के प्रखण्ड अध्यक्ष संजीत कुमार यादव ने बताया कि रेलवे स्टेशन पर एक भी शौचालय नहीं रहने के चलते खासकर महिलाओं को सबसे ज्यादा परेशानियों का सामना करना पड़ता है। सरकार खुले में शौच मुक्त करने की बात करती है। रेलवे स्टेशन पर एक भी शौचालय नहीं रहना सरकारी दावों की पोल खोलने के लिए काफी है। महिला यात्री अर्पणा कुमारी एवं शोभा देवी ने बताया कि पुरूष तो किसी तरह इधर-उधर शौच कर लेते हैं। हमलोग जाए तो कहां जाए। स्टेशन पर महिला पुरुष के लिए अलग-अलग शौचालय व स्नानागार बनाया जाना चाहिए।

☞ **बुद्ध पूर्णिमा का नहीं है स्टॉपेज** :- बख्तियारपुर राजगीर रेलवे लाइन पर बिहार शरीफ के बाद हरनौत से सबसे ज्यादा राजस्व आता है। बावजूद यहां बुद्ध पूर्णिमा एक्सप्रेस का स्टॉपेज नहीं है। रेल कारखाना होने के बाद भी यहाँ बुद्ध पूर्णिमा का स्टॉपेज नहीं है। इसके चलते मध्य रात में प्राइवेट गाड़ी से बख्तियारपुर जाना पड़ता है। चंद्र उदय कुमार मुन्ना ने बताया कि हरनौत रेल कारखाना चालू हो जाने के बाद इस स्टेशन को राष्ट्रीय स्तर पर पहचान बन गई है। इस संबंध में रेलवे के आला अधिकारियों से कई बार आवेदन देकर ठहराव की मांग किया गया है, लेकिन आज तक पहल नहीं किया जा सका है।

☞ **इन ट्रेनों का होता है ठहराव** :- राजगीर-दानापुर पैसेंजर, श्रमजीवी एक्सप्रेस, राजगीर-बख्तियारपुर पैसेंजर, गया-राजगीर-बख्तियारपुर पैसेंजर, राजगीर-हाबड़ा फास्ट पैसेंजर, इंटरसिटी एक्सप्रेस, तिलैया-राजगीर-दानापुर ट्रेन का हरनौत में स्टॉपेज है। जबकि सारनाथ बुद्ध पूर्णिमा एक्सप्रेस का हरनौत में स्टॉपेज नहीं है।

☞ **क्या कहते हैं अधिकारी** :- स्टेशन प्रबंधक सुजीत कुमार ने बताया कि एक वर्ष पहले मोटर जल गई है। जिसके चलते नल से पानी सप्लाई बाधित है। दोनों प्लेटफार्म पर चार चापाकल है। लेकिन सभी भी खराब पड़ा है। रेल कर्मियों को शौचालय जाने के लिए चाय के दुकान से पानी मंगवाना पड़ता है। इस संबंध में डीआरएम को निरीक्षण के दौरान बताया गया है। बावजूद आज तक समस्या का समाधान नहीं किया गया है। कभी कभी यात्री गुस्से में आकर खरी खोटी भी सुना जाते हैं। ●

कल्याण विगहा शूटिंग रेंज में होगा नेशनल गेम

● मुन्ना पाण्डेय

इंटरनेशनल लेवल का कल्याण बिगहा इंडोर शूटिंग रेंज में 8 सितंबर से देश के कोने-कोने से खिलाड़ी आएंगे और नेशनल गेम में निशाना साधेंगे। नेशनल गेम में एक साथ 35 निशानेबाज अचूक निशाना लगाएंगे। और देश दुनिया में परचम लहराएंगे। शुक्रवार को डीएम योगेंद्र कल्याण बिगहा शूटिंग रेंज का जायजा लिया। शूटिंग रेंज के ट्रेनर से व जिला खेल पदाधिकारी से विस्तार से जानकारी लिया। चेतावनी भरे लहजे में कहा कि जिस तरह खिलाड़ियों में एक्टिविटी दिखना चाहिए उस तरह एक्टिविटी नहीं दिख रहा है। आगे से सुधार नहीं हुआ तो अच्छी बात नही है। खिलाड़ियों का गेम में इच्छा शक्ति बढ़ाएं। निशाना लगाते हैं उसका वीडियो बनाकर खिलाड़ियों को दिखाएं और सुधार का तरीका बताएं। इससे बेहतर परिणाम आ सकता है। शूटिंग से संबंधित सभी खिलाड़ियों को पुस्तक उपलब्ध कराएं ताकि खिलाड़ियों को निशानेबाजी बोझ जैसा न लगे। खिलाड़ियों को देखने से निराशा हाथ लगा है। बेहतर परफॉर्मेंस के लिए आप लोगों को कड़ी मेहनत करने की जरूरत है।

☞ **झोपड़ी से शुरू हुआ था शूटिंग रेंज** :- झोपड़ी से शुरू हुआ और आलीशान ऐसी बिल्डिंग तक पहुंचा कल्याण बिगहा इंडोर शूटिंग रेंज में अब इंटर नेशनल लेवल पर पहचान बना लिया है। 8 सितंबर से कुमार सुरेंद्र सिंह इंटर स्कूल नेशनल गेम होना है। विदेशी हथियारों से निशानेबाज निशाना लगाएंगे। अत्याधुनिक मशीनों का इस्तेमाल किया जाएगा। रेंज में एक साथ 35 निशानेबाज अचूक निशाना लगाएंगे। भारत का दूसरा बड़ा इंडोर शूटिंग रेंज होगा। जहां अत्याधुनिक हथियार व तकनीक का इस्तेमाल किया जाएगा।

देश में दूसरा नंबर का है शूटिंग रेंज :-कल्याण इंडोर शूटिंग रेंज आंतरिक संसाधनों के मामले में देश का दूसरा स्थान पर है। केरल के बाद कल्याण इंडोर शूटिंग रेंज का नाम आता है।

बेहतर हथियार व अत्याधुनिक संसाधन से लैस है। दिल्ली के शूटिंग रेंज में भी इस तरह के हथियार व अन्य व्यवस्था नहीं है।

☞ **एक साथ 35 निशानेबाज लगाएंगे निशाना** :- कल्याण बिगहा शूटिंग रेंज में पहले 8 निशानेबाज निशाना लगाते थे। अब एक साथ 35 खिलाड़ी अचूक निशाना लगा सकते हैं। 10 मीटर टारगेट की व्यवस्था है। रेंज में लगातार 35 टारगेट बनाया गया है। जहां सभी खिलाड़ी ड्रेस पहनकर अपने-अपने टारगेट पर निशाना लगाएंगे।

☞ **36 राइफल पिस्टल की है व्यवस्था** :- रेंज में 18 एयर राइफल व 18 एयर पिस्टल है। सभी हाई टेक्नोलॉजी के विदेशी हथियार हैं। ताकि निशानेबाजों को लक्ष प्राप्त करने में आसानी हो सके। इसके लिए देशी कीट खरीदा गया है। ताकि सभी खिलाड़ी ड्रेस पहनकर निशानेबाजी में महारत हासिल कर देश दुनिया में अपना पहचान बना सके। इस तरह का हथियार देश के केवल केरल के शूटिंग रेंज में उपलब्ध है।

☞ **साउंड लेस एवं पेपर लेस है शूटिंग रेंज** :- शूटिंग रेंज पूरी तरह से साउंड लेस है। साथ ही साथ पेपर लेस भी होगा। डिजिटल तरीके से टारगेट में सेंसर लगा है। खिलाड़ी के पास स्क्रीन लगा है। ताकि वह देख सके कि हमारा निशाना कहां लगा और कहां चुक हो गई।

☞ **कंट्रोल रुम से होगा कमांड** :- ट्रेनर ने बताया कि शूटिंग रेंज में कौन निशानेबाज का कहां निशाना लगाया। किस खिलाड़ी से कहां चुक हुई। इसकी मोनेटरिंग कंट्रोल रुम से किया जाएगा। जहां लाईव स्कोर चलता रहेगा। स्क्रीन एवं एक प्रोजेक्ट लगा रहेगा। इसके लिए रेंज के बगल में कंट्रोल रुम बनाया गया है। जहां इलेक्ट्रॉनिक टारगेट पर लगा निशाना दिखाता रहेगा। खिलाड़ियों से हुई चुक पर चार ट्रेनरों द्धारा दिशा निर्देश दिया जाएगा।

☞ **राष्ट्रीय स्तर का होगा निशानेबाजी** :- अत्याधुनिक हथियारों से लैस कल्याण बिगहा शूटिंग रेंज में अब राष्ट्रीय लेवल का निशानेबाजी प्रतियोगिता होगा। जहां देश के विभिन्न राज्यों से आए खिलाड़ी अपना अपना भाग्य आजमाएंगे। राष्ट्रीय स्तर के प्रतियोगिता के लिए सारा व्यवस्था उपलब्ध हो गया है। प्रतियोगिता होने के बाद नेशनल लेवल पर निशानेबाजी में कल्याण बिगहा का एक अलग पहचान बन सकता है। ●

स्वतंत्रता दिवस एवं रक्षाबंधन के शुभ अवसर पर लोहरा पंचायत की समस्त जनता सहित नालंदावासियों को हार्दिक शुभकामनाएँ।

-: निवेदक :-

मधुमिता सिन्हा

ग्रा०+पं०-लोहरा, प्रखण्ड-हरनौत, नालंदा

घर बैठे पढ़ाई करने का बेहतर मौका उपलब्ध करा रहा इग्नू

● मुन्ना पाण्डेय

बुजुर्ग भी इग्नू में नामांकन करा घर बैठे योग्यता हासिल कर सकते हैं। यहां18 वर्ष से ऊपर के महिला पुरुषों को पढ़ाई करने का अवसर उपलब्ध है। शुक्रवार को स्थानीय आरपीएस कॉलेज में इग्नू के सहायक निदेशक डॉ0 मीता ने छात्रों को उच्च शिक्षा में बेहतर भविष्य के लिए दर्जनों ऑप्शन बताया। कहा कि जानकारी के अभाव में बहुत लोग इग्नू से नहीं जुड़ पाते हैं। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय इग्नू ,निजी व सरकारी कार्यों में लगे लोगों को सबसे अधिक सहूलियत देती है। कालेज छात्रों को उन्होंने बताया कि इंटरमीडिएट के बाद पढ़ाई का सारा विकल्प सामने होता है। जरूरत है छात्रों को अपने लक्ष्य के अनुसार पढ़ाई करने की। डिस्टेंस मोड में छात्र घर पर रहकर या ड्यूटी करते हुए पढ़ाई कर सकते हैं। यहां नामांकन लेने के बाद पढ़ाई का पूरा मटेरियल घर पर उपलब्ध करा दिया जाता है। 75 प्रतिशत उपस्थिति से भी कोई लेना देना नहीं है। इग्नू देश का इकलौता सेंट्रल यूनिवर्सिटी है जिसका भारत समेत कई देशों मान्यता है। सरकारी सेवा में लगे लोगों को प्रमोशन के लिए भी इस विवि का प्रमाणपत्र बेहतर विकल्प है। विद्यर्थियों को हर वर्ष दो बार नामांकन कराने व परीक्षा फार्म भरने का अवसर दिया जाता है। 2 सौ से अधिक कोर्स में पढ़ाई की व्यवस्था है।

☞ **मुफ्त में पढ़ेंगे एससी एसटी के छात्र :-** सहायक निदेशक ने बताया कि कि इग्नू एक ऐसा संस्थान है जो देश के किसी भी कोने में एससी-एसटी को मुफ्त शिक्षा मुहैया कराती है। नामांकन से लेकर परीक्षा फार्म भरने में मुफ्त सेवा प्रदान किया जाता है। यहां छात्रों को मुफ्त में घर तक पुस्तकें पहुंचाई जाती है। साथ ही देश के किसी भी स्टडी सेंटर में नामांकन ले सकते हैं और परीक्षा में शामिल भी हो सकते हैं।

☞ **इग्नू में अंतिम सांस तक कर सकते हैं पढ़ाई :-** निदेशक डॉ0 मीता ने कहा कि इग्नू देश का इकलौता ऐसा संस्थान है जहां 18 वर्ष से उच्च शिक्षा शुरू होती है। और जीवन के अंतिम समय तक पढ़ाई किया जा सकता है। अन्य विश्वविद्यालयों में अधिक उम्र होने के कारण पढ़ाई से वंचित लोगों के लिए इग्नू का दरवाजा हमेशा खुला रहता है। सरकारी व गैर सरकारी संस्थानों में काम करने वाले लोगों के लिए इग्नू सबसे ज्यादा बेहतर विकल्प है। अपने संस्थानों में काम करने के बाद भी घर पर पढ़ाई कर डिग्री हासिल कर सकते हैं।

☞ **मोबाइल से कर सकते हैं पढ़ाई :-** डिजिटल युग में छात्रों को पढ़ने के लिए मोबाइल फोन भी बेहतर विकल्प है। भागदौड़ की जिंदगी में इंटरनेट के माध्यम से मोबाइल फोन से इग्नू के विभिन्न कोर्सों का अध्ययन किया जा सकता है। भारत के जाने-माने शिक्षाविदों द्वारा इग्नू के लिए किताब लिखा जाता है। इसका कॉपी प्रिंट के साथ साथ इंटरनेट पर डाउनलोड किया जाता है।

☞ **पाटलिपुत्र यूनिवर्सिटी से वंचित छात्र भी कर सकते हैं नामांकन :-** निदेशक ने बताया कि राज्य के विश्वविद्यालयों में नामांकन के लिए छात्रों की लंबी लाइन लगी हुई है। बहुत से छात्रों को ऑनलाइन आवेदन करने के बाद भी किसी भी कॉलेज में नामांकन लेने का अवसर नहीं मिला है। ऐसे छात्र 31 जुलाई तक इग्नू में ऑनलाइन नामांकन करा सकते हैं। इस मौके पर कॉलेज ऑफ कॉमर्स के प्रोफेसर डॉ0 राजीव रंजन, आरपीएस कॉलेज के प्रिंसिपल डॉ0 उपेंद्र कुमार सिन्हा, प्रो0 धनंजय कुमार, प्रो0 अरुण कुमार, प्रो0 रेणु कुमारी समेत दर्जनों कॉलेज कर्मी व सैकड़ों छात्र-छात्राएं उपस्थित थे। ●

विधायक ने किया स्मार्ट क्लास का उद्घाटन

स्थानीय प्रखंड स्थित हाई स्कूल हरनौत एवं प्रोजेक्ट बालिका उच्च विद्यालय में मंगलवार को स्थानीय विधायक हरिनारायण सिंह ने स्मार्ट क्लास का उद्घाटन किया.यह स्मार्ट क्लास कार्यक्रम उन्नयन बिहार के अंतर्गत किया गया है। कार्यक्रम का उद्घाटन विधायक हरिनारायण सिंह, प्रखंड विकास पदाधिकारी रवि कुमार, अंचलाधिकारी अखिलेश चौधरी एवं प्रखंड शिक्षा पदाधिकारी चंद्रशेखर आजाद के द्वारा किया गया। बीडीओ रवि कुमार ने बताया कि आधुनिक समय में शिक्षा को बेहतर से बेहतर बनाने के लिए इलेक्ट्रॉनिक्स टीवी रेडियो के माध्यम से छात्र-छात्राओं के बीच गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देने के लेकर सरकार की योजना के तहत सरकारी सभी विद्यालय में स्मार्ट क्लासेस का प्रारंभ किया गया है। जिसके माध्यम से छात्र गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को बेहतर से बेहतर प्राप्त कर सके। विधायक हरिनारायण सिंह, मास्टर ट्रेनर अश्विनी चंद्रा ने कहा कि बच्चे देश का भविष्य होते हैं। शिक्षा ही एकमात्र ऐसा साधन है जिसे अपनाकर बच्चे अपने भविष्य को उज्जवल बना सकता है। आधुनिक युग में बच्चों को पढ़ाई लिखाई के साथ-साथ स्मार्ट क्लास होना अनिवार्य है। जैसे बच्चों के मानसिक शारीरिक विकास गुणोत्तर श्रेणी से बढ़ते हैं और बच्चे किसी भी परीक्षा में सफल होने की चेष्टा रखता है। आधुनिक युग में बेहतर शिक्षा प्राप्त करने के लिए कर बच्चों में स्मार्ट क्लासेस अनिवार्य माना गया है। जिसके लेकर सरकार की योजनाओं को सरकारी विद्यालय में प्रारंभ करने का श्रेय दिया गया है। हाई स्कूल के प्राचार्य सुनील कुमार भास्कर ने बताया कि जिला शिक्षा पदाधिकारी के निर्देश पर बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देने के लिए कर सरकार की नई योजना उन्नयन बिहार के अंतर्गत स्मार्ट क्लासेस का शुभारंभ कराया गया है। जिससे बच्चों में बेहतर शिक्षा मिल सके। इस बेहतर शिक्षा के लिए 4 शिक्षक को प्रशिक्षण देकर ही नियुक्त किया जाएगा। जससे प्रत्येक वर्ग के छात्रों को बारी-बारी से स्मार्ट क्लासेस के द्वारा शिक्षा दी जाएगी। विद्यालय में कार्यरत शिक्षक रजनीश कुमार ने बताया कि बच्चे देश के भविष्य होते हैं। इस समय गुणवत्ता शिक्षा प्राप्त कर बेहतर से बेहतर कार्यों को सुलभ एवं सरलता रूप से कर सकता है। शिक्षा ही एकमात्र साधन है जो कभी भी एक दूसरे से बांटने से बढ़ती है घटती नहीं। बेहतर शिक्षा प्राप्त करने के लिए जो नई-नई तकनीकी अपनाई जा रही है जिसके माध्यम से बच्चों को बेहतर शिक्षा मिल सके इस तकनीकी को व्यवस्था करने के लिए के अपना योगदान देने का श्रेय माना है। ● **रिपोर्ट :- मुन्ना पाण्डेय**

लोकतंत्र के प्रहरी को दी जा रही निष्पक्षता एवं पारदर्शिता की सजा

एस.पी., नवादा

पत्रकार विजय कुमार

डॉ० सत्येन्द्र कुमार सिन्हा

● मिथिलेश कुमार

लोकतंत्र का आधार जब मजबुत जो तो देश को कोई भी विघटनकारी शक्तियों के मंसुबे सफल नही हो सकते है। मौजुदा वक्त में लोकतांत्रिक ढांचे में काफी गिरावट आ रही है। लोकतंत्र के तीन स्तम्भ जहॉ कार्यपालिका, विधायिका और न्यायपालिका तटस्थ और मजबुती के साथ खड़ी होकर देश के सर्वांगीण विकास में अपनी अहम योगदान देता है तो लोकतंत्र के सबसे मजबुत अडिग एवं पुरी पारदर्शिता के साथ चौथा स्तंभ के रूप में मिडिया की भूमिका को भी नकारा नही जा सकता है। बदलते परिवेश में जहॉ कार्यपालिका और विधायिका का स्वरूप बदला है वही न्यायपालिका में भ्रष्टाचार की जड़े भी गहरी पैठ बना रही है। वैसी परिस्थिति में लोकतंत्र के चौथे स्तंभ की जबाबदेही स्वत: बढ़ जाती है। परन्तु वक्त और हालात के साथ मिडिया भी कहीं नही कहीं पोषक वर्ग के साथ अप्रत्यक्ष रूप से खड़ा हो तो लोकतंत्र को खतरे से बचाया नही जा सकता है। पोषक वर्ग सता लोलुपता एवं अवसरवादिता से अपना दामन दागदार बना रही है वही कुछ गिने चुने बड़े बड़े मिडिया घराने जिसमें प्रिंट मिडिया एवं इलेक्ट्रोनिक मिडिया भी अपनी स्वंतत्र विचारों एवं पारदर्शिता की जमीर को मारकर उसके साथ कंधे से कंधा मिला कर हठधर्मिता का पालन कर रहे है। कहने का तात्पर्य यह है कि मिडिया आज भी लोकतंत्र को बचाने की शक्ति रखता है। और बदलते परिवेश में मिडिया की भूमिका एवं जिम्मेवारी भी बढ़ती जा रही है। जिस प्रकार सोसल मिडिया का प्रार्दुभाव हुआ है वह मिडिया के लिये चुनौती भी है। आज पत्रकारिता बाजार के चौराहे पर खड़ी है। सभी रास्ते खुले है परन्तु मंजिल तक पहूँचने के लिये काफी मशक्कत करना पड़ रहा है। पूरे देश में पत्रकारिता की दशा ठीक नही कहा जा सकता है। तो हमारे राज्य बिहार के हालात और भी गंभीर होते जा रहे है। आये दिन पत्रकारों को निशाना बनाया जा रहा है और सरकार नजरअंदाज कर रही है। पत्रकारिता से जुड़े लोग विशुद्व पत्रकारिता कर जहॉ अपना पेट पालने में सक्षम नही है वही बड़े बड़े टी वी चौनलों से जुड़े एंकरों की पर्सनल प्रोपर्टी में बेतहाशा वृद्वि हो रही है। जो यह साबित करती है कि कहीं न कहीं हम अपने कर्तव्यों से विमुख हो रहें है। आंचलिक एवं तहसील के पत्रकारों की हालात तो बद से बदतर होती जा रही है। एक तरफ पत्रकार अपने मालिक के शोषण का शिकार होते है तो दुसरी तरफ बैनर अपना टीआरपी बढ़ाने के लिये नित्य नये प्रयोग कर रही है। पत्रकार अपनी जान जोखिम में डालकर खबर का संकलन करता है और केवल उसे शाबासी के शिवा कुछ हासिल नही होता है। आज के दौर में लिखने की स्वतंत्रता ही पत्रकार को मौत के मुंह में घकेल रही है। कार्यपालिका की व्यवस्था जहॉ कुव्यवस्थित होती है वहॉ पत्रकारों की अहमियत और जिम्मेबारी भी बढ़ जाती है। क्यांकि मुद्वे जनसरोकार से जुड़े होते है। बदलते परिवेश में पूँजीवादी अर्थव्यवस्था ने कार्यपालिका के क्रियाकलापों में काफी बदलाव लाया है आधुनिक जीवन जीने की शैली और बढ़ती महत्वकांक्षा तथा महानगरों की चकाचौंध भ्रष्टाचार की जड़ें को मजबुत कर रही है। बिहार के कई जिलों में बीते दस वर्षो में करीब एक दर्जन पत्रकारों की हत्या हो गयी है। सैकड़ो पत्रकारों पर जानलेवा हमले हुये है। साथ ही साथ षंडयत्र के तहत कई पत्रकारों को विभिन्न मामलों में फंसाया गया है। सीवान के पत्रकार राजदेव रंजन सहित कई पत्रकार मौत के मुंह में धकेल दिये गये है। इन्हें मारने वाले अन्य कोई नही सता पोषित अपराधी और सता के गलियारों में आज भी जिसकी धमक कायम है। सासाराम, औरंगाबाद, आरा, दरंभगा, मधुबनी, कटिहार, बेगुसराय,नवादा, गया सहित राजधानी में कई पत्रकारों को उनकी निष्पक्षता एवं निर्भिकता ने केस में फंसने पर मजबुर किया है। जिसकी बानगी हाल के दिनों में मधुवनी के दैनिक अखबार के पत्रकार प्रदीप मंडल है जो आज भी दरंभगा मेडिकल कॉलेज में जीवन और मौत के बीच जुझ रहा है। जिसे देखने और सुनने वाला कोई नही है। बिहार सरकार शराबबंदी कानून लाकर सामाजिक चेतना जगाने एवं समाजिक परिवेश में परिवर्तन का सुनहरा अवसर दिया था। परन्तु यह कानून पत्रकारों के लिये अभिशाप है वही पुलिस के लिये वरदान साबित हो रही है। अवैध रूप से शराब बनाने और बेचने वाले शराब माफिया पत्रकारों को निशाना बना रही है लेकिन इसके पीछे पुलिस की

सहभागिता को इंकार नही किया जा सकता है। शराब को लेकर बनाये गये कानून जहॉ थानेदारों के गले की फांस बन गयी है। वही शराब माफियाओं से गठजोड़कर अवैध अकुत सम्पति बनाने का खेल जारी है। जिसका सीधा असर पत्रकारों पर पड़ा है। सरकार अपनी छिछलेपन से बाज नही आ रही है। अपना दामन बचाने और अपनी पीठ थपथपानें में लगी है और ऐसे कई मामले में बचकर निकल रही है।

पत्रकार क्यों हो रहा लाचार :- पत्रकार आज खुद को लाचार, विवश, असुरक्षित और मजबुर समझ रहा है। पत्रकार जिस उद्वेश्यों और जनहित से जुड़े समस्याओं सामाजिक समरसता कायम करने, अंधविश्वास, सामाजिक कुरितियों को हटाने के लिये जागरूकता अभियान चलाने एवं सरकार द्वारा प्रायोजित योजनाओं को जन-जन तक पहुॅचाने के साथ साथ विगड़ती विधि व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने का संकल्प के साथ काम कर भ्रष्ट पदाधिकारियों के ताबुत में आखिरी कील ठोकने का भी कार्य करती है। परन्तु आज यह संकल्प कहीं न कहीं अपने कर्तव्य से विमुख होने पर मजबुर कर रही है। अगर हम पदाधिकारियों की चापलुसी और राजनेताओं की चमचागिरी करने लगेंगे तो पत्रकार धर्म का पालन नही होगा। लेकिन हम क्या करें ? हम जिसके लिये अपराधियों और व्यवस्था के पालनहारों से जनहित के मुद्वे पर सीधी लड़ाई लड़ने को तैयार रहते है। वे भी विषम परस्थितियों में हमारा साथ छोड़ देते है। समय और परस्थितियां बदली है जिसमें पत्रकारों की कार्यशैली भी संभवत: बदली है, बाबजुद अभी भी कलमकार की कलम में ताकत है जो लोकतंत्र को बचाने में अपना सर्वस्व न्योछावर करता है।

बिहार के नवादा जिले में कई घटनायें हुई है, जिसमें पदाधिकारियों के सह पर पत्रकारों को फंसाने की साजिश कर उसके कलम को कमजोर करने का प्रयास किया गया है जो लोकतंत्र

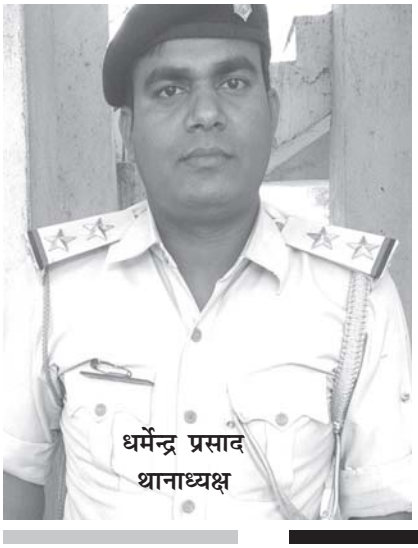

धर्मेन्द्र प्रसाद
थानाध्यक्ष

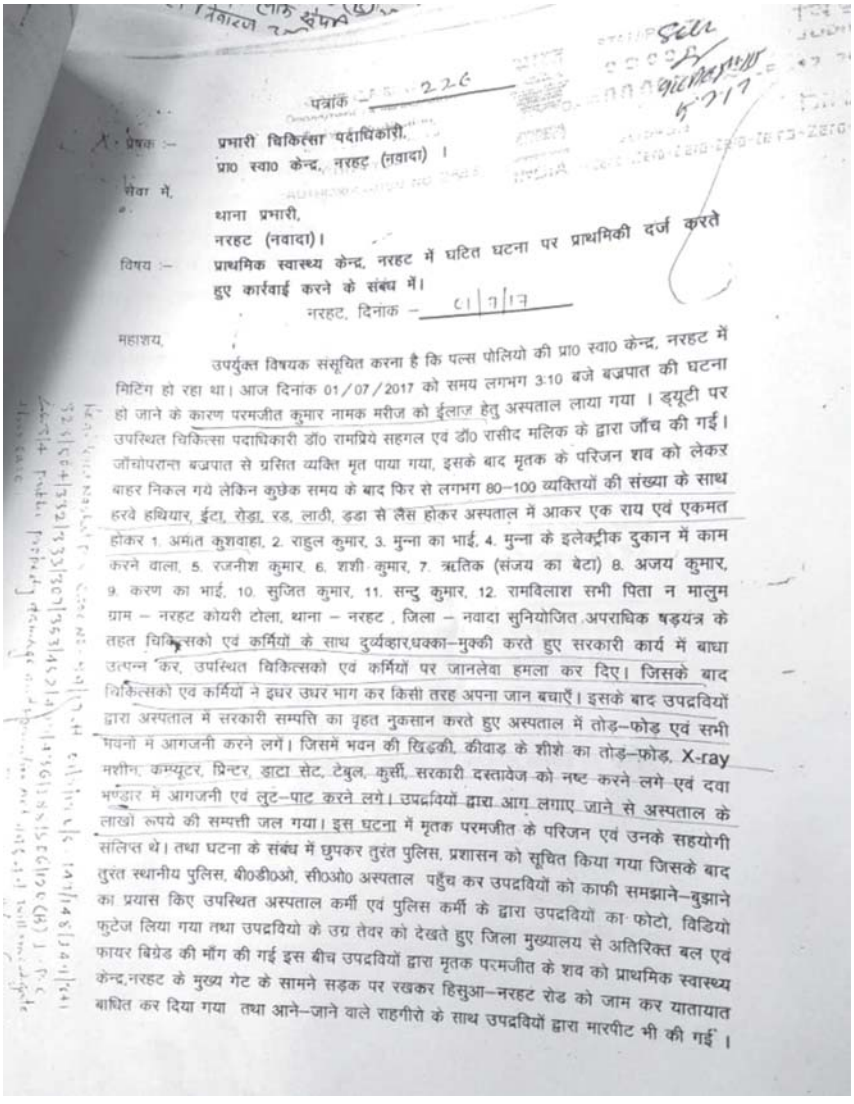

पत्रांक - 226

प्रेषक :- प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी,
प्रा0 स्वा0 केन्द्र, नरहट (नवादा) ।

सेवा में,
थाना प्रभारी,
नरहट (नवादा)।

विषय :- प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, नरहट में घटित घटना पर प्राथमिकी दर्ज करते हुए कार्रवाई करने के संबंध में।

नरहट, दिनांक - 01/7/17

महाशय,

उपर्युक्त विषयक संसूचित करना है कि पल्स पोलियो की प्रा0 स्वा0 केन्द्र, नरहट में विटिंग हो रहा था। आज दिनांक 01/07/2017 को समय लगभग 3:10 बजे बज्रपात की घटना हो जाने के कारण परमजीत कुमार नामक मरीज को ईलाज हेतु अस्पताल लाया गया । ड्यूटी पर उपस्थित चिकित्सा पदाधिकारी डॉ0 रामप्रिये सहगल एवं डॉ0 रासीद मलिक के द्वारा जाँच की गई। जाँचोपरान्त बज्रपात से ग्रसित व्यक्ति मृत पाया गया, इसके बाद मृतक के परिजन शव को लेकर बाहर निकल गये लेकिन कुछेक समय के बाद फिर से लगभग 80-100 व्यक्तियों की संख्या के साथ हरवे हथियार, ईंटा, रोड़ा, रड, लाठी, ढ़डा से लैस होकर अस्पताल में आकर एक राय एवं एकमत होकर 1. अमित कुशवाहा, 2. राहुल कुमार, 3. मुन्ना का भाई, 4. मुन्ना के इलेक्ट्रीक दुकान में काम करने वाला, 5. रजनीश कुमार, 6. शशी कुमार, 7. ऋतिक (संजय का बेटा) 8. अजय कुमार, 9. करण का भाई, 10. सुजित कुमार, 11. सन्दु कुमार, 12. रामविलाश सभी पिता न मालुम ग्राम - नरहट कोयरी टोला, थाना - नरहट , जिला - नवादा सुनियोजित अपराधिक षड़यंत्र के तहत चिकित्सको एवं कर्मियों के साथ दुर्व्यवहार,धक्का-मुक्की करते हुए सरकारी कार्य में बाधा उत्पन्न कर, उपस्थित चिकित्सको एवं कर्मियों पर जानलेवा हमला कर दिए। जिसके बाद चिकित्सको एव कर्मियों ने इधर उधर भाग कर किसी तरह अपना जान बचाएँ। इसके बाद उपद्रवियों द्वारा अस्पताल में सरकारी सम्पत्ति का वृहत नुकसान करते हुए अस्पताल में तोड़-फोड़ एवं सभी भवनों में आगजनी करने लगें। जिसमें भवन की खिड़की, कीवाड के शीशे का तोड़-फोड़, X-ray मशीन, कम्प्यूटर, प्रिन्टर, डाटा सेट, टेबुल, कुर्सी, सरकारी दस्तावेज को नष्ट करने लगे एवं दवा भण्डार में आगजनी एवं लुट-पाट करने लगे। उपद्रवियों द्वारा आग लगाए जाने से अस्पताल के लाखों रूपये की सम्पत्ती जल गया। इस घटना में मृतक परमजीत के परिजन एवं उनके सहयोगी संलिप्त थे। तथा घटना के संबंध में छुपकर तुरंत पुलिस, प्रशासन को सूचित किया गया जिसके बाद तुरंत स्थानीय पुलिस, बी०डी०ओ, सी०ओ० अस्पताल पहुँच कर उपद्रवियों को काफी समझाने-बुझाने का प्रयास किए उपस्थित अस्पताल कर्मी एवं पुलिस कर्मी के द्वारा उपद्रवियों का फोटो, विडियो फुटेज लिया गया तथा उपद्रवियो के उग्र तेवर को देखते हुए जिला मुख्यालय से अतिरिक्त बल एवं फायर बिग्रेड की माँग की गई इस बीच उपद्रवियों द्वारा मृतक परमजीत के शव को प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र,नरहट के मुख्य गेट के सामने सड़क पर रखकर हिसुआ-नरहट रोड को जाम कर यातायात बाधित कर दिया गया तथा आने-जाने वाले राहगीरो के साथ उपद्रवियों द्वारा मारपीट भी की गई ।

के लिये शुभ नही कहा जा सकता है। जिले के नरहट थाना कांड संख्या 99/17 में दैनिक अखबार के पत्रकार को ऐसे मामले में फंसाया गया है जिसमें दुर दुर तक कोई संबंध नही है। बताते चले कि बीते वर्ष एक जुलाई 2017 को नरहट थाना क्षेत्र के नरहट के कोयरी टोला के युवक बज्रपात की चपेट में गंभीर रूप से जख्मी अवस्था में प्राथमिक चिकित्सा केन्द्र नरहट लाया जाता है। आकिस्मक सेवा में कोई चिकित्सक के उपस्थित नही रहने के कारण परमजीत की मौत हो गयी थी। परिजनों ने उसकी मौत का जिम्मेबार अस्पताल प्रबंधन को देते हुये हगांमा करना प्रारंभ कर दिया। युवक की मौत के बाद ग्रामीण काफी आक्रोषित हो गये और अस्पताल में तोड़फोड़ कर आगजनी की घटना को अंजाम दिया। जिसमें लाखों रूपये मुल्य की संपति जल कर राख हो गयी। साथ ही साथ अस्पताल कई दिनों तक बंद रहा है। स्वास्थ्य सेवायें ठप हो गयी। ग्रामीण क्षेत्र के मरीजों को काफी परेशानियों को सामना करना पड़ा। घटना की आंशका को लेकर पत्रकार विजय कुमार ने युवक की मौत के तुंरत बाद स्थानीय थाने के थानेदार धर्मेन्द्र प्रसाद को इसकी सूचना देने का प्रयास किया। परन्तु सम्पर्क नही हो सका। तब जाकर पत्रकार विजय कमार ने इसकी सूचना वरीय पदाधिकारी रजौली एसडीएम शंभु शरण पांडेय को दिया। मामले की गंभीरता को देखते हुये एसडीएम ने घटनास्थल पर पहुॅचने के साथ साथ अतिरिक्त पुलिस बल भेजने की बात भी कही। वरीय पदाधिकारी के घटनास्थल पर पहुॅचने पर पत्रकार विजय कुमार ने पदाधिकारियों से घटना के बाद की स्थिति एवं विधि व्यवस्था को लेकर जानकारी भी प्राप्त किया। घटना के बाद चिकित्सा पदाधिकारी डॉ0 सतेन्द्र कुमार सिंहा ने लिखित आवेदन पर नरहट थाने में प्राथमिकी दर्ज की गयी। जिसमें अमित कुशवाहा, राहुल कुमार, मुन्ना का भाई, रजनीश कुमार, शशि कुमार, ऋतिक कुमार, अजय कुमार एवं सुजीत सहित कई अन्य लोगों के विरूद्व भारतीय दंड संहिता के

तहत कानूनी कारवाई की गयी।

☞ **कैसे रचा गया पत्रकार को फंसाने का षंडयत्र** :- चुकि प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र नरहट में हुई घटना वहॉ की व्यवस्था की पोल भी खोल दिया दी थी। हालात जो भी हो आक्रोशितों के द्वारा सरकारी सामान को नुकसान पहुॅचाना और कानून को अपने हाथ में लेना सज्ञेय अपराध की श्रेणी में है इसे कतई उचित नहीं कहा जा सकता है। साथ ही साथ संवैधानिक दृष्टिकोण से भी यह गलत है। लेकिन इसका दुसरा पहलू यह भी था कि अस्पताल में व्यवस्था नाम की कोई चीज नही थी। पदस्थापित चिकित्सकों का अपने डियूटी से हमेशा गायब रहकर हिसुआ में प्राइवेट क्लिनिक चलाने का कार्य किया जाता रहा है। इस घटना के पूर्व भी इस तरह के मामले अस्पताल में होते रहे है। बाबजुद चिकित्सक अपने कार्यप्रणाली में सुधार नही ला सकें। जनहित से जुड़ी खबरों को विजय कुमार के द्वारा हमेशा प्रकाशित किया जाता रहा था। खबर से खार खाये चिकित्सा पदाधिकारी एवं नरहट के तत्कालीन भ्रष्ट थानाध्यक्ष धर्मेन्द्र प्रसाद ने कुचक्र रचकर पत्रकार विजय कुमार को केस में फसांने की योजना बना डाली। कांड के अनुसंधानकर्ता सह थानाध्यक्ष धर्मेन्द्र प्रसाद निहायत ही एक नम्बर का अयाश धुसखोर थाना प्रभारी भ्रष्टाचार में लिप्त रहकर कई अन्य मामलों में निर्दोषों को फंसा कर करोड़ो रूपयें की सम्पति अर्जित करने वाले ने चिकित्सक के झुठे बयान को मनगढ़ंत बनाकर विजय कुमार के उपर गंभीर आरोप लगाया और विजय कुमार को अप्राथमिकी अभियुक्त बना डाला। डॉ0 सत्येन्द्र कुमार सिंहा के द्वारा दिये गये बयान में डॉ० ने कहा कि मेरी पदस्थापना जुलाई 2016 को नरहट प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र में बतौर प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी के पद पर हुई थी। उसी समय से स्थानीय पत्रकार विजय कुमार अस्पताल आकर मेरे कार्यालय में मुझसे पैसे की मांग करते हुये महीना बांधने की बात करते थे। तब मैं पैसा देने से इंकार किया तो उन्होंने कहा कि आपके पूर्व रामप्रवेश बाबु दिया करते थे। आपकों भी देना पड़ेगा। जब मैं देने से इंकार कर दिया तो मेरे खिलाफ खबर छापने की धमकी भी दिया करते थे। मैनें साफ तौर पर मना किया कि मैं किसी भी सूरत में पैसा नही दुंगा। इसकी सूचना मैनें सिविल सर्जन को भी दिया था। उन्होनें मुझे समझाते हुये कहा था कि पत्रकार के खिलाफ ज्यादा कुछ कहियेगा तो वे पीछे पड़ जायेगें। आप हालात से समझौता कर जनता का सेवा करते रहिये। घटना के दिन नरहट में पोलियों से संबधित बैठक चल रही थी। उसी समय वज्रपात से जख्मी अवस्था में परमजीत नामक युवक को अस्पताल लाया गया। जिसकी मौत होने पर परिजनों ने अस्पताल में काफी तोड़ फोड़ किया। और अस्पताल को आग के हवाले कर दिया। मैं जानबचा कर स्थानीय थाना और वीडीओं एवं सीओं को फोन किया। जब पदाधिकारी पुलिस बल के साथ पहुॅचे तो उस समय पता लगा कि पत्रकार विजय कुमार भी घटनास्थल पर मौजुद थे और उन्होनें उपद्रवियों को भड़काने का कार्य भी किया था। इसी बयान के आधार पर थानाध्यक्ष धर्मेन्द्र प्रसाद ने केस मे पत्रकार विजय कुमार को अप्राथमिकी अभियुक्त बनाया।

अब सवाल उठता है कि जब पत्रकार विजय कुमार भीड़ को उकसाने एवं घटना के समय भी घटनास्थल पर मौजुद रहकर घटना में प्रत्यक्ष रूप् से शामिल था, तो थानाध्यक्ष ने विजय कुमार को एक बर्ष तक गिरफ्तार क्यों नही किया। जबकि उक्त मामले में नामजद अभियुक्तों को गिरफ्तार कर जेल भेजा गया। घटना के बाद कई महीनों तक चिकित्सक एवं थानाध्यक्ष नरहट में अपना सेवा देते रहें इस बीच पत्रकार के साथ पूर्व की भांति सामान्य व्यवहार एवं खबरों का प्रकाशन होता रहा। मामले का खुलासा तो तब हुआ जब थानाध्यक्ष का तबादला होने के बाद मुकेश कुमार ने थानाध्यक्ष की कुर्सी संभाली और मामले में पत्रकार विजय कुमार को भी आरोपित किये जाने की बात की जानकारी मिली। इतना ही नही इतने समय के बाद तक किसी प्रकार की भनक पत्रकार विजय कुमार को नही मिली नही पुलिसिया कारवाई की गयी। यहॉ तक कि रजौली एसडीपीओं ने भी मामले में विजय कुमार को घटना में संलिप्त होने की पुष्टि अपने पर्यवेक्षण रिर्पोट में कर दिया। आखिर इतनी बड़ी साजिश क्यों की गयी।जब विजय कुमार एक गंभीर मामले का आरोपित व्यक्ति था तो नरहट पुलिस विजय पर मेहरबान क्यों थी। इस मामले में इनकी गिरफ्तारी क्यों नही हुई यह बहुत बड़ा सवाल है। भ्रष्ट थानाध्यक्ष धर्मेन्द्र प्रसाद ने अपने कार्यकाल में नरहट थाना क्षेत्र में कई मामले में झुठी मनगढंत केस में निर्दोष को फंसाने का मामला भी प्रकाश में आया था। अगर धर्मेन्द्र प्रसाद की सम्पति की जॉच की जाय तो इसके भ्रष्ट होने की पुष्टि भी हो जायेगी।

☞ **चिकित्सक ने कहा मैनें नही दिया ऐसा बयान** :- इस संबंध में चिकित्सक डॉ0 सत्येन्द्र कुमार सिंहा ने भारतीय प्रेस परिषद को लिखित आवेदन देकर थानाध्यक्ष को पत्रकार विजय कुमार के विरूद्व किसी प्रकार का बयान देने से साफ तौर पर इनकार किया है। विजय कुमार ने उक्त केस में अपना नाम घसीटे जाने तथा अप्राथमिकी अभियुक्त बनाये जाने पर बीते एक वर्षो से अस्पताल में व्याप्त कुव्यवस्था की प्रकाशित रिर्पोट के साथ भारतीय प्रेस परिषद नई दिल्ली को अभ्यावेदन देकर पत्रकार को झुठे मुकदमें में फसायें जाने की जॉच कर कारवाई करने की गुहार लगायी थी। भारतीय प्रेस परिषद मिसिल वाद संख्या 13/199/2018-19 के तहत मामले की गंभीरता को देखते हुये इस संबंध में चिकित्सक को अपना पक्ष रखने तथा इस संबंध में प्रतिवेदन समर्पित करने को कहा। चिकित्सक ने भारतीय प्रेस परिषद को दिये गये प्रतिवेदन में यह कहा है कि विजय कुमार का नाम इस केस में किस परस्थिति में आया यह मैं नही जानता हुॅ। विजय कुमार का नाम प्राथमिकी में नही है और न ही कोई जिक्र है यह पुलिसिया कारवाई है जिसके तहत विजय कुमार को इस केस में फंसाया गया है। मैंने कभी भी पुलिस के समक्ष कोई बयान दर्ज नही कराया है। इस संबंध में पुलिस ही कुछ बता सकती है। अब सवाल है कि सत्य किसे माना जाय? पुलिस मामले में डॉ0 सत्येन्द्र कुमार के बयान को आधार मान कर विजय कुमार को केस में घसीट रही है और चिकित्सक अपना बयान से मुकर रहे है। ऐसी परिस्थिति में यह साबित होता है कि विजय कुमार को षंडयत्र के तहत फंसाया गया है। हालांकि चिकित्सक ने अपने दिये गये प्रतिवेदन में स्थानीय सभी पत्रकारों के उपर विभिन्न विभागों के विरूद्व झुठी खबर लगाने एवं अवैध रूप से धन उगाही करने का आरोप लगाया है लेकिन इस केस में विजय कुमार का नाम किस तरह से आया है यह ज्ञात नही है।मामले में फिलहाल विजय कुमार जमानत पर है और वरीय पदाधिकारियो से मामले की जॉच कराने विजय कुमार ने मुख्यमंत्री के सचिव, स्वास्थ्य विभाग के प्रधानसचिव, अध्यक्ष मानवाधिकार आयोग, पुलिस महानिदेशक बिहार, भारतीय प्रेस परिषद नई दिल्ली,सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, पुलिस महानिरीक्षक मगध प्रमंडल, आरक्षी अधीक्षक, नवादा, पुलिस उपाधीक्षक रजौली सहित कई वरीय पदाधिकारी को मामले की न्यायिक जॉच कर पत्रकार पर झुठे आरोप लगाने वाले के विरूद्व कारवाई करने की मांग की है।

☞ **सवालों के घेरे में पुलिस और चिकित्सक का क्रियाकलाप** :- इस प्रकार अगर देखा जाय तो नरहट थाना कांड संख्या 99/17 में पत्रकार विजय कुमार को चिकित्सक एवं भ्रष्ट थानाध्यक्ष धर्मेन्द्र प्रसाद ने अपनी कमजोरी से खार खाये फसांने का कुत्सित प्रयास कर अवैध रूप से धन उगाही एवं खबर की धौंस दिखाकर डराने का आरोप लगाया है। अब सवाल है कि अगर पत्रकार चिकित्सक से पैसा लेते है तो किस परस्थिति में चिकित्सक पैसा आखिर क्यों देते है। इसका मतलब है कि अस्पताल में सरकारी राशि का बंदरबॉट होता है और चिकित्सक हमेशा अपने डियूटी से फरार रहते है। हालांकि जिले में पत्रकारों के उपर आरोप लगाने से लेकर केस में फंसाने का कई मामला है जिसमें रोह के पत्रकार प्रशांत रंजन को बिजली विभाग के जेई के द्वारा रोह थाना में केस दर्ज कर फसांया गया है। जिला मुख्यालय के पत्रकार संदीप कुमार, पंकज सिंहा एवं अमन कुमार को भयादोहन कर आर्थिक

उपार्जन करने के साथ-साथ इनके द्वारा प्रकाशित खबरो से विधि व्यवस्था भंग होने की आंशका के लिये इन्हें समाहरणालय प्रवेश करने पर पांबदी लगा दी गयी थी। नगर थाना में पदस्थापित एसआई ने नगर थाना में अपने दिये गये आवेदन में उपरोक्त तीनों पत्रकारों पर गंभीर आरोप लगाते हुये भारतीय दंड संहिता की धारा 107 सहित अन्य धारा के तहत विधि सम्मत कारवाई करने का अनुरोध किया था। हालांकि यह मामला जिलाधिकारी से जुड़ा मामला था। और जिलाधिकारी के सह पर ही मामले को तुल देकर तीनों पत्रकार को फंसाया गया था। रजौली के पत्रकार को भी एक मामले में घसीटा गया। रोह के एक अन्य पत्रकार के परिजनों को खबर से खार खाये लोंगों ने दुसरे मामले में बिना जॉच पड़ताल किये आरोपित कर दिया। ऐसे कई मामले है जिनमें पत्रकारों को वेवजह दुर्भावना से ग्रसित होकर अपने खबरों के प्रकाशन से खार खाये पदाधिकारी अपना दांव लगा कर केस में फंसाने का प्रयास करते हैं। पत्रकारों के उपर अपराधियों के हमले और दुसरी तरफ पुलिस व प्रशासन के द्वारा गंभीर मामले में फंसाना कही न कहीं लोकतंत्र के लिये खतरा पैदा कर रहा है। पत्रकार के उपर गंभीर आरोप की जॉच में पदाधिकारियों के द्वारा अपने ही समकक्ष पदाधिकारी को सहायता की जाती है। पत्रकार जो वेवजह आम आदमी ,अपराध ी ,बालू माफिया, शराब माफिया एवं पदाधिकारी के कोपभाजन का शिकार होता है। बाबजुद पत्रकारों का मनोबल और उसके कलम की धार को रोक पाना संभव नही है। देश की संप्रभुता और सुरक्षा के सवाल पर कई पत्रकार कुर्वान हो सकते है।भ्रष्टाचारियों, अपराधियों एवं अवैध रूप से धन अर्जित करने वाले तथा कालाबाजारी करने वालों के खिलाफ पत्रकारों का कलम हमेशा चलता ही रहेगा। अंजाम चाहे जो हो।लोकतंत्र की रक्षा के लिये पत्रकारों की स्वतंत्रता पर कुठाराघात करने और उसकी कलम की ताकत की क्षमता को कम करने वालों पर अंकुश लगाने की जरूरत है ताकि लोकतंत्र की रक्षा हो और देश भी सुरक्षित हो।

☞ **पत्रकार पर आरोप लगाने वाले ही प्रेस वार्ता के लिये करते है आमंत्रित :-** जिले के विभिन्न प्रखंडो में पदस्थापित पदाधिकारी एक तरफ पत्रकारों पर भयादोहन करने का आरोप भी लगाते है और दुसरी तरफ अपने खबरों के प्रकाशन के लिये प्रेस वार्ता का आयोजन भी कराते है। सवाल है कि पदाधिकारी किस परस्थिति में पत्रकारों के भयादोहन का शिकार होते हैं। पत्रकारों को पैसा क्यों देते है। जिस पत्रकार से विधि व्यवस्था भंग होने की आंशका हो और गंभीर मामले में दोषी पाया गया हो उसके बाबजुद भी पुलिस उसे गिरफ्तार कर जेल क्यों नही भेज पाती है।मामले के दर्ज होने के एक वर्ष बाद क्यों पत्रकार को केस में दोषी ठहराने की जानकारी दी जाती हैं। बहुत बड़ा सवाल है आम लोगों के लिये भी जिसके लिये पत्रकार दिनरात मेहनत कर उनकी आवश्यकताओ की पूर्ति के लिये सरकार के पास उनकी समस्याओं को पहुँचाते हैं। सरकार की योजनाओं की जानकारी आमजनों तक देते हैं। अपराधियों की गिरफ्तारी, पदाधिकारियों के कृत्यों की जानकारी के साथ अहम सूचनाओ के आदान प्रदान करने में अपनी अहम भूमिका देने वाले पत्रकार आज हासियें पर हैं उन्हें देखने की फुरसत किसी के पास नही है। केवल अपना चेहरा चमकाने के लिये पत्रकारों का सिर्फ प्रयोग करते है। ●

शिक्षक उमेश कुशवाहा बने कुशवाहा सेवा समिति के प्रखण्ड अध्यक्ष

● **मिथिलेश कुमार**

शिक्षा के बिना जीवन अधूरा है। सामाजिक चेतना जगाकर ही समाज में भाईचारा, शांति सद्भाव कायम किया जा सकता है। शिक्षा के बगैर किसी भी समाज का उत्थान नही हो सकता है। उक्त बातें वारिसलीगंज नवादा जिला कुशवाहा सेवा समिति के तत्वाधान में नगर के देवी स्थान स्थित सामुदायिक भवन में प्रखण्ड कमिटी का गठन समारोह के अवसर पर वक्ताओं ने कहा। समारोह का उद्घघाटन पूर्व मुखिया सुंदर प्रसाद एवं समिति के अध्यक्ष डॉ0 भोला प्रसाद ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर किया।बैठक प्रारंभ के पूर्व गौतम बुद्ध की प्रतिमा पर पुष्प समर्पित कर किया गया। बैठक में मुख्य रूप से समाज की आर्थिक, सामाजिक एवं शैक्षणिक विकास पर चर्चा की गई। वक्ताओं ने अपने सम्बोधन में कहा कि किसी भी समाज का सम्पूर्ण विकास शिक्षा से ही हो सकती है। बदलते परिवेश में शिक्षा का स्वरूप भी काफी बदल गया है।खासकर हमारे समाज में आर्थिक रूप से पिछड़े हुए गरीब प्रतिभावान बच्चे उच्च शिक्षा से बंचित हो रहे है। समिति वैसे बच्चों को चिन्हित कर उसे शिक्षा के उस मुकाम तक पहुंचाएगा जहाँ उसका स्वर्णिम भविष्य उसका इंतजार कर रहा होगा। वक्ताओं ने कहा कि शिक्षा के साथ साथ सामाजिक कुरीतियां यथा बाल विवाह, नशा बन्दी, दहेज प्रथा एवं रूढ़िवादी परम्पराओं बहिष्कार कर समता मूलक समाज की स्थापना की जा सकती है। वक्ताओं ने कहा कि हमारे समाज का इतिहास काफी गौरवशाली रहा है। हम सम्राट अशोक और चन्द्रगुप्त मौर्य एवं भगवान बुद्ध के बंशज है। हमें उनके जीवन से

सीख लेनी चाहिये तथा युवाओं को सामाजिक और आर्थिक, शैक्षणिक पिछड़ेपन को दूर करने की दिशा में सकारात्मक कदम उठा कर अपनी राजनैतिक भागीदारी एवं दावेदारी के लिये युवाओं को प्रेरित करते हुए अपने इतिहास को याद कराना होगा। ताकि आने वाले पीढ़ी भी अपने गौरवशाली अतीत को जानकर गौरवान्वित हो सके। बैठक में वारिसलीगंज कुशवाहा सेवा समिति का गठन हुआ जिसमें सर्वसम्मति से सभी पदों का मनोनयन किया गया। जीवन दीप पब्लिक स्कूल के निदेशक शिक्षक उमेश कुमार कुशवाहा को सर्वसम्मति से प्रखण्ड अध्यक्ष मनोनीत किया गया। वही कमलेश कुमार को सचिव एवं अरुनजय कुमार को कोषाध्यक्ष बनाया गया। मीडिया प्रभारी का दायित्व गुड्डू कुमार को दिया गया। सभी सदस्यों को पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई गई। सभी मनोनीत सदस्यों ने समाज के विकास के लिये अपना संकल्प दुहराते हुए सभी का आभार प्रकट किया।

मौके पर समिति सचिव रामचन्द्र कुमार सोनी, कोषाध्यक्ष दीपक कुमार, प्रखण्ड प्रभारी कमलेश कुमार एस एन मौर्य, खेल शिक्षक सन्तोष कुमार वर्मा, जिला मीडिया प्रभारी मिथिलेश कुमार, प्रो0 श्याम सुंदर प्रसाद, अर्जुन प्रसाद, राम किशुन प्रसाद, यमुना प्रसाद, नागेंद्र प्रसाद, संजय कुमार, उमेश प्रसाद, वीरेंद्र प्रसाद अधिवक्ता, दिलीप कुशवाहा, रविन्द्र कुमार, अरविंद कुमार, रविन्द्र सिंह, मनी प्रसाद, अजय कुमार कुशवाहा, नरेश कुमार, राजेश कुमार, सच्चिदानन्द प्रसाद, महेश्वर प्रसाद, अबधेश प्रसाद, विनोद कुमार सहित सैकड़ो लोग मौजूद थे। ●

आरोपों से घिरे डॉ. अशोक हुए पद से विमुक्त

सचिव के आदेश के बाबजूद नही दे रहे वित्तीय प्रभार, लंबे अर्से से चल रहा था कुर्सी का खेल, सचिव ने लगाया विराम

● मिथिलेश कुमार

कहा गया है पाप का घड़ा जब फुटता है तो किये गये कर्मो –कुकर्मो की सजा भी मिलती है। चाहे वह कर्म जानबुझ कर किया गया हो या नीयत में खोट हो। किसी ने सच कहा है कि पाप बुरा होता है। और पाप की सजा मानव को इसी जन्म में भोगना भी पड़ता है चाहे जिस रूप में हो। बालू की भीत और बिना टोपी का बादशाहत जाते देर नही लगती है।वैसे तो बिहार के विभिन्न सरकारी विधालयों एवं महाविधालयों सहित कई विभागों में फर्जी प्रमाण पत्र के आधार पर लंबे अर्से से नौकरी करने एवं जॉच होने पर उसकी सजा भुगतने की भी सूचना है। परन्तु करीब 25 वर्षो से फर्जी तरीके से महाविधालय के प्राचार्य पद पर आसीन होकर महाविधालय के आन्तिरक स्त्रोतों से अर्जित आय को अपने नीजि मद में खर्च कर अकुत संपति अर्जित करने वाले योद्वा की हालात कुछ ऐसी ही हो गयी है।हालांकि इसकी भनक शिक्षकेतर कर्मियों एवं कर्मचारियों को भी थी। जब सर से पानी ज्यादा बहना शुरू हुआ तो आखिरकार लंबे अर्से से प्राचार्य पद पर काबिज डॉ0 अशोक सिंह को अपने पद से हाथ धोना पड़ा। वाकई में यह मामला काफी दिलचस्प रहा। केवल सच ने हमेशा ऐसे मामले को सुर्खियों में लाकर भ्रष्टाचार में लिप्त कई पदाधिकारियो को बेनकाव किया है। नवादा जिले के वारिसलीगंज प्रखंड मुख्यालय स्थित महिला महाविधालय के प्रभारी प्राचार्य डॉ0 अशोक सिंह के मामले को भी पुरी प्रमुखता से प्रकाशित किया था। अब असर खबर का हो या पदाधिकारियों के द्वारा की गयी कारवाई का प्राचार्य पर गाज गिर ही गयी। वारिसलीगंज प्रखंड मुख्यालय स्थित मगध विश्वविधालय से स्थायी मान्यता प्राप्त महिला महाविधालय में लंबे अर्से से प्राचार्य पद को लेकर खींचतान पर आखिरकार विराम लग गया है। महाविधालय के पूर्व प्राचार्य डॉ0 अशोक कुमार के उनके द्वारा किये गये वीतीय अनिमियतता एवं महाविधालय के आन्तिरक स्रोतो से अर्जित राशि में व्यापक पैमाने पर हेर फेर तथा फर्जी तरीके से प्राचार्य पद पर बने रहने के आरोपों को लेकर खींचतान चल रही

थी। महाविधालय के सचिव सह विश्वविधालय प्रतिनिधि श्री मति गीता सिन्हा ने महाविधालय के पूर्व प्रचार्य को पद से विमुक्त होने का आदेश देते हुये महाविधालय के वरीय शिक्षक प्रो0 नवल किशोर प्रसाद को नया प्रचार्य पद पर नियुक्त होने का आदेश दिया। अपने पत्रांक 01/2019 दिनांक 26 मई 2019 में प्रभारी प्रचार्य डॉ0 अशोक कुमार को विरमित करते हुये अनमंडल पदाधिकारी सह अध्यक्ष शासी निकाय के पत्रांक 1550 दिनांक 01 नवम्बर 2018 के आदेशानुसार स्पष्टीकरण की मांग की गयी थी।

लगातार कई बार स्पष्टीकरण के बाबजुद संतोषजनक जबाब नही दिया गया। साथ ही साथ महाविधालय में फर्जी तरीके से प्राचार्य के पद पर काबिज होकर बगैर किसी वरीय पदाधिकारी के आदेश के एकल हस्ताक्षर से वृहद पैमाने पर राशि की निकासी की गयी है। जो घोर अनिमियतता है। उन्होनें अपने दिये गये आदेश में 24 घंटे के अंदर वरीय शिक्षक प्रो0 नवल किशोर प्रसाद को सारा प्रभार हस्तगत कराने को कहा था। परन्तु डॉ0 अशोक सिंह के द्वारा प्राचार्य पद का मोह नही छोड़ा जा रहा है। वितीय प्रभार नही मिलने के कारण महाविधालय का विकास कार्य प्रभावित हो रहा है। जिसके कारण सचिव ने पुनः महाविधालय के सभी खातों से पूर्व प्राचार्य का हस्ताक्षर पर रोक लगाकर नये प्राचार्य प्रो0 नवलकिशोर प्रसाद के द्वारा खाते का संचालन करने का आदेश दिया है। परन्तु पूर्व प्राचार्य डॉ0 अशोक कुमार के द्वारा सारे नियमों को ताक पर रखकर मनमाने तरीके से कब्जा जमाये हुये है । इस संबंध में महाविधालय के सचिव श्री मति गीता सिंहा ने बताया कि पूर्व प्राचार्य के द्वारा महाविधालय में फर्जी तरीके से प्राचार्य पद पर बने रहते हुये महाविधालय की राशि में काफी हेर फेर किया है। जो बिहार विश्वविधालय अधिनियिम की धारा का उंलघन है।साथ ही साथ बिहार विश्वधिालय अधिनियम 1976 की धारा 60 परिनियम 19/1 के आलोक में किसी भी सबद्वता प्राप्त कॉलेज में वरीय शिक्षक को ही प्रभारी प्राचार्य के पद पर बने रहने का अधिकार वर्णित है। जिसका उलंघन पूर्व प्राचार्य के द्वारा किया गया है। उन्होनें कहा कि पूर्व प्राचार्य के द्वारा किसी भी सूरत में वितीय लेन देन नही कर सकते है। उन्होनें अपने आदेश में कहा कि अगर पूर्व प्राचार्य के द्वारा आदेश की अवहेलना की जायेगी तो उनके विरूद्व अनुशासनात्मक कारवाई की जायेगी।

गौरतलब हो कि महाविधालय में प्राचार्य पद को लेकर लंबे अर्से से खींच तान चली आ रही है। और डॉ0 अशोक सिंह के द्वारा महाविधालय में लाखों रूपये का हेर फेर किया गया है। ऐसा आरोप महाविधालय के रामानुज प्रसाद, वृजनंदन सिंह, विकास कुमार, रामनंनदन सिंह सहित कई कर्मियों ने लगाते हुये इसकी शिकायत शासी निकाय समेत विश्वविधालय एवं महामहिम राज्यपाल को भी दिया था। जिसके आलोक में महाविधालय के वर्तमानद सचिव सह विश्वविधालय प्रतिनिधि श्री मति गीता सिहां के द्वारा यह कारवाई की गयी है। इन्होनें बताया कि काफी जॉच पड़ताल एवं पूर्व प्राचार्य को अपना पक्ष रखने की मोहलत कई माह तक दिया गया परन्तु उनके द्वारा कोई ठोस प्रमाण एवं स्पष्टीकरण नही दिया गया। उपरांत विधि सम्मत नियमानुकूल कारवाई करते हुये वरीय शिक्षक प्रो0 नवल किशोर प्रसाद को प्राचार्य नियुक्त किया गया है। महाविधालय सचिव द्वारा पुरी निष्पक्षता एवं साहसिक कदम उठाये जाने पर जहॉ पूर्व प्राचार्य खेमा में मायूसी दिख रही है। वही आरोप लगाने वाले खेमा में विश्वास जगी है। अब देखना है कि सचिव के आदेश का पालन पूर्व प्राचार्य के द्वारा किया जाता है या बैंक खाते से राशि की निकासी अनबरत जारी रहेगी। ●

डॉक्टर के कमीशनखोरी से राहत दिलायेंगे सुशासन बाबू

सुशासन की सरकार है तो दिखाई भी देनी चाहिए। सुशासन बाबू आपके राज में सबकुछ भगवान भरोसे ही है। सरकारी अस्पताल में डॉक्टर नहीं है तो प्राईवेट डॉक्टर को लूट की छूट मिली हुई है। सरकार के स्वास्थ्य विभाग के गलत नीति निर्धारण या फिर कहें कि कोई नीति ही नहीं रहने के कारण डॉक्टरों के कमीशन खोरी का भुक्तभोगी बन रहे हैं मरीज। कुकुरमुत्तों की तरह उग चुके पैथोलॉजी लैव चलाने के लिए किसी प्रकार का कोई रजिस्ट्रेशन कराने की आवश्यकता नहीं होती और फिर डॉ0 जिस पैथोलॉजी जांचघर में कहे उसी में यदि आप जांच नहीं कराते तो दूसरे जांचघर का रिर्पोट डॉ0 देखने से इंकार कर देते हैं। इससे मरीजो का आर्थिक नुकसान के साथ-साथ मानसिक रूप से भी प्रताड़ित होना पड़ रहा है। अधिक समय के बर्बादी होने के कारण जान-माल का भी नुकसान हो सकता है। सरकार को अल्ट्रासाउंड एक्सरे के साथ-साथ पैथोलॉजी लैव और डॉ0 की मनमानी फीस पर भी लगाम लगानी चाहिए जमुई से हमारे जिला ब्यूरो **अजय कुमार** की रिर्पोट :-

मोदी सरकार चाहे जितना भी कड़ाई कर लें अवैध कमाई का जरिया तो लोग ढूंठ ही लेता है। भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाने के लिए मोदी सरकार दिन-रात काम कर रही है पर आज भी हर जगह कमीशन का खेल जारी है। बड़े-बड़े अधिकारी, इंजीनियर, डॉक्टर से लेकर राजनेताओं तक कमीशन से लाखों की कमाई हो रही है। यही हाल स्कूलों से लेकर हॉस्पीटल तक में साफ देखा जा सकता है। बताया तो यहॉ तक जाता है कि जमुई में कोई भी हॉस्पीटल, पैथोलोजी लैब या फिर अल्ट्रासाउंड सेंटर हो हर एक का कमीशन फिक्स है। यहॉ तो पैथोलॉजी लैब से ही डॉक्टरों का लाखों रूपया महीना कमाई हो जा रहा है। हाल में हुए जमुई के एक प्रतिष्ठित डॉक्टर अमित रंजन का वायरल विडियो कुछ इसी ओर इंकित करता है। कोई जिम्मेदार पद पर बैठे आदमी भी कमीशन के लिए इतना गिर सकता है उसका जीता-जागता उदाहरण जमुई में करीब 3 मिनट 38 सेकेन्ड का यह वीडियो सब कुछ बया कर देता है। वैसे मेडिकल डिपार्टमेंट के किसी भी डॉक्टर से लेकर पैथोलॉजी लेव तथा एक्सरे-अल्ट्रासाउंड सेंटर तक में कमीशन का बहुत बड़ा योगदान माना जाता है। ये लोग जब नये-नये अपना क्लीनिक खोलते हैं तो मरीज को अपने यहॉ लाने के लिए कमीशन देते हैं। तभी से इनलोगों के खून में कमीशन जम जाता है। मरीज लाने में कमीशन, ऑपरेशन का अलग कमीशन, जॉच का अलग कमीशन जो पैथोलॉजी लैब वाले देते हैं। यहॉ तक कि डिलेवरी के समय मरीज को सरकारी हॉस्पीटल में कहा जाता है कि अमुक-अमुक दवा आपको दवा दुकान से लाना पड़ेगा। अल्ट्रासाउंड-एक्सरे रिपोर्ट का अलग कमीशन। कई बार तो सरकारी हॉस्पीटल के नर्स से लेकर आशा कार्यकर्त्ताओं तक मरीजों को इस कदर मोटिवेट कर देते हैं कि मरीज को हर हाल में सरकारी अस्पताल से प्राईवेट नर्सिंग होम पहुॅचा देते हैं और वहॉ भी कमीशन। यही नहीं जमुई में

कमीशनखोरी को लेकर डॉक्टर के साथ मरीज का बहश

कुकुरमुत्ते की तरह उग चुके नर्सिंग होम या फिर अल्ट्रासाउंड और एक्सरे सेंटर में वो डॉक्टर कभी बैठते नहीं उनके नाम पर उसके संचालक मरिजों से इलाज के नाम पर हजारों ऐंठ लेते हैं और यहॉ भी कमीशन काम करता है। बिना डॉक्टर का नर्सिंग होम भी कमीशन पर चलता है जमुई में। वैसे डॉक्टर जो शायद आज तक जमुई का उस अस्पताल को देखा तक नहीं होगा और वहॉ पर उनके नाम और डिग्री पर लाखों का महिना कमीशन देकर कमाते भी आप देख सकते हैं। हर नॉर्मल डिलेवरी में सदर अस्पताल के मरीज के परिजन को दो से ढाई हजार रूपये का दवा दुकान से खरीद कर लाना पड़ता है तथा सिजेरियन के लिए आठ से दस हजार का दवा। इस दवा में भी कमीशन ही काम करता है। हद तो तब हो जाती है जब डॉक्टर या उनके कथाकथित कम्पोंडर यह कहते हैं कि आप उसी दुकान दवा लायेगें जहॉ हम कहेंगे। या फिर पैथोलॉजी लैव अल्ट्रासाउंड-एक्सरे सेंटर जॉच कराएगें तभी हम देखेंगे अन्यथा नहीं तो आप समझ सकते हैं कि कमीशन का खेल किस हद तक पहुॅच गया है स्वास्थ्य विभाग में। डॉक्टर भी मनमानी और नाजायज कमाई का एक हिस्सा जमीन, मकान या फिर गोल्ड में इनवेस्ट कराते हैं यदि धरती के भगवान कहे जाने वाले डॉक्टरों की काली कमाई की जांच की जाये तो हर एक डॉक्टर करोड़ों की काली कमाई का मुजरिम होगा।

गौरतलब है कि लक्ष्मीपुर प्रखंड का

हर जांच का रेट फिक्स होने के बाद तो सब ठीक ही हो जाएगा-सिविल सर्जन

स्वस्थ्य विभाग में व्याप्त कमीशन खोरी पर हमारे जिला ब्यूरो अजय कुमार ने जमुई के सिविल सर्जन डॉ. श्याम मोहन दास से किये गये साक्षात्कार का अंश :-

★ सर क्या आपके विभाग में कमीशनखोरी है?

देखिए प्राईवेट में ऐसा होता है कि हम वही रिर्पोट देखेंगे जिस पर हमें विश्वास है वेसे वे हमारे हॉस्पीटल का मामला नहीं है। फिर भी हम डॉ0 अमित रंजन से शोकॉज किया है तथा उनका वेतन पर भी रोक लगा दिया है। संतोष जनक जबाव नहीं मिलने पर वेतन रोक दिया जाएगा। वैसे हमारे यहॉ कमीशनखोरी जैसा कुछ नहीं है। वो प्राईवेट में होता होगा। सरकारी हॉस्पीटल में कोई कमीशनखोरी नहीं है वैसे क्वालीफाईड डॉ0 को कमीशन की जरूरत भी नहीं है।

★ सर आपके यहॉ भी सदर हॉस्पीटल में नार्मल डिलेवरी के समय करीब 2000 से 2500 रूपये तक का दवा रात्री सेवा देने वाला दवा दुकान से मरिजों द्वारा मंगाने की बात बताई जाती है क्या यहॉ भी कमीशन फेक्टर है?

ऐसा कुछ भी नहीं है। नार्मल डिलेवरी में तो हम मान ही नहीं सकते। सारी दवाईयां उपलब्ध है हमारे यहॉ और रही सिजेरियन में तो आज से आप कहें तो सिजेरियन बंद कर देंगे क्योंकि कोई सिजेरियन का ओटी असिस्टेंट नहीं है मेरे यहॉ। बिहार के चार जिले में नहीं हो रहा है तो जमुई में भी नहीं होगा तो क्या हो जाएगा। सिर्फ जुलाई माह में 40 सिजेरियन हुआ है हमारे सदर अस्पताल में। एक आध दवा सिजेरियन में बाहर से मंगाया जाता होगा। हॉ आशा लोग थोड़ा बदमाशी करती होगी और वह भी मरीज को कमीशन के लिए बाहर के डॉक्टर के यहॉ इलाज कराने के लिए पर बाहर से दवा मंगाने की कोई जानकारी है तो हमें दीजिए हम कार्रवाई करेंगे।

★ जमुई में कई नर्सिग होम है, जहॉ देखा जा सकता है कि जिस डॉ0 का नाम बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा हुआ है वह डॉ0 बैठता ही नहीं है हॉस्पीटल में। क्या है यह कहीं कमीशन यहॉ भी तो नहीं है?

कोई लिस्ट है तो बताईये नर्सिग होम वाले पर कार्रवाई होगी।

★ अल्ट्रासाउंड, एक्सरे और पैथोलॉजी लैब में भी किसी न किसी डॉ0 का नाम दर्शाया जाता है, पर जॉच करने वाले की डिग्री देखी जा सकती है। क्या इस ओर आपने घ्यान दिया है?

हमलोग यहॉ पर हर तीन महीना में जांच कर कर्रवाई करते रहते हैं। वैसे उड़नदस्ता टीम भी बना हुआ है। सरकार को पॉलीसी बनानी चाहिए और पटना से टीम भेजकर जॉच करानी चाहिए।

★ जमुई में कितने अल्ट्रासाउंड, एक्सरे और पैथोलॉजी लैव रजिस्टर्ड है आंकड़ा दे सकते हैं?

सभी अल्ट्रासाउंड और एक्सरे सेंटर रजिस्टर्ड है। यदि आपके नजर में कोई है तो बता सकते हैं। वैसे पैथोलॉजी लैब के लिए रजिस्ट्रेशन की अनिवार्यता पर कोर्ट द्वारा रोक लगा दी गई है। पहले पेथोलॉजी के लिए भी रजिस्ट्रेशन कराना होता था, इस संबंध में लेटर भी निकाला गया है।

★ सर पैथोलॉजी अल्ट्रासाउंड और एक्सरे के लिए अधिकतम रेट फिक्स है क्या?

ऐसा नहीं है कहीं भी किसी भी जांच के लिए सरकार से कोई रेट फिक्स नहीं है। डॉक्टर का भी फीस फिक्स नहीं है। रेट फिक्स होने के बाद तो सब ठीक ही हो जाएगा। सिविल सर्जन जमुई डॉ श्याम मोहन दास जोर देकर बोलते हैं कि अजय जी आप एक चीज लिखिए कि प्रधानमंत्री जी जब जमुई आये थे तो उनके साथ आए एक कर्मी स्टेज पर गिरने के कारण घायल हो गये थे तब उन्हें पुष्पांजली हॉस्पीटल में आईसीयू में भर्ती कराया गया था। उस समय स्वास्थ्य मंत्री मंगल पांडे का फोन आया था कि क्या आपके यहॉ का आईसीयू काम कर रहा है? तो हमने कहा था सर यहॉ न तो आईसीयू संचालित है और न कोई एमडी, मेडिसीन/कार्डियोलॉजिस्ट और न ही एनेस्थेसीस ही उपलब्ध है। इस पर उन्होंने बोला था कि ठीक है देखते हैं। और क्या देखते हैं हमलोग भी देख रहे हैं।

पनपुरवा निवासी जितेन्द्र रावत की पत्नी अपने पॉच वर्षीय बेटे विशाल को दिखाने जमुई के प्रसिद्ध डॉ0 अमित रंजन को दिखाने गये थे। डॉक्टर अमित रंजन उस बच्चे को सीबीसी विडाल (मलेरिया,टाईफाईड) का एक प्रकार का जांच कराने बोला गया। डॉ0 अमित रंजन का कम्पोंडर उसे जमुई का गौरव जांच घर में जांच कराने बोला था पर महिला अपने बच्चे का सीबीसी विडाल का जांच गौरव जांच घर में नहीं करा कर वे सौरव जांच घर में करा लिया। सौरव जांच घर उस महिला के जांच-पहचान का था जो वायरल वीडियो में भी बताया जा रहा है। वीडियो में दिखाई देने वाले ठेवरी जमुई का विशाल है और वो भी आदर्श जांच घर पैथोलॉजी लैव खोले हुए है। बताते हैं कि डॉ0 महिला का रिर्पोट फेंक दिया कि आप गौरव से जांच क्यों नहीं कराया। बताया जाता है कि डॉ0 अमित रंजन को गौरव जांच घर के अलावे किसी भी जांच घर की जांच पर भरोसा नहीं कारण आप समझ रहे होंगे। सारी बात यहॉ वही कमीशन पर आ कर अटक जाता है। वीडियो में महिला बता रही है कि सर हम नहीं जानते थे कि आप सिर्फ गौरव का ही रिर्पोट देखते हैं यदि हम जानते तो हम दूसरे जगह जांच नहीं कराते। वैसे हम दूसरे जगह इस कारण से करा लिए कि वह मेरा जान-पहचान का था जहॉ पैसा कम लगा। अब हमारे पास पैसा नहीं है। वैसे वायरल वीडियो डॉ0 अमित रंजन के रिर्पोट नहीं देखने के बाद बनाया गया है। इस वीडियो में महिला बता रही है कि डॉ0 अमित रंजन रिर्पोट को फेंक देते हैं और उसी पैथोलॉजी से जांच कराने की बात करते हैं जहॉ कहा गया है।

गौरतलब है कि सरकार की स्वास्थ्य के प्रति गलत नीति के कारण आज मरीज की स्थिति दयनीय होती जा रही है और डॉक्टर से लेकर अल्ट्रासाउंड-एक्सरे सेंटर, पैथोलॉजी लैब तक मरीजों का दोहन करते हैं। मरीज भी सरकार के गलत नीति निर्धारण के कारण मजबूर नजर आते हैं और डॉक्टर उसका फायदा उठा रहे हैं। इस संबंध में डॉ0 और जमुई सदर अस्पताल के

हम आज भी अपने बातों पर अडिग हैं : डॉ0 अमित रंजन

हम कल भी इसपर अडिग थे और आज भी वही कहेंगे, क्योंकि हम स्टेट फारवर्ड आदमी हैं। हमको जिसपर विश्वास है वहीं का जांच मानेगें। गौरव जांचघर का ब्लड जांच आजमाया हुआ है और वह ब्लड जांच अच्छा करता है। वहीं अल्ट्रासाउंड के मामले में ललीत बाबू का अच्छा रिजल्ट है। हमको साल भर पहले सौरव वाला 50 से 60 प्रतिशत का कमीशन का ऑफर किया था हम नहीं माने तो नहीं माने। डॉ0 बताते हैं कि हम आज भी एक मरीज का ब्लड जांच करवाये थे हेमोग्लोबिन 10 प्वाइट बताया था पर हम उस मरीज का आंख देख कर बता दिये थे कि उसका रिर्पोट गलत है और फिर गौरव में जांच कराने के बाद 10 प्वाइंट बताया। आपको जो लिखना है लिखें पर फेक्ट लिखें।

उपाधीक्षक डॉ0 नौशाद बताते हैं कि कमीशन कहॉ नहीं है पर यह मामला कमीशन का है या नहीं है ये हम नहीं कह सकते पर डॉ0 को जहॉ विश्वास होता है वो वहीं पर मरीजों को जांच के लिए भेजते हैं। हालांकि हमारे यह पुछने पर कि जमुई में कोई ऐसा पैथोलॉजी लैव, अल्ट्रासाउंड एक्सरे सेंटर बता सकते हैं जिस पर भरोसा कर मरीज जांच करा सके तो डॉ0 नौशाद समेत डॉ0 सत्यार्थी बताते हैं कि वैसे तो जमुई में कोई पैथोलॉजी के स्पेशलिस्ट डॉ0 नहीं है। हमको इन्हीं में से किसी पर विश्वास करना होता है वैसे डॉ0 सत्यार्थी बताते हैं कि यह पूरी तरह क्लीनिकल टेस्टेड मामला होता है जिस पर हमें भरोसा अधिक होता है हम उसी के पास भेजते हैं। सत्यार्थी बताते हैं कि कमीशन तो हर जगह है कहीं कम तो कहीं ज्यादा वैसे क्वालीफाईड डॉक्टर को कमीशन की आवश्यकता नहीं होती है। तो क्या डॉ0 अमित रंजन क्वालीफाईड डॉ0 नहीं है यह भी एक यक्ष प्रश्न है। वैसे अमित रंजन खैरा पीएचसी के प्रभारी भी हैं और जमुई के सदर अस्पताल के बगल में अपना क्लीनिक खोले हुए हैं। इसके जस्ट सटे सौरव जांच घर नया-नया खुला है और हो सकता है कि यह मामला पूरी तरह से राजनीति से प्रेरित हो पर यह वीडियो पूरी तरह से कमीशनखोरी का पोल खोलता नजर आता है। इस संबंध में गौरव जांच घर के प्रोपराईटर गुड्डू से भी बात की गई तो उन्होंने बताया कि भैया यह राजनीति से प्रेरित है वैसे जिन डॉ0 को जिस पर विश्वास और भरोसा होगा वह वहॉ तो भेजेगें ही। वहीं विशाल जो महिला मरीज का रिस्तेदार है बताते हैं कि जब डॉ0 अमित रंजन द्वारा रिर्पोट नहीं माना गया तो हमलोग सौरव जांच घर गये और हमारे बोलने के बाद कि आपका रिर्पोट डॉ0 अमित रंजन नहीं मानते हैं तो वो मुझे जांच का पैसा रिटर्न कर दिया। वैसे वे बताते हैं कि हम भी आदर्श जांच घर चलाते हैं रिर्पोट में थोड़ा बहुत अंतर तो होता ही है पर डॉ0 साहब को सौरव जांच घर के रिर्पोट को भी मानना चाहिए था। वैसे वो मरीज फिर से गौरव में जांच कराया तो दोनों के जांच में समानता पाया गया। ●

बकरीद, स्वतंत्रता दिवस एवं रक्षाबंधन के शुभ अवसर पर नवादा सहित समस्त बिहारवासियों को हार्दिक शुभकामनाएँ।

-: निवेदक :-

अरूण कुमार

पूर्व मुखिया, बाबू कम्पनी, नवादा

बकरीद, स्वतंत्रता दिवस एवं रक्षाबंधन के शुभ अवसर पर बड़कीमुढ़ारी की समस्त जनता को हार्दिक शुभकामनाएँ।

-: निवेदक :-

श्रीराम प्रसाद सिंह

पैक्स अध्यक्ष सह मुखिया प्रतिनिधि

ग्राम-बड़कीमुढ़ारी, चेरन पंचायत, हरनौत, नालंदा

अंधेर नगरी चौपट राजा

● प्रो० रामजीवन साहू

अंधेर नगरी चौपट राजा! टके सेर भाजी टके सेर खाजा!!'' यह लोकोक्ति बिहार के नामचीन जिला जमुई के डॉ0 संजय कुमार मंडल के साथ खूब लागू होता है। भारत के आयकर अधिनियम के अनुसार 2018–19 तक 300000 से अधिक आय वाले पर टैक्स लगता था. तीन लाख से अधिक आय वाले नियोजित शिक्षक को भी कर चुकाना पड़ता था, भले ही वह पैदल या चोंय–चाय आवाज करने वाली साइकिल पर सवार होकर 10 से 15 किलोमीटर की दूरी को तय करना पड़ता हो, कम आमदनी के कारण उनके अपने बच्चों को निजी अच्छे विद्यालय में पढ़ाने का सामर्थ्य नहीं है। पैसे के अभाव में पुत्रियों की शादी अधिक सुख–सुविधाओं वाले परिवार में जाते हैं। इतना ही नहीं अपना और अपने परिवार को वे चलाते नहीं है, बल्कि किसी तरह पछड़–पछड़कर खींच रहे हैं। ऐसे शिक्षकों को टैक्स भी देना पड़ता है क्योंकि उनके वेतन का भुगतान सरकार करती है। उनकी आय का पूरा लेखा–जोखा सरकार के पास है। डॉ0 संजय कुमार मंडल, ये सरकारी कर्मचारी नहीं हैं, परन्तु इनकी आय प्रतिदिन कम से कम 300000 की है। एक सामान्य ऑपरेशन का 30,000 चार्ज है यदि प्रतिदिन 10 ही ऑपरेशन होता है तो 1 दिन की आमदनी 300000 हो जाती है। इसके अतिरिक्त परीक्षण शुल्क प्रति व्यक्ति 200 है यदि एक दिन में 100 मरीज को ही दखते हैं तो 20000 यह भी आमदनी हो जाती है। यदि 100 मरीज 1000 की दवाई खरीदता है तो कुल 100000 की दवाई हो जाती है। यदि इस पर 20 प्रतिशत कमीशन मिलता है तो 20000 प्रतिदिन कमिशन हो जाता है। एक्स–रे भी यदि 50 मरीज प्रतिदिन करवाता है और प्रति मरीज 1000 लिया जाता तो एक्सरे से कुल आय 50000 हो जाता है और इसमें 20 प्रतिशत कमीशन हो तथा कमीशन पर 10000 प्रतिदिन एक्स–रे का कमीशन हो जाता है। ऑपरेशन के बाद मरीज को कम से कम 2 दिन ठहरना पड़ता है। एक मरीज से 300 प्रति मरीज बेड चार्ज लिया जाता है यदि 100 मरीज ठहरता है, तो कुल 30000 बेड चार्ज से आ जाता है। इतना ही नहीं ऑपरेशन में यदि किसी को पाईप या छड़ लगाया गया है, तो उसके निकालने के लिए कम से कम 3000 मरीज को देना पड़ता है। यदि 10 मरीज का ही ऐसा काम हुआ तो कुल 30000 इससे भी मिल जाता है। एम.आर. भी कुछ न कुछ उपहार/दवाई प्रतिदिन डाक्टर को देकर ही जाता है। यदि प्रतिदिन 2000 का ही उपहार हो गया तो 2000 यह भी बढ़ जाता है। कुल मिलाकर देखा जाय तो एक दिन की कुल

आमदनी 300000, 20000, 20000, 10000, 30000, 30000, 2000 से 4,12,000 एक दिन की आमदनी हो गई। यदि 30 गुना 12 किया जाय तो 1 वर्ष की आमदनी 14,83,20,000 हो जाता है। इस आय में 20 प्रतिशत या 30 प्रतिशत अधिक हो सकती। इतनी आमदनी पर कितना टैक्स देते हैं यह मुझे जानकारी नहीं है। वह टैक्स देश के साथ न्यायप्रद यह तो आप भी बता सकते हैं। सरकार को खुफिया विभाग द्वारा इसकी जाँच करवानी चाहिए कि यह देश के साथ कितना न्याय कर रहे हैं। यदि तेजस्वी यादव की अदृश्य संपत्ति को आयकर विभाग ने जानकारी कर ली है तो इनकी जानकारी लेने में क्या कठिनाई है? इस अन्याय के कारण ही कुछ लोग बहुत दुखित हैं। क्योंकि कहा जाता है कि लोग अपने दुख से जितना दुखित नहीं है उससे अधिक दूसरे के सुख से अधिक दुखित हैं। इस समस्या का समाधान अवश्य होना चाहिए। एक तरफ यह डॉक्टर नौ–दस रुपए की वातानुकूलित गाड़ी में शान के साथ घूमते हैं तो दूसरी तरफ एक वैसा करदाता भी जो अपनी दूरी को टूटी साइकिल से तय करते हैं। दूसरी बात यह है कि इस डॉक्टर का एकमात्र उद्देश्य येन–केन प्रकारेण धन इकट्ठा करना है। इसलिए एक ही प्रकार के ऑपरेशन में अलग–अलग व्यक्ति से अलग–अलग चार्ज लिया जाता है यदि मंडल है तो फिर क्या कहना राशि भी कम हो जाती है और अतिरिक्त सुविधाएँ भी मिलने लगता है। मजे की बात यह है कि डॉ0 साहब को पता नहीं है कि किस मरीज से कितना रूपया लिया गया। ऑपरेशन के बाद मरीज कहाँ रहेगा वह भी निश्चित नहीं है। कमरा सबसे पहले मंडल मरीज को आरक्षित किया जाता है। बाद में दूसरे को मिलता है। किसी के स्तर का कोई ख्याल नहीं रखा जाता है। ऑपरेशन के बाद दूसरे दिन मरीज को देखने की आवश्यकता डॉक्टर साहब नहीं समझते हैं। यहाँ व्यवस्था नाम की कोई चीज नहीं है।किसी एक मरीज के साथ 5–7 व्यक्ति हॉस्पिटल में रहते हैं जिसके कारण अन्य मरीज को थोड़ा नहीं बल्कि बहुत कष्ट होता है। ये घटनाएँ काल्पनिक नहीं है बल्कि आपबीती हैं। एक मरीज तो कंपाउंडर को यहाँ तक कह डाला कि क्या डॉक्टर ऑपरेशन के बाद मर गया है जो ऑपरेशन किए हुए 36 घंटे हो गए हैं परंतु एक बार भी देखने क्यों नहीं आए। वह मरीज शांत भाव से नहीं कहा बल्कि कड़क आवाज में कहा तब जाकर डॉक्टर और कंपाउंडर देखने आए। इसलिए तो कहा गया कि ''अंधेर नगरी चौपट राजा, टके सेर खाजा, टके सेर खाजा''। बिहार सरकार और भारत सरकार से आग्रह करता हूँ कि इसकी जाँच निश्चित रूप से होना चाहिए माँ जगदम्बा क्लीनिक का जाँच अवश्य होना चाहिए। इसका भवन भी गवाह देने के लिए उत्सुक है। ●

पुरातत्व विभाग के नजरों से ओझल है धनियावां पहाड़ी स्थित शिव-पार्वती मंदिर

● अरविन्द मिश्र

मनोवांछित मुरादें पूरी करती है, धनियावां स्थित शिव पार्वती की मंदिर। कोई भी याचक खाली हाथ वापस नहीं लौटता है,ऐसी आमधारणा है,आसपास के लोगों मे है।सच्चे मन से मांगे गये मूरादें पूरी करते है,बाबा भोले। जिले के नारदीगंज प्रखंड के धनियावां गांव स्थित ऐतिहासिक शिव पार्वती मंदिर आजादी के कई दशक बीत जाने के बाद भी उपेक्षित है। उक्त मंदिर द्वापरकालीन होने के बावजूद भी इतिहासकारों व पुरातत्व विभागों के निगाहों से ओझल है। लोगों का मानना है कि सरकार व अधिकारियो की उदासीनता इसके लिए जिम्मेवार है। यह मंदिर पहाड़ी पर स्थित है। सुप्रसिद्ध पर्यटन स्थल राजगीर से आठ किलोमीटर की दूरी पर दक्षिण नारदीगंज से पश्चिम में धनियावां पहाड़ी पर स्थित है शिव पार्वती मंदिर। जहां आसपास के अलावा दूर दराज के श्रद्धालु अपना माथा टेकना नहीं भूलते है।सच्चे मन से मांगी गई मुरादें को पूरी करते है बाबा । लेकिन प्रशासनिक तौर पर इस मंदिर में आने वाले श्रद्धालुओं के लिए सुरक्षा की कोई व्यवस्था नही की जाती है।

लोग पूजा अर्चना कर मनोवांछित मुरादे पाते है,साथ ही मेले का आनंद भी उठाते है। किंवदतियां है कि द्वापरकालीन शिव पार्वती मंदिर में मगध सम्राट की पुत्री धन्यावती अपने अराध्यदेव भगवान शिव की पूजा अर्चना करने के लिए राजगीर से नित्य इस पहाडी पर आया

क्या कहते है नारदीगंज के श्रद्धालु

बुन्देल मांझी (समाजसेवी सह श्रद्धालु) :– मनोबांछित मूरादे करते है,धनियावां पहाड़ी स्थित शिवपार्वती मंदिर। मंदिर काफी उपेक्षित है। इस मंदिर का सौन्दर्यीकरण के लिए पुरातत्व विभाग से किया गया है,ताकि धरोहर व संस्कृति को बचाया जा सके।

अजय सिंह, पसई :– महाशिवरात्री पर्व को लेकर मंदिर में तैयारी की जा रही है, इस मंदिर मे पूजा अर्चना करने के लिए श्रद्धालुओ का ताता लगा रहता है। जनप्रतिनिधियो व अधिकारियो के अनदेखी के कारण मंदिर उपेक्षित है।

अभय सिंह, परमा :– धनियावां पहाड़ी स्थित मंदिर में सच्चे मन से पूजा अर्चना करने बाले याचक कभी भी

खाली हाथ वापस नही लौटते है, लेकिन प्रशासनिक स्तर पर यह मंदिर सदियों से उपेक्षित है। इस मंदिर का सौन्दर्यीकरण होना आवश्यक है।

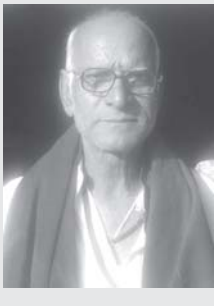

प्रो0 उपेन्द्र नारायण सिंह (पैक्स अध्यक्ष सह पूर्व मुखिया) :– यह मंदिर द्वापरकालीन है। धनियावां पहाडी पर शिवपार्वती का मंदिर है,भगवान खुले आसमान है,पूजा अर्चना के लिए काफी दूर दूर से आये दिन श्रद्धालुओ का जमाबाडा लगा रहता है। पहाडी के नीचे उदासीन पंथ का विशाल मठ भी है,जहां आये साधू संतो को ठहराव के साथ भोजन की भी व्यवस्था की जाती है। मन्नते मांगने श्रद्धालुओं की मुरादे पूरी होती है। लेकिन आजतक मंदिर उपेक्षित है।

करती थी। पहाड़ी के नीचे विशाल सरोवर में स्नानकर भगवान शिव की पूजा अर्चना करती थी। पहाड़ी के नीचे विशाल सरोवर एक एकड़ 82 डिसमिल भूमि पर फैला हुआ है। तालाब की खुदाई व घाटो का सौदर्यीकरण मनरेगा के तहत तकरीबन पांच वर्ष पूर्व कराया गया था। उक्त मंदिर में स्थापित अदभूत काले रंग के भव्य व विशाल शिव पार्वती की प्रतिमा है। लोगो का मनाना है कि मूर्तियां अर्द्धनारीश्वर है। पहाड़ पर स्थित मंदिर में भगवान सदियों से खुले आसमान में है। चारो ओर चहारदिवारी से घिरे भगवान निवास कर रहे है। इसके अलावा 10 शिवलिंग भी मंदिर परिसर में विद्यमान है। पहाड़ के नीचे उदासीन पंथ का एक विशाल मठ भी है, जो काफी पुरानी है। जहां आये हुए साधू व संत के ठहराव के साथ मठ के द्वारा भोजन आदि की व्यवस्था की जाती है। उस पर भी सरकार की ओर से कोई ध्यान नहीं दिया जा रहा है। आसपास के ग्रामीणो ने ऐतिहासिक व द्वापरकालीन शिव पार्वती मंदिर, तालाब के साथ जीर्ण शीर्ण अवस्था में स्थित मठ का सौन्दर्यीकरण करने की मांग पुरातत्व विभाग से किया है,ताकि धरोहर व संस्कृति को बचाया जा सके। सावन माह में मंदिर में पूजा अर्चना करने के लिए श्रद्धालुओं की भीड़ बनी रहती है।खासकर के सावन के प्रत्येक सोमवारी को गांव के अलावे दूर दराज के श्रद्धालुओ पूजा अर्चना के साथ जलाभिषेक करने की लिए पहुंचते है। रोशनी की भी व्यवस्था रहती है। इस संबंध मे मंदिर के पूजारी बब्लु मिश्र,मतलू मिश्र कहते है कि शिवरात्री के दिन भी मंदिर में श्रद्धालुओं का ताता लगा रहता है,सफाई का पूरा ख्याल रखा जाता है बाबा पर चढ़ने बाला वेलपत्र, पुष्प को पूजा के उपरांत पहाड़ी पर रखा जाता है। लेकिन प्रशासनिक स्तर पर मंदिर का कोई भी सुरक्षा की व्यवस्था नहीं है, सदियों से मंदिर उपेक्षित है। ●

जिले का द्वापरकालीन व ऐतिहासिक धनियावां पहाड़ी स्थित शिवपार्वती मंदिर काफी उपेक्षित है। मंदिर के सौन्दर्यीकरण व पर्यटक स्थल से जोड़ने के लिए पुरातत्व विभाग को प्रतिवेदन भेजा गया है।

राजीव रंजन, बीडीओ

पर्यावरण को संतुलित बनाये रखने के लिए पौधारोपण जरूरी : डी.एम. कौशल कुमार

● **अरविन्द मिश्र**

वन महोत्सव के अवसर पर 3 अगस्त 2019 को विधि महाविद्यालय नवादा में पौधारोपन कार्यक्रम आयोजित किया गया। डीएम कौशल कुमार ने विद्यि महाविद्यालय परिसर में पौधारोपन कर कार्यक्रम को शुभारंभ किया। मौके पर वन पदाधिकारी अवधेश कुमार ओझा, सूचना जन संपर्क पदाधिकारी गुप्तेश्वर गुप्ता समेत अन्य पदाधिकारियों व कर्मियों ने एक पौधा को रोपन कर पृथ्वी को हराभरा रखने का संकल्प लिया। इस महाविद्यालय में 200 पौधारोपन करने का लक्ष्य रखा गया है। वन महोत्सव को लेकर महाविद्यालय परिसर में एक सेमिनार आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में डीएम कौशल कुमार, डीएफओ अवधेश कुमार ओझा, जिला सूचना जनसम्पर्क पदाधिकारी गुप्तेश्वर गुप्ता, महाविद्यालय निदेशक प्रो0 अनिश पंकज, कार्यक्रम संयोजक प्रो0 एसएन मिश्र द्वारा संयुक्तरूप से दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ किया गया। कार्यक्रम के पूर्व विद्यार्थिओं द्वारा स्वागत गीत गाकर अतिथियों ाके महाविद्यालय के परिवार की ओर से बुके व मोमेंटो देकर सम्मानित किया गया। डीएम कौशल कुमार

ने उपस्थित लोगो को सम्बोधित करते हुए कहा वन अधिनियम 2019 का आगाज हुआ है। राज्य में डेढ़ करोड़ वृक्ष लगाने का लक्ष्य रखा गया है। जिसमे नवादा जिला में छह लाख वृक्ष लगाये जायेगे। जिलाधिकारी कौशल कुमार ने कहा वृक्ष लगाना केवल मकसद नहीं है, वृक्ष को बचाना भी एक जिम्मेवारी है। उन्होंने महाविद्यालय के विद्यार्थिओं से अपील किया है कम से कम एक एक पौधा को अवश्य लगाये, और उसे देखभाल भी करें, ताकि पर्यावरण सुरक्षित रह सकें। आज जलवायू में परिवर्तन हो गया है, वर्षा कम हो रही है, जिसका कारण है वृक्ष की कमी। डीएम ने कहा जीवन जीने के लिए ब्रिज बहुत जरूरी चीज है। समाज के प्रत्येक व्यक्ति का दायित्व है कि एक एक वृक्ष को लगाकर उसे देखभाल करे,ताकि पर्यावरण को संतुलित बना रह सकें। नवादा विधि महाविद्यालय का विधि व्यवस्था को देखकर जिलाधिकारी कौशल कुमार ने प्रशंसा जाहिर किया। इस मौके पर जिला वन पदाधिकारी अवधेश कुमार ओझा ने संबोधित करते हुए कहा समाज के हर व्यक्ति को कम से कम एक वृक्ष लगाये। उन्होने कहा देश में 70वां वन महोत्सव मनाया जा रहा है। वन अधिनियम के तहत वृक्ष लगाने पर 3 वर्ष तक देखरेख करने का प्रावधान है, तथा महाविद्यालय कर्मी देखभाल कर इस योजना को सफल बनाने में सहयोग करें। वही मंच संचालन एसकेएम कॉलेज प्रभारी प्राचार्य बच्चन पाण्डेय ने किया। इस मौके पर प्रो0 नूतन चंद्रा, डॉ0 बिनोद कुमार सिंह, प्रो0 चंदेश्वर कुमार, महेश मिश्रा, डॉ0 पूनम सिन्हा, बालमुकुन्द पाण्डेय, संतोश कुमार समेत अन्य महाविद्यालय के कर्मी मौजूद रहे।●

पालीगंज के सड़क पर नेताओं का खेल

● विकाश कुमार/संतोष कुमार मिश्रा

सड़क व शिक्षा के बगैर विकास की बाते बेईमानी है, ऐसा चुनाव के दौरान कुछ नेतागण का कहना था। बिहार में विकास की चर्चा हो और सड़क की चर्चा न हो ऐसा हो नही सकता। इन सारी उपलब्धियों में सड़क का विकास सर्वश्रेष्ट माना जा रहा है तथा बिहार में सड़क का राजनीती जोरो पे रहा है। रोड लो वोट दो। लेकिन ऐसा हुआ नहीं, लोकसभा चुनाव के दौरान कई सड़कों को निर्माण की स्वीकृति दे दिया गया। यहां तक की इन सड़कों का टेन्डर भी हो गया परन्तु कार्य आज भी प्रारंभ नहीं हुआ है। आज भी ऐसे कई सड़के हैं जो बदहाली की दौर से गुजर रही हैं। एक ऐसे सड़क कि चर्चा करने जा रहे हैं जो कई जिलों को जोड़ता है। यह सड़क पालीगंज से अतौलह अर्थात शंतीपुरम् तक जाती है। इस सड़क के दोहरीकरण हो जाने से कई जिलों को फायदा हो सकता है, जैसे पालीगंज से जहानाबाद, पालीगंज से अरवल, पालीगंज से करपी-तेलपा, पालीगंज से कुर्था - गया, जाना आसान हो जायेगा। इस क्षेत्र के जनता करीब 10-12 साल से सुनते आ रही है की इस सड़क का दोहरीकरण होने जा रही है। परन्तु आज भी यह मार्ग एकल है। पालीगंज से अतौलह मार्ग की सड़क वदहाली के उस दौर से गुजर रही है जो सुसासन वाली सरकार के दावे के आड़े हाथो लेती है और आज के समय में गॉव की सड़के भी इस मुख्य मार्ग वाली सड़क को पीछे छोड़ रही है। यह सड़क आज भी एकल है। और इस एकल मुख्य मार्ग में छोटे-बड़े गड्ढ़े हैं। इसकी चर्चा हमेशा होता है कि ये सड़क का दोहरी करण बहुत जल्द ही होने वाला है। परन्तु दस, बारह वर्षो से जनता इस बात को सुन-सुन कर उब चुकी है कि ये सड़क का दोहरीकरण जल्द ही होने वाले हैं। परन्तु आज भी यह सड़क एकल एवं गड्ढ़े से भरा पड़ा है। सरकार के झुठे एवं खोखले दावे अब जनता के मन में असंतोष पैदा करता जा रहा है।

लोकसभा चुनाव 2019 के पहले सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी के द्वारा तारीख 9 जनवरी 2019 को इस सड़क को सीआरएफ योजना के तहत निर्माण की स्वीकृति दिया गया था। जिसमें तीन सड़कों का चर्चा किया गया है। और इनमें तीनो सड़को का हाल बेहाल है।

1 नौबतपुर-शहर-रामपुर-मझनपुरा-दुल्हिन बाजार पथ

2 पालीगंज-खनपुरा-झुनाठी-बहादुरपुर-अतौला पथ

3 पालीगंज-अकबरपुर पथ

स्वीकृति मिलने के तुरन्त बाद 16/01/2019 को टेंडर भी हो गया। परन्तु आज भी कार्य शुरू नही हुआ है। हां इसका फायदा सांसाद श्री राम कृपाल यादव को जरूर मिला। जो इस क्षेत्र की भोली भली जनता उन्हें पुनः सांसद बना दिया। उस समय चुनाव के दौरान फेसबुक पर छाया हुआ था की पाटलिपुत्रा सांसद राम कृपाल यादव के द्वारा कराया गया है। इस सड़क के स्वीकृति दिये जाने के बाद जनता में खुशी की लहर छा गयी जिसका पुरा फायदा चुनाव में श्री राम कृपाल यादव को मिला। यदि सरकार के अनुसार बिहार में सड़को का भरपुर विकास हुआ है तो बिहार के पटना जिला के पालीगंज विधानसभा क्षेत्र का यह मुख्य मार्ग विनाश के थपेडे को क्यो झेल रहा है? पालीगंज के साथ सौतेला व्यवहार आखिर क्यों? आखिर जनता कब तक इनकी झुठी वादो का शिकार होता रहेगा। इस क्षेत्र के विधायक श्री जयवर्धन यादव हैं। इनसे जनता को ढ़ेरो उम्मीद थी पर जनता को निराश कर दिये। विधानसभा चुनाव आने वाला है। कही जनता जहानाबाद पूर्व सांसद डॉ अरूण कुमार की तरह ही न कर दे। कैसे बनेगा नितीशजी का सपनो का बिहार पालीगंज से अतौलह मुख्य मार्ग एक महत्वपूर्ण सड़क होते हुये भी इस मुख्य मार्ग का विकास अभी तक नही हो पाया है सुशासन कि सरकार ने विगत 12,13 वर्षो में काफी ख्याती प्राप्त की है विभिन्न लम्बी चौडी योजनाओ को धरातल पर उतार कर अपने विकास कार्यो का रिपोर्ट कार्ड जारी तो किया है पर इस मुख्य मार्ग का विकास दूर-दूर तक नजर नही आ रहा है या फिर पालीगंज के यह क्षेत्र छोटा होने के कारण ध्यान नही दिया जा रहा है। इस प्रकार के दोयम दर्जे की नीती से बिहार का विकास सम्भव है अगर हॉ तो छोटे क्षेत्रो पर अन्याय क्यों? क्यों इस मुख्य मार्ग की दशा इतनी दयनीय है? क्यों क्षेत्र के जनता के साथ ऊॅच-नीच और मजबूत-कमजोर समझा जाता है? जनता इनके झुठे एवं खोखले वादों से उब चूका है, आखिर कब तक जनता अन्याय को सहती रहेगी? तो फिर ऐसे में गुस्से की धधक तो

उठना लाजमी है। इतना ही नही रही बात पालीगंज की विकास कि तो पालीगंज के विकास में कई मुददे है। अगर धरहारा मोड़ से सीधे दक्षिण कि ओर खपुरा के पुरब तथा दक्षिण होते हुए डिहपाली से दक्षिण खिरिमोड़ तथा अकबरपुर मोड़ पर नई सड़क को जोड़ा जाये तो पालीगंज में जाम का सम्स्या से भी निजात मिलेगा तथा पालीगंज का भी विकास होगा। पालीगंज में जाम का समस्या भी बहुत है। जिससे यात्रीयों को काफी परेशानियो का सामना करना पड़ता है। अगर इस नयी सड़क को जोड़ा जाये तो चुढ़ोस किंजर, खिरीमोड़ अतौला तथा अकबरपुर जाना आसान हो जायेगा। इतना ही नही पालीगंज बाजार क्षेत्र का विकास करने में भी आसान हो जायेगा। बात पर्यावरण की है तो सड़क के किनारे पौधारोपन की योजना है। तो पालीगंज-खानपुरा-झुनाठी-अतौला पथ। इसी सड़क पर खनपुरा से लेकर अतौला तक सड़क के दोनों तरफ खाली पड़ा है। इस पर भी पौधारोपन किया जाये तो जल-जीवन-हरियाली मिशन के तहत कार्य होगा। पालीगंज से अतौलह जाने के क्रम झुनाठी, हाजीपुर तथा बहादुरपुर गॉव परता है। इस गॉव के ग्रामीणो से बात करने पर उनका कहना है कि अतौलह से पालीगंज को जोड़ने वाली मुख्य मार्ग की हालत अत्यंत गंभीर है। पक्की सड़क होते हुये भी गाड़ी से जाने पर पता नही चलता है कि पक्की सड़क पर गाड़ी चल रही है या खेत में। सड़क पर छोटे-छोटे गडढ़े होने तथा समतल नही होने के कारण गाड़ी चलाना एवं यात्रीयो को सफर करने में बहुत कठनाईयो का सामना करना पड़ता है। इस सड़क का दोहरी कारण हो जाने से कई जिलो को फायदा होता। पिछले कई वर्षो से सड़क एवं विकास पर ही जनता के विश्वास को जीतते आ रहे हैं। जब पूर्व में राज्य स्तर पर इनकी पार्टी सत्ता में नही थी परन्तु आज जब इनकी पार्टी बिहार में सत्ता पक्ष पर काबिज है। इतना ही नही पथ निर्माण मंत्री नन्द किशोर यादव जो रोज सड़को पर नई योजनाये पर काम कर रहे है। तथा धरातल पर उतारने की बात करते हैं फिर भी सड़क कि दूर दशा इनकी नाकामी और जनता के प्रति उपेक्षित व्यवहार को दर्शाता है। आश्चर्य है कि इतनी उपलब्धियों के बावजुद भी इस ओर ध्यान नहीं दे पा रहे हैं जिससे जनता ना उम्मीद होते जा रही है। ●

नितिन गडकरी
NITIN GADKARI

मंत्री
सड़क परिवहन, राजमार्ग एवं पोत परिवहन
जल संसाधन, नदी विकास, गंगा संरक्षण
भारत सरकार
Minister
Road Transport, Highways & Shipping,
Water Resources,
River Development, Ganga Rejuvenation,
Government of India

डी.ओ.आरडब्लयू/एनएच-28014/10/2014/बीआर/जेड-1 9 जनवरी, 2019

प्रिय श्री राम कृपाल यादव जी,

कृपया अपने पत्र दिनांक 18 दिसम्बर, 2018 का संदर्भ लें, जो कि (i) नौबतपुर-शहर-रामपुर-मझनपुरा-दुल्हिन बाजार पथ, (ii) पाली-खानुवा-झुनाठी-बहादुरपुर-अतौला पथ, एवं (iii) पाली-अकबरपुर मार्ग का निर्माण सीआरएफ योजना के अंतर्गत करने के संबंध में है।

2. आपको सूचित करते हुए मुझे प्रसन्नता है कि उपरोक्त प्रस्ताव को सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय ने सीआरएफ योजना के तहत निर्माण की स्वीकृति दे दी है।

सादर।

आपका,

(नितिन गडकरी)

श्री राम कृपाल यादव,
ग्रामीण विकास राज्य मंत्री,
भारत सरकार,
कृषि भवन, नई दिल्ली

महाविद्यालय की ओर से समस्त
छात्र-छात्राओं को स्वतंत्रता दिवस की
हार्दिक शुभकामनाएँ।
-: निवेदक :-
जितेन्द्र कुमार पाण्डेय, प्राचार्य
जन सहकारी डिग्री महाविद्यालय,
बराप, गड़हनी, भोजपुर
मो०:-9939883991

हमारी सेवायें :- आर्ट्स, सायंस
एवं कॉमर्स की पढ़ाई के
साथ-साथ लैब एवं पुस्तकालय से
सुसज्जित।

सहायक के गलती का खामियाजा भुगत रहे प्रोफेसर

● मणिभूषण तिवारी

आ ये दिन किसी ना किसी विभाग में घोटाला और भ्रष्टाचार का मुद्दा आते रहता है, परन्तु इस प्रकार जाँच के नाम पर सरकार और कोर्ट को कहाँ तक उलझाए रखना उचित है। कोई घोटाला या घोटाले की संदेह की स्थिति में जाँच कमेटियाँ गठित की जाती है। परन्तु जाँच कमेटी की रिपोर्ट उसी तरह गोपनीय रखी जाती है, जिस प्रकार सरकारी हथियारों का जखीरा। तो ऐसे में जाँच रिपोर्ट और जाँच कमेटी जब पारदर्शिता नहीं दिखायेगें तो उस जाँच की सत्यता पर कौन भरोसा करेगा। अब जरूरत इस बात की है कि जाँच रिपोर्ट की भी जाँच हो यानि शुद्धता के लिए जाँच की भी जाँच हो ऐसा केवल सच पत्रिका ने कई बार अपने प्रकाशन में लिख कर ये लोगों और सरकार को बताने का काम किया है। इससे लोगों को पारदर्शी न्याय मिल सकता है। एक मामला वीर कुँअर सिंह युनिवर्सिटी, आरा के एम.बी.ए. विभाग से जुड़ा हुआ है। वर्ष 2010 से 15 के बीच एम. बी.ए. विभाग के निदेशक रहे प्रो. राम जनम शर्मा का रिटायरमेंट बेनीफीट ये कहकर रोक दिया गया कि आपके कार्यालय में आपके कार्यालय सहायक के द्वारा 18 लाख 65 हजार 664 रूपये की हेराफेरी कर सामंजन नहीं किया गया जो कि घोटाले की आशंका है, तो ऐसे में जब ये सिद्ध हो चुका है कि कार्यालय में इतना रकम कार्यालय सहायक के द्वारा खर्चा किया गया और बैंक में जमा नहीं कराया गया तो कार्यालय सहायक का पेमेंट रोक देना था, परन्तु ऐसा नहीं किया गया। कार्यालय सहायक गजाधार सिंह महाराजा कॉलेज

से रिटायर आदमी था।

जिसको की वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय ने एम.बी.ए. विभाग में एकाउंटेंट के पद पर रख लिया था। अब सहायक के भी सहायक रहे उसके वर्षों के अनुभव भी काम नहीं आया और उसे रिटायरमेंट बेनिफीट से लेकर पेंशन तक सभी सेवायें आज भी जारी है, जबकि वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय ने स्पष्ट अपने पत्रांक MBA/ 2018 दिनांक 18.01.2018 के माध्यम से ये अवगत कराने का काम किया है कि कार्यालय सहायक के द्वारा किये गये कार्य निष्पादन में त्रुटी पाई गई है। बैंक स्टेटमेंट एवं कैश बुक में 18 लाख 65 हजार 664 रूपये की गड़बड़ी पाई गई है। तो ऐसे में अकेले एम.बी.ए. डाइरेक्टर प्रो. राम जनम शर्मा ही दोषी कैसे हैं। पनीशमेंट तो दोनों को होना चाहिए था परन्तु ऐसा हुआ नहीं क्योंकि कार्यालय सहायक तो महाराजा कॉलेज का रिटायर्ड Accountant था और पेंशनर भी था। उसने अपना रिटायरमेंट बेनीफीट ले चुका था। प्रो. राम जनम शर्मा रिटायर नहीं हुए थे तो उनका रिटायरमेंट बेनीफीट रोक दिया गया। यही हमारे देश का कानून है। यूनिवर्सिटी द्वारा बनाई गई जाँच कमिटी ने क्या रिपोर्ट दिया है, उसे गोपनीय रखा गया है। जाँच रिपोर्ट से प्रो. राम जनम शर्मा को अवगत भी नहीं कराया गया। तो इससे कैसे स्पष्ट हो पायेगा कि पूर्व डायरेक्टर प्रो. राम जनम शर्मा दोषी हैं। और अगर वो दोषी हैं तो कार्यालय सहायक निर्दोष कैसे हैं। ये भी एक जाँच का विषय है, जो कि नहीं कराया गया और वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय तथा सरकार दोनों को गुमराह किया गया। ये बिहार है। यहाँ बहुत कुछ अंधेरे में रखा जाता है। यानि खेत खाये गदहा मार खाये जोलहा। इस कहावत को चरितार्थ करती है वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय की जाँच कमिटी। ●

कौन है C.C.T.V. कैमरे की निगरानी में

● मणिभूषण तिवारी

आ प C.C.T.V. कैमरे की निगरानी में हैं'' ये वाक्य एक स्लोगन बनते जा रहा है। जरा सोंचने वाली बात है दफ्तर के सारे पोजीशन में कैमरा निगरानी कर रहा है, परन्तु दफ्तर के सबसे भीतरी कमरे में क्या कैमरा लगा हुआ होता है। कदापि नहीं बड़े साहब तो ईमानदारी का चोला पहन कर बैठे हुए रहते हैं। और सरकार भी इस पर बिल्कुल बेफिक्री से हाथ पर हाथ धरे बैठे रहती है, क्योंकि बड़े साहब आवश्यकता से ज्यादा ईमानदार एवं सरकार के प्रति वफादार होते हैं तभी तो C.C.T.V. उनकी निगरानी नहीं करता उनकी निगरानी से C.C.T.V. कैमरा भी डरता है, वैसे क्यों ना डरे। कैमरा तो पब्लिक और छोटे-छोटे कर्मचारियों को डराने एवं निगरानी करने का काम किया करता है। लेकिन जरा सोचिये अंदर से ऑफिस में बैठे अधिकारी की निगरानी एवं सुरक्षा C.C.T.V. कैमरा क्यों नहीं करता। क्या उनको परमानेंट ईमानदारी का लाईसेंस मिला हुआ है। और अगर ऐसा है तो एक देश एक कानून का क्या मतलब रह जाता है। और तो और पहले एक फैशन बना था "Be ware of dogs' यादि कूत्ते से सावधान यानि कि दरवाजे के गेट पर ये शब्द लिखकर बड़े लोग क्या साबित करना चाहते थे ये सबको पता है। ठीक उसी प्रकार आज C.C.T.V. कैमरे का हाल है। अगर किसी दफ्तर में C.C.T.V. लगा है तो लिखने का क्या जरूरत है कि आप C.C.T.V. के निगरानी में हैं। क्यों ये शब्द लिखकर चोर को सावधान किया जा रहा है। इसपर भी सरकार को गंभीर होने की जरूरत है। बड़े साहब के ऑफिस में भी कैमरा लगना चाहिए और इसकी मोनेटरिंग उनसे बड़े साहब को करना चाहिए। वरना भ्रष्टाचार रोकने की दिखावापन बंद करना होगा। क्योंकि ये पब्लिक है सब जानती है और अगर ऐसा नहीं करते तो सरकार को इसपर एक नजर विचार करना चाहिए कि क्या C.C.T.V. के नजर में सिर्फ पब्लिक और छोटे-कर्मचारी ही रहेंगे या फिर अधिकारियों पर भी नजर रखी जाएगी। या फिर इसी तरह पब्लिक को गुमराह किया जाता रहेगा। ये स्लोगन पढ़कर चोर सावधान हो जाता है। आये दिन चोरी होता है और C.C.T.V. चोर को पहचानने में विफल रहता है। दूसरी ओर इस तरह के स्लोगन लिखने का फायदा तो तब होता है, जब ये लिखा होता है कि हम C.C.T.V. के निगरानी में हैं। परन्तु सच तो ये है कि C.C.T.V. के निगरानी में सिर्फ आप है। सभी नहीं, इसीलिए हम शब्द का प्रयोग नहीं किया जाता है। परन्तु एक देश एक कानून तो तभी चरितार्थ होगा जब स्लोगन ये बनेगा कि हम C.C.T.V. के निगरानी में हैं। ●

कुख्यात अंतर्राज्यीय इंट्री माफिया चढ़ा पुलिस के हत्थे

अपराध करने वाला सिर्फ अपराधी है : कुमार आशिष

अभी कुछ ही दिन हुए किशनगंज मे क्या छोटे और क्या बड़े मामले, एक समान त्वरित एवं उचित कार्रवाई हो रही है। मै बात कर रहा हुँ किशनगंज के युवा पुलिस कप्तान कुमार आशिष की, जिन्होने अल्पावधि मे ही किशनगंज मे जबरदस्त चर्चा बटोर ली है। हालत यह है कि लम्बे समय से दोबारा वर्तमान मे ही न्याय की उम्मीद लगाये लोगों के जेहन मे तुरंत एक नाम सामने आ जाता है और वो नाम है कुमार आशिष। किशनगंज जिले मे अपराध का पैटर्न पुलिस की भूमिका और जनता पुलिस जुड़ाव पर अपराध नियत्रंण की योजना पुलिस कप्तान कुमार आशिष ने केवल सच के संवाददाता को साक्षा करते हुए कहा कि अपराध का पैटर्न बदल गया है।अब यहॉ जमीनों और इंट्री माफिया की जादुगरी हो रही है। इस पैटर्न की तरह यहॉ पुलिस के इंवेस्टिगेशन का तरीका नही बदला था लेकिन इस तरीका को बदलते हुए अब अपराधियों से आम लोगों में खौफ नही हो इसके लिए पुलिस पब्लिक के बीच अच्छे संबध बनाये गए है और आगे भी बनाने के लिए पुलिस-पब्लिक मिटिंग थाने स्तर पर जिले मे किया जा रहा है। जिसका परिणाम जिले के फरार अपराधियों पर नकेल करने की जिम्मेदारी से यदि कोई भी पुलिसकर्मी पीछे हटेगें तो सख्त कार्रवाई होगी। कई पुलिसकर्मी को निलबिंत भी किया गया है। इस संदर्भ में केवल सच पत्रिका के संवाददाता **धर्मेन्द्र सिंह** एवं **दीपनारायण सिंह दीपक** द्वारा एक किशनगंज के पुलिस कप्तान **कुमार आशिष** से खास मुलाकात मे कई बिन्दुओं पर प्रकाश डाले, प्रस्तुत है उसके प्रमुख अंश :-

★ किशनगंज मे पुलिसिंग पर क्या कहना चाहेगें?

पुलिसिंग का अर्थ बेसिक पुलिसिंग से है। कानून सबके लिए एक है। पुलिस को निष्पक्ष होना चाहिए। थाने को कैसे काम करना चाहिए, वो समझाने का कोशिश कर रहा हूँ। सभी थाने को बता दिया हूँ जो अपराध जिस नेचर का हो उसी धारा मे केस दर्ज हो। साथ ही जॉच मे दोषियों को कानून के शिकंजे मे लाए इसमे गड़बड़ी बर्दास्त नही होगी।

प्रश्न-आप जहा जाते है वहा केसो की संख्या थोड़ी बढ़ जाती है ?

एसपी-यह सच है, कि मै जहा जाता हुँ केसों की थोड़ी संख्या बढ़ जाती है क्योकि उचित धाराओं मे केस दर्ज होते है अपराध का न्यूमीकरण मुझे बर्दाशत नही है। जब केस दर्ज होने लगते है तो घटनाएँ कम हो जाती है। कुछ समय के बाद केस की संख्या भी कम हो जाती है।

★ अपराध का तरिका क्या बदला है, लेकिन पुलिस इन्वेस्टिगेशन का नही?

हॉ, लेकिन इसे बदलने की दरकार है। लोगों की समस्याओं का समाधान नही होगा, तो अपराध बढेगे ही। इसे सुलझाने की पहल करने की कोशिश चल रही है। साथ ही किशनगंज पुलिस सभी केसों मे, जॉच का प्रक्रिया मे बदलाव करते हुए अनुसंधान लगातार की जा रही है और अपराधियों को सलाखों के पीछे भेजकर उसपर माननीय न्यायालय से स्पीड्री ट्रायल आदि की पहल की जा रही है।

★ अपराध पर नकेल कसने के लिए क्या पहल की जा रही है?

हर थाने मे हफ्ते मे एक दिन लोकसंवाद कार्यक्रम (थाना दिवस) करवाया जा रहा है, जिसमे आम लोग वेखौफ आए और अपनी समस्या रखे, पुलिस उसका हल करेगी। जिससे लोगों का भय भी खत्म होगा और आमजनों एवं आम जनो से जुड़े संगठन जो समाज के हित मे अच्छे कार्य कर रहे है उनसे भी राय विचार लिया जा रहा है।

★ क्या कह सकते है कि पब्लिक का पुलिस से भरोसा उठा है?

इस भरोसे को बनाने के लिए लोक संवाद कार्यक्रम किए जा रहे है। पिंक पेट्रोलिंग, बुजुर्गो के लिए विशेष पुलिसिंग चाइल्ड फ्रेंडली आदि और वर्तमान समय मे पब्लिक का पुलिस पर भरोसा बढ़ा है। जिसके कारण लगातार पुलिस को क्षेत्र मे हो रहे अपराधी गतिविधियों की लगातार जानकारी मिल रही है। जिससे समय रहते नियत्रंण भी हो रहा है।

★ क्या बदमाशों का डाटा बेस तैयार हो रहा है?

पुरे जिले मे सभी थानों से जितने भी फरार अपराधी है उसकी सुची बनाने का निर्देश दिया गया है।और इसके पूर्व जो भी सुची तैयार की गई थी लगभग पिछले एक साल के दौरान ढाई सौ के लगभग आरोपी/एवं अपराधियों की गिरफ्तारी किया जा चुका है। मोस्टवांटेड अपराधियों को न्यायालय से सजा दिलाने मे पुलिस अपनी कर्तव्य र्निवाह कर रही है। जिसमे समय पर चार्जसीट/डायरी कोर्ट मे पेश किया जा रहा है।

★ बिहार के पुलिस के मुखिया, डीजीपी साहब का कहना था कि ओवरलोड वाहनों को पुलिस नही पकड़ेगी, इस पर किशनगंज पुलिस क्या कार्रवाई कर रही है?

ओवरलोड ट्रकों को डीजीपी सर के निर्देश के बाद किशनगंज पुलिस उनके निर्देशानुसार ओवरलोड गाड़ियों को जब्त करने मे अगर कोई परेशानी की सुचना मिलती है तो पुलिस परिवहन विभाग एवं माइनिंग को पुलिस बल उपलब्ध करा देती है। डीटीओं एवं मजिस्ट्रेट की उपस्थिति मे

अपराधिक इतिहास मुस्तफा का

☞ ग्वालपोखर थाना कांड सख्या-258/12 धारा-364/302/201/34 आइपीसी मे आरोप पत्र संख्या-482/13 दिनांक-15.12.2013

☞ ग्वालपोखर थाना कांड सख्या-63/18 दिनांक-12.02.2018 धारा-341/364/(ए)383/394/411/34 आइपीसी. मे आरोपित।

☞ किशनगंज थाना कांड संख्या-664/17 दिनांक-06.12.2017 धारा-341/323/324/307/379/384/386/34 आइपीसी.आरोप पत्र सख्या-560/18 समर्पित।

☞ किशनगंज थाना कांड संख्या-128/19 दिनांक-09.03.2012 धारा-384/386/500/501/120(बी)आइपीसी.।

☞ किशनगंज थाना कांड संख्या-130/19 दिनांक-10.03.2019 धारा-147/148/149/224/225/341/342/333/353/427/384/387/364/379/307/504/506/120(बी)भा.द.वि.।

☞ किशनगंज थाना कांड संख्या-309/19 धारा-384/386/379/34 भा.द. वि. इसके अलावे भी कई कांड है जिसकी खोजबीन पुलिस कर रही है।

गिरफ्तार किए गये अभियुक्त

☞ गुलाम मुस्तफ, पिता-स्व0 तमीजुद्दीन, सा0-बालुचुक्का, थाना व जिला किशनगंज।

☞ आरिफ खान उर्फ सानू, पे0-नसीम खान, सा0-ठाकुरगंज थाना-ठाकुरगंज जिला किशनगंज।

☞ जावेद, पे0-आजू, सा0-टेउसा, थाना व जिला किशनगंज।

पुलिस कप्तान कुमार आशिष ने बताया कि कुख्यात इंट्री माफिया से तालुक रखने वाले की पहचान एवं जॉच की जा रही है।बहुत जल्द ही अनुसंधान के द्वारा इनके साथ अवैध धंधा चलाने वाले/संबध रखने वाले जो भी लोग है उसके गिरेवान तक पुलिस की हाथ होगी। पुलिस कप्तान कुमार आशिष ने स्पष्ट शब्दों मे बताया कि पुलिस थानों मे व्याप्त कुव्यवस्था को दुर करना उनका लक्ष्य है। आदरणीय डीजीपी सर से मिले दिशा-निदेशों के आलोक मे सभी थानाध्यक्ष, दारोगा, पुलिसकर्मियों के कार्यो के विस्तृत समीक्षा की जा रही है। दोषी, दागी, एवं अक्षम पुलिसकर्मियों को थाना-डयूटी नही मिलेगी। ये बाते अपराध समीक्षा कर बीते माह (जून) का फलाफल पेश करने के दौरान कही। पुलिस कप्तान कुमार आशिष के अध्यक्षता मे माह जून का अपराध समीक्षा गोष्ठी किया गया। जिसमे कुल गिरफ्तारी-202 जिसमे हत्या के दो एवं विभिन्न कांडों मे 149 एवं 51 वारंटी को गिरफ्तार किया गया है। माह मे 247 कांडों का निष्पादन किया गया है। अगले माह मे प्रतिवेदित कांडों की तुलना मे डेढ़ गुणा निष्पादन करने का लक्ष्य किया गया है।

सर्जिकल स्ट्राइक से पकड़ में आया इंट्री माफिया मुश्तफा

■ सहत न्यूज ब्यूरो
किशनगंज।

किशनगंज पुलिस की सर्जिकल स्ट्राइक से पकड़ में आया बिहार बंगाल सीमा का इंट्री माफिया और आतंक का पर्याय बन चुका टीयाग्वे नेता गुलाम मुस्तफा।

गुरूवार की देर शाम पुलिस अधीक्षक कुमार आशीष के निर्देश पर गठित किशनगंज पुलिस की टीम ने बिहार -बंगाल बॉर्डर के इंट्री माफिया और बंगाल टीयाग्वे के नेता गुलाम मुस्तफा और उसके दो साथियों को उसके घर बालुचुक्का से गिरफ्तार किया है।

बिहार-बंगाल बॉर्डर में आतंक का पर्याय बन चूका है मुश्तफा

पुलिस अधीक्षक के निर्देश पर गठित टीम ने किया गिरफ्तार

गिरफ्तार लोगो में गुलाम मुस्तफा के आलावे ठाकुरगंज निवासी आरिफ खान उर्फ सानू और टेउसा निवासी जावेद को गिरफ्तार किया है। गुलाम मुस्तफा का आपराधिक इतिहास रहा है और उसके खिलाफ किशनगंज थाना और बंगाल के न्यायलेखा थाना अंतर्गत कई असामाजिक मामला दर्ज है जिसमे पुलिस पर्टी पर हमला करने, हत्या, हत्यो से अधिक संगीन, पशु तस्करी सहित अन्य दर्जन मामले दर्ज है। जिनी जानकारी के अनुसार किशनगंज थाना मे कांड संख्या 664/17, 128/19, 130/19, 309/19 दर्ज है।

वही बंगाल के न्यायलेखा थाना अंतर्गत सेटल राहदारका के मालिक मुकेश सिह हत्याकांड मामला 258/12 और एक अन्य मामला 63/18 दर्ज है। किशनगंज पुलिस

गिरफ्तार इंट्री माफिया की न्यायालय ले जाते पुलिसकर्मी।

गिरफ्तार इंट्री माफिया मुश्ताफा।

पिछले तीन महीने से गुलाम मुस्तफा की गिरफ्तारी के लिए उसके विभिन्न ठिकानों पर छापेमारी कर रही थी। देर रात किशनगंज पुलिस ने टीयाग्वे नेता गुलाम मुस्तफा को उसके घर पर जाल बिछाकर गुप्त सुचना के आधार पर छापेमारी कर गिरफ्तार कर लिया। किशनगंज पुलिस कप्तान कुमार आशीष ने बताया कि एंट्री माफियाओं पर किशनगंज पुलिस के द्वारा समय समय पर कार्रवाई किया जा रहा था जिसमे गुलाम मुस्तफा एंट्री के काले धंधे का मुख्य सरगना था जिसे आज छापेमारी के दौरान उसके कुछ साथियो के साथ गिरफ्तार कर लिया है। एसपी कुमार आशीष ने बताया कि गुलाम मुस्तफा के खिलाफ किशनगंज थाना में भी पूर्व के कई आपराधिक मामले दर्ज थे और पिछले तीन साल से तीन अलग अलग मामले दर्ज हुए थे। मुखे की माने तो किशनगंज पुलिस गुलाम मुस्तफा पर दर्ज आपराधिक मुकदमे को विभिन्न रूप से खंगाल रही है। किशनगंज पुलिस कप्तान कुमार आशीष ने बताया कि मुस्तफा पर दर्ज मामले मे पुलिस उसे रिमांड में लेगी, साथ ही संपत्ती ट्राजन मामला जल्द से जल्द सजा दिलवाया जाएगा। उन्होंने बताया कि पीएमएलए एक्ट के तहत मुस्तफा के द्वारा गैरकानूनी तरीके से कमाये गये धन और संपत्ती को जब्ती के लिए भी पुलिस कार्रवाई कर रही है। छापेमारी टीम में एसडीपीओ डॉ अखिलेश कुमार, इंस्पेक्टर हरशद आलम, थानाध्यक्ष मनीष कुमार, पु.अ.नि नीरज कुमार सिंगल, पु.अ.नि शहनवाज खान, स.अ.नि रामदुलार प्रसाद, स.अ.नि रंजन शर्मा, तकनीकी सेल के सिपाही अभिरंजन रमन, सिपाही सुमित कुमार सहित पुलिस बल के जवान मौजूद थे।

किशनगंज जिला

आखिरकार गिरफ्त में आ ही गया मुस्तफा

प्रतिनिधि ▶ किशनगंज

इंट्री माफिया मागला गुलाम मुस्तफा को गिरफ्तार कर थाने में पूछताछ शामिल की है. सूत्रधार लगभग आठ से नौ घंटे की इस कार्रवाई में मुस्तफा के साथ पुलिस उसके दो पुर्गे को भी गिरफ्तार किया गया है जिसमें आरिफ खान उर्फ सानू पिता व पीर खान साकिन ठाकुरगंज एवं जावेद पिता आजु साकिन टेउसा शामिल है. मुस्तफा की गिरफ्तारी के संबंध में पुलिस अधीक्षक कुमार आशीष ने बताया कि पारिवेलेंस पेक पोस्ट के सामने मुस्तफा के द्वारा अपने पुर्गे के साथ ट्रकों में अवैध वस्तुओं की सुपत्ता किसी सूचना मिली तो पुलिस मौके पर पहुचे तो वहा से फरार होकर बिहार बंगाल की सीमा के करीब बंगाल सिथत अपने व्यवसाय से जिस तरह पुलिस उसका पीछा करते हुए वहा पहुचे वहा मौजूद उसके अन्य साथियों ने पुलिस पर आपराधिक काम का प्रयोग कर छापेमारी में बाधा डालने का प्रयास किया. जबकि पुलिस ने मुस्तफा एवं उसके दो अन्य पुर्गे को किशनगंज पुलिस ने 21 जुलाई 19 को दर्ज किये गये थाना कांड संख्या 336/19 में धारा 147, 148, 149, 341, 323, 332, 333, 335, 337, 338, 307 भादवि के तहत अभियावर्ग करते हुए न्यायिक हिरासत में जेल भेजने के लिए

फोटो 19, इंट्री माफिया मुस्तफा को गिरफ्तार कर ले जाते पुलिस

मुस्तफा का है लंबा आपराधिक इतिहास, वर्चित मुकेश हत्याकांड में भी आरोपित

किशनगंज. इंट्री माफिया मुस्तफा का लंबा आपराधिक इतिहास है पश्चिम बंगाल सिथत ग्वालपोखर थाना कांड संख्या 258/12 के तहत उस पर मुकेश सिंह नामक एक युवक की हत्या का आरोप है.

प्राप्त जानकारी के अनुसार सेटल राज शंकर के मालिक अभिन सिंह के छोटे भाई मुकेश सिंह सहित नगर सेवानवास जैस के सचिव सिवा मानसी

सुत्रधार को मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी

होटल लौज पर लेकर चला गया था मुकेश सिंह कई ट्रक का मालिक भी था मुकेश सिंह के ट्रक से लगातार तेल की चोरी मुस्तफा और मुकेश सिंह के बीच इस पर मुकेश सिंह का लिम्मा बंगाल सीआईडी की चौकी गया था बगाल सी.आई.डी ने 15 दिसबर 2013 को आरोप पत्र संख्या 482/13 के तहत धारा 364, 302, 201, 34 भादवि के तहत आरोप पत्र दाखिल किया जिसके बाद बंगाल पुलिस ने मुस्तफा को गिरफ्तार किया. लेकिन कुछ दिन बाद ही मुस्तफा जमानत पर रिहा हो गया इस बात के बाद मुस्तफा का मनोबल बढ़ता गया और उसने इंट्री के धंधे में किशनगंज जिले में अपना वर्चस्व कैसे लिया उसके

के न्यायालय में प्रस्तुत किया. मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी ने मुस्तफा एवं अन्य से मामले को लेकर पेश किया.

स्पीडी ट्रायल चला कर दिलायेंगे सजा : एसपी

पुलिस अधीक्षक कुमार आशीष ने कहा कि डीजीपी के निर्देश पर मुस्तफा की गिरफ्तारी के लिए छापेमारी की गयी. जिसमें मुस्तफा के साथ उसके दो सहयोगियों को गिरफ्तार किया गया है.मुस्तफा के विरुद्ध पुलिस पहले ही हत्या सहित बिहार और बंगाल में डाई मामले दर्ज है.उसके विरुद्ध स्पीडी ट्रायल चलाया जाए ताकि दोषी जल्दी सजा पा सके.अवैध तरीके से अर्जित संपत्ति की जांच हेतु ईओयूसा का प्रस्ताव समर्पित किया जायेगा.

ही वाहन चेकिंग की जाती है।

☆ कहा जाता है कि किशनगंज जिले मे ओवरलोड ट्रकों के चलवाने मे इंट्री माफिया का राज चलता है क्या उसपर नकेल कसने का कोई तैयारी आपके पास है?

समय आने दिजिये पता चल जायेगा। आपको बताते चलें कि सड़क समय से पहले टुटने से सरकार की और विभाग की बदनामी हो रही है। साथ ही डीजीपी साहब का आदेश के तहत अवैध धंधा/गोरखधंधा करने वाले कई जिले के आंतक को माने जाने वाले इंट्री माफिया का गिरफ्तारी के बाद खलबली मच गई है। आपके जानकारी मे होगा कि कुछ दिन पूर्व बिहार/बंगाल का मोस्टवांटेड गुलाम मुस्तफा ने पुलिस टीम पर हमला कर दिया था। जिसको पकड़ने के लिए बिहार/बंगाल की पुलिस ऐड़ी चोटी एक किए हुए था। जिसको वैज्ञानिक तरिके से मोस्टवांटेड गुलाम मुस्तफा को किशनगंज पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। उस पर एनएच-31 पर ट्रक चालकों से अवैध वसूली के साथ-साथ कई मामला भी दर्ज है। विशेष सूत्रों से मिली जानकारी से आपको मालूम हो कि बिहार बंगाल के मोस्टवांटेड माफिया और टीएमसी नेता गुलाम मुस्तफा को किशनगंज पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस ने बिहार सीमा से सटे बंगाल के बालुचुका स्थित टीएमसी कार्यालय से गिरफ्तार किया है। पुलिस ने इंट्री माफिया गुलाम मुस्तफा के साथ उनके दो साथियों को भी हिरासत मे लिया है। मुस्तफा पर कई मामले दर्ज है। इसमे पुलिस को बंधक बनाकर पिटाई करने का भी मामला शामिल है। किशनगंज पुलिस कप्तान कुमार आशिष ने बताया कि जिले मे लगातार इंट्री माफियाओं के हरक्कत का पता चल रहा था। जिसको लेकर समय-समय पर कार्रवाई की जाती रही थी। इसमे एक मुख्य सरगना गुलाम मुस्तफा का नाम आया था। इसके अन्य सहयोगी की पहचान की गई थी। अवैध इंट्री के मामले मे किशनगंज पुलिस ने कार्रवाई करते हुए एफआइआर दर्ज की गई थी। वही छापेमारी करते हुए पुलिस ने मुस्तफा को उसके टीएमसी कार्यालय से गिरफ्तार किया है। इसपर पूर्व से कईयों मामले दर्ज है। जिसमे पुलिस को इसकी तलाश थी। साथ ही पुलिस इसके अपराधिक इतिहास को खंगाल रही है। गौरतलब है कि इंट्री माफिया मुस्तफा डेढ़ दशक पहले बिहार/बंगाल सीमा पर पान का गुमटी चलाता था। और दुसरे के लाइन होटलों मे काम किया करता था। इसी दौरान मुस्तफा ने अपराध की दुनिया मे पांव जमाया। उसने मुकेश सिंह नामक व्यक्ति (होटल संचालक) की हत्या कर उसके संपर्ति पर कब्जा जमा लिया था। एनएच-31 पर आने जाने वाले ट्रकों से अवैध वसूली करना शुरू कर दी। जिसके बाद पुलिस ने कार्रवाई करते हुए गिरफ्तार कर लिया। आपको बताते चलें कि बिहार के पुलिस महानिदेशक पटना के निर्देश के आलोक मे पुलिस कप्तान कुमार आशिष के नेतृव्य मे दिनांक-11.07.2019 को कुख्यात अपराध कर्मी एवं इंट्री का बेताज बादशाह, गुलाम मुस्तफा के गिरफ्तारी हेतु किशनगंज के फरिंगगोला स्थित मद्य-निषेध चेक पोस्ट के पास छापेमारी की गई। वहा वह अपने गुर्गे के साथ ट्रकों से अवैध वसूली कर रहा था। पुलिस को देखते ही वह भागने लगा। अपने कुछ साथियों के साथ बिहार/बंगाल की सीमा पर अवस्थित अपने कार्यालय मे छिप गया। जब वहां पुलिस ने छापेमारी की गयी तो गुलाम मुस्तफा एवं उसके साथियों द्वारा पुलिस दल पर अपराधिक बल का प्रयोग कर सरकारी कार्य मे बाधा उत्पन्न करने लगा। वहा पर उसे उसके दो साथियों के साथ गिरफ्तार कर लिया गया। शेष उसके साथी भागने मे सफल रहे। आपको मालूम हो की पुलिस पार्टी पर हमला करने, ट्रकों से अवैध वसूली, पशु तस्करी, सहित बिहार/बंगाल मे एक दर्जन मामले दर्ज है। साथ ही ये राज दरबार के मालिक मुकेश सिंह के हत्या मे मुख्य अभियुक्त है। पुलिस कप्तान कुमार आशिष ने बताया कि स्पीडी ट्रायल चलवाकर जल्द सजा दिलवाया जायेगा। एवं अवैध तरीके से अर्जित सम्पति की जब्ती हेतु पी0एम0एल0ए0 का प्रस्ताव समर्पित भी किया जायेगा। पुलिस कप्तान कुमार आशिष ने बताया कि गिरफ्तार इंट्री माफिया कुख्यात अपराधी गुलाम मुस्तफा जो अंन्तरराज्यी अपराध की सरगनाओं का बादशह बना हुआ था। और जब-जब पुलिस इसकी छापेमारी की तैयारी करती थी, ये सीमा का फायदा उठाते हुए बंगाल के सीमा मे घुसकर किशनगंज जिले समेत कई जिले के अपराधियों से फोन पर वर्ताकर अवैध धंधा मे शमिल था। इसके गिरफ्तारी के लिए कई स्पाई, एवं गुप्तचरों एवं टावर लोकेशन के सहारा से उक्त कुख्यात की गिरफ्तारी मे शमिल किशनगंज पुलिस के सभी पुलिस अधिकारियों एवं जवानों को पुरस्कृत करने के लिए वरीय पदाधिकारियों को लिखा जायेगा। आज इसके गिरफ्तारी के बाद जिले मे आमलोगों ने राहत की सांस ली है। पुलिस टीम मे शामिल पदाधिकारी मे एसडीपीओ डॉ. अखिलेश कुमार, पुलिस निरीक्षक इरसाद आलम, सदर अंचल किशनगंज, पुनि सह थानाध्यक्ष किशनगंज मनीष कुमार, पुअनि नीरज कुमार निराला किशनगंज थाना, पुअनि शहनवाज खान किशनगंज थाना, सअनि राम दुलार प्रसाद (कांड संख्या-309/19 आईओ) किशनगंज थाना, स0अ0नि0 रंजन शर्मा किशनगंज थाना, सि/274 अमरेश रमण तकनिकी सेल (पुलिस कप्तान कार्यालय), सि0/258 सुमित कुमार तकनिकी सेल (पुलिस कप्तान कार्यालय) किशनगंज, एवं बीएमपी, डीएपी तथा पेंथर मोबाइल के पुलिसकर्मी शामिल थे। ●

BSNL Connecting India

भारत संचार निगम लिमिटेड

BSNL Connecting India

दूरसंचार जिला, किशनगंज

क्या आप 35 के रिचार्ज से परेशान हैं!
आप BSNL की सेवाएं लें।
सिर्फ 74 रूपये के रिचार्ज पर पाये 6 महीने की वैद्यता।
100 Min. Call any Network + 2GB Data 15 दिन के लिए।

UNLIMITED CALL & DATA PLAN

MRP	CALL	DATA	VALIDITY (IN DAYS)
151	UNLIMITED	3.21GB/DAY	24
187	UNLIMITED	3.21GB/DAY	28
399	UNLIMITED	3.21GB/DAY	74
429	UNLIMITED	3.21GB/DAY	81
485	UNLIMITED	3.71GB/DAY	90
666	UNLIMITED	3.71GB/DAY	134
1699	UNLIMITED	4.21GB/DAY	365

-: निवेदक :-
दूरसंचार जिला अभियंता
BSNL किशनगंज

बस की सुविधा तो बढ़ी लेकिन सुरक्षा आज भी फिसड्डी

कहने को तो बिहार में सुशासन का राज हैं। सुशासन कायम है और सुशासन बाबू बिहार के मुखिया बनकर राज्य में सरकार चला रहें हैं। बिहार में बस में सफर करने वाले यात्रियों को कितनी सुविधाएं मुहैया कराई जाती हैं और इसके एवज में यात्रियों से कितनी राशि वसूली जाती है। यह किसी से छिपी नहीं रह गई है। बस मालिकों की मनमाने रवैये और परिवहन विभाग की खामोशी रोजाना लाखों लोगों के जीवन से खेल रहीं है। बिहार के सभी जिलों से राजधानी पटना पहुँचने वाले बसों की ही मात्र जाँच करें तो सब साफ हो जाएगा कि बिहार में कैसा सुशासन कायम हैं। सुशासन की सरकार में इनके ही अधिकारी कैसे चुप्पी साध रखी है जो नियम और कानून व्यवस्था को भी ताक पर रखकर सिर्फ कागजी कोरम पूरा करने में लगे है। पत्रिका ब्यूरो चीफ **सुमित राज यादव** की एक खास रिपोर्ट :-

हालात इतने सालों में नहीं बदले सुशासन बाबू! तो अब आप कैसे कह सकते है कि बदल जाएंगे? बिहार का अंतिम सीमा क्षेत्र स्वामी विवेकानंद बस पड़ाव, से रोजाना कई दर्जनों बसें खुलती है। जिसमें जिला मुख्यालय और राज्य मुख्यालय तक जाती है। ठाकुरगंज, गलगलिया बस पड़ाव पश्चिम बंगाल की सीमा और नेपाल की सीमा को छूने वाली किशनगंज जिला में है। ठाकुरगंज से बिहार की राजधानी पटना मुख्यालय से लेकर कई अन्य जिलों के लिए भी बस से यहां से खुलती है। लेकिन, बसों में सुरक्षा भगवान भरोसे ही हैं। अगर, आप बस में सफर कर रहे है और सही सलामत घर लौट आए तो भगवान भी शुक्रिया अदा कर सकते हैं। हालांकि, समय-समय पर परिवहन विभाग द्वारा सुरक्षा को लेकर निर्देश जारी किए जाते हैं। पर उसके अनुपालन के प्रति न तो विभाग सचेत है। और न हीं बस मालिक। रोजाना बसों में हो रहे घटनाओं को लेकर सुरक्षा पर सवाल तो खड़ा हुआ है। लेकिन, इसका प्रतिफल सामने निकलकर नही आया है। जब से लंबी दूरी के लिए वातानुकूलित बसों का चलना शुरू हुआ है। तब से हादसों की गुंजाइश और सफर करने वाले यात्री कितने सुरक्षित हैं। इसकी अनदेखी की जा रही है। सुरक्षा के मापदंड पर कितने बस कसौटी पर खरे उतर रहे हैं। इसकी भी जाँच मात्र औपचारिकता व कोरम बनकर रह गई है। किशनगंज जिला मुख्यालय के अलावे बसें पड़ोसी राज्य पश्चिम बंगाल इस्लामपुर, सिलीगुड़ी, बागडोगरा, बिहार के अररिया, पटना, मुजफ्फरपुर, पूर्णिया, भागलपुर आदि कई जगह बड़ी बसें लंबी दूरी की यात्रा करते है। लेकिन, बसों में क्या सुरक्षा के व्यवस्था हैं यह बसों में चढ़ने वाले यात्री भी देखते हैं।

एस.पी. किशनगंज

☞ **बसों में फायर सेफ्टी के नाम पर होती है खानापूर्ति :-** इलाके में रेल सुविधा कम होने के कारण रोजाना हजारों की संख्या यात्रियों को बस का सहारा लेना पड़ता है। बस में सफर करने को मजबूर यात्री को उचित किराया चुकाने के बावजूद भी बस में खड़े होकर जाना पड़ता है। जबकि, महिलाओं के लिए कोई अतिरिक्त व्यवस्था बसों में नहीं रहती है। बसों के किराये भी मनमाने तरीके से वसूले जा रहें है। लेकिन, इसपर कोई जांच नहीं होता है। बड़ी बसों में ए.सी. लगी रहती है। जबकि, यात्रियों को उसके बारे में कुछ नहीं मालूम होता है। सफर के दौरान ना तो यात्रियों को कोई ऐसी हिदायत दी जाती है। जिससे किसी का उस तरफ ध्यान भी जाए। बस मालिकों का और एजेंटों का केवल भाड़ा लेने में दिलचस्पी होती है। और भाड़ा बढ़ाने में होती है। उन्हें पब्लिक की जान से कोई फर्क नहीं पड़ता है। बसों में चढ़ने उतरने क्रम में यात्रियों को अगर चोट लग जाए। तो इससे भी बस चालकों का कोई लेना देना नहीं होता है।

☞ **क्या है सुरक्षा के मापदंड :-** परिवहन विभाग की मानें तो सभी बसों में सुरक्षा के एक तय मानक बनाए गए हैं। जिसका अनुपालन सभी को करना अनिवार्य होता है। उसकी समय-समय पर जांच भी की जाती है। सभी वाहनों में फायर सेफ्टी उपकरण रखने का प्रावधान पूर्व से ही है लेकिन देखा गया है कि अधिकांश बसों में आग से सुरक्षा के नाम पर सिर्फ उपकरण टांग दिए गए हैं। इसके लिए बस चालक और कर्मियों को ना तो प्रशिक्षित किया गया है और ना ही उसके प्रति कोई जवाबदेही दी गई है। वैसे भी लंबी दूरी की बसों को छोड़ दिया जाए तो लोकल किसी भी

डी.एम. किशनगंज

तरह के वाहनों में फायर सेफ्टी की कोई उपकरण नजर नहीं आएंगे। अधिकांश बसों में एक चालक और खलासी होता है। खलासी पूरी तरह कम उम्र का और अशिक्षित होते हैं। उसकी जवाबदेही यात्रियों के सामान को उचित स्थान पर रखना रहता है। ऐसे में अगर सेफ्टी उपकरण मौजूद भी हो तो आपातकाल में उसे उपयोग कौन करेगा। नियमानुसार बसों की क्षमता के अनुसार एक या एक से अधिक फायर इंस्टिग्यूशर का प्रावधान है। पहले की यात्री बसों में आपातकालीन द्वार की व्यवस्था होती थी। लोकल बसों में भी आसानी से दिख जाती थी लेकिन जब से वातानुकूलित बसों का चलन बढ़ा है तब से इसकी गुंजाइश पूरी तरह खत्म हो गई है। ऐसी बसों में खासकर खिड़कियां मोटे शीशों से फिक्स्ड होती है। और गेट भी एक ही होता है। संकट की घड़ी में यात्रियों के लिए या किसी मुसीबत से कम नहीं है। जिसका ताजा उदाहरण पूर्णिया में हुए बस हादसा से लिया जा सकता है। आग लगने पर बसों का गेट ऑटोमेटिक लॉक हो जाता है। जिससे यात्री परेशान हो जाते हैं।

☞ **जिला के अधिकारियों के आँखों के सामने से गुजरते है रोजाना बसें :-** बसों के पीछे जिला प्रसासन में जिला पदाधिकारी, पुलिस अधीक्षक, बस मालिक का नंबर अंकित किया जाता हैं। लेकिन, न तो कोई यात्रा कर रहे यात्रियों द्वारा किसी तरह की शिकायत दर्ज कराई जाती है। न ही मनमाने तरीके से वसूली की जा रहीं राशि और सुरक्षा व्यवस्था में लापरवाही बरतने की शिकायत की जाती है। क्षमताओं से अधिक बसों में यात्रियों को भरने के बाद माल का लोडिंग करना भी बसों के चालकों और मालिकों के कमाई से जुड़ा रहने के कारण यात्रियों की सुरक्षा की जिम्मेदारी को भी दरकिनार कर दिया जाता हैं। ऐसे में परिवहन विभाग के अधिकारियों की चुप्पी क्यों नहीं टूट रही है ये तो वही बेहतर जाने। लेकिन, जिले में रोजाना सैकड़ो यात्रियों के जीवन के साथ, उनके जीवन का दांव खेला जा रहा है। बच्चों की जान सलामत और सुरक्षा के दृष्टिकोण से एक तरफ सरकार के नए-नए कानून और नियम गैर सरकारी स्कूलों के बसों पर लागू किए जा रहें है। स्कूलों में इसका अम्ल भी हो रहा हैं। तरह-तरह के जीपीएस, और कैमरे लगाए जा रहें हैं। वहीं, आम यात्रियों के बसों में कोई कानून नियम लागू नहीं होता हैं। क्या आम आदमी की जान और सुरक्षा की कोई कीमत नहीं रह गई हैं? परिवहन विभागों में मची हलचल बीते दिनों पूर्णिया में बस आगलगी कांड में दर्जनों लोगों के मौत की खबर के बाद सभी बसों में लगे आग बुझाने वाले उपकरणों की जांच की जाएगी। जांच में अगर ये कारगर नहीं होंगे तो बसों के परिचालन पर ही रोक लगा दी जाएगी। कहा जा रहा हैं कि परिवहन सचिव संजय कुमार अग्रवाल ने सभी डीटीओ और एमवीआई को निर्देश दिया है। बसों के परिचालन की इजाजत तब तक नहीं दी जाए जब तक कि आग से बचाव को लेकर समुचित प्रबंध नहीं हो। परिवहन सचिव ने कहा है कि यात्रियों की सुरक्षा के लिए सभी बसों में अग्निशामक यंत्र का होना अनिवार्य है। इसके नहीं होने पर बस में आग लगने की स्थिति में तत्काल उसपर पर काबू नहीं पाया जा सकता। परिवहन सचिव ने सभी जिला परिवहन पदाधिकारियों को कहा है कि अपने-अपने जिलों में चल रही बसों की जांच करें। अग्निशामक यंत्र हैं तो वह कारगर हैं या नहीं, यह देखें। कारगर नहीं हैं तो वैसे बसों के परिचालन पर रोक लगाएं। आग से बचाव के पुख्ता इंतजाम होने के बाद ही परिचालन की इजाजत दी जाए। परिवहन सचिव ने कहा कि आग से बचाव के लिए बस के कंडक्टर और चालक को प्रशिक्षण दिया जाएगा। नियम के तहत बसों की क्षमता के अनुसार एक या एक से अधिक अग्निशामक यंत्र होने चाहिए। एक ड्राइवर की सीट के पास होना जरूरी है। अब कथनी और करनी में तो अंतर है ही लेकिन, कितना अंतर हैं यह तो हम भी देख रहे हैं, अधिकारी भी देख रहे हैं, आप भी देख रहे है और देख रही है बिहार की जनता। आखिर, कबतक होता रहेगा सुशासन बाबू! सुशासन के नाम पर मौत का तांडव? ●

समान काम समान वेतन की मांगो के समर्थन में शिक्षकों का धरना प्रदर्शन

● **अब्दुल कय्यूम**

बिहार राज्य शिक्षक संघर्ष समन्वय समिति के तत्वाधान में 03 अगस्त को जिले के सभी प्रखंडों में नियोजित शिक्षकों ने समान काम समान वेतन सहित अन्य मांगों के समर्थन में धरना दिया। साथ ही साथ एक ज्ञापन भी बीडीओ व अन्य पदाधिकारीयो को सौपा। इसी क्रम में शनिवार को पलासी प्रखंड मुख्यालय स्थित बीआरसी परिसर में समान काम के बदले समान वेतन,स्नातक ग्रेड में प्रोन्नती,पुरानी पेंशन योजना लागू हो, ससमय वेतन भुगतान, सहित सात सूत्री मांगों के समर्थन में नियोजित शिक्षकों का एक दिवसीय धरना प्रदर्शन कार्यक्रम आयोजित की गई। धरना प्रदर्शन में प्रखंड के विभिन्न विद्यालयों के सैकड़ो शिक्षकों ने भाग लिया।

धरना प्रदर्शन का नेतृत्व संघ के अध्यक्ष गुलाम अरबी ने की। धरना कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप मे जिला संघर्स समन्वय समिति के जिलाध्यक्ष जफर रहमानी मोजूद थे। धरना प्रदर्शन को संबोधित करते हुए जफर रहमानी ने कहा कि सरकार नियोजित शिक्षकों के साथ भेदभाव की नीति अपना रही है। सरकार सभी नियोजित शिक्षकों को छलने का काम कर रही हैं। लेकिन हम लोगो को अपना संघर्ष जारी रखना होगा। बिहार सरकार संविधान विरोधी है। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए गुलाम अरबी, अख्तर आलम, संजय मांझी, मसी उद्दीन साजी ने समान काम समान वेतन की लड़ाई को उग्र रूप से जारी रखना है। कार्यक्रम के दौरान जिलाध्यक्ष जफर रहमानी ने बताया कि 18 अगस्त को जिला तथा 05 सितंबर को पटना में धरना प्रदर्शन कार्यक्रम होगी। इस के नियोजित शिक्षकों ने बीडीओ अविनाश झा को मांगो के समर्थन मे सात सूत्री ज्ञापन सौपा। इस अवसर पर शिक्षक संघ के सचिव संजय मांझी,अख्तिकुर रहमान, दीन रेजा अहमद, निशांत कुमार, विकास कुमार, अख्तर आलम,मेहबूब आलम, अहसान अली, परवेज आलम,मोहम्मद हातिम, मारूफ आलम, दिलीप कुमार, मसरूर आलम, मिसबहुल इस्लाम, रंजीत ठाकुर, अशोक चौधरी,कृष्णा सरदार आदि मौजूद थे। ●

भीषण बाढ़ से हताहत अररिया

● अब्दुल कय्यूम

जिला प्रभारी सचिव के0के0 पाठक की अध्यक्षता में शनिवार 03 अगस्त को समाहरणालय परिसर स्थित आत्मन हॉल में बाढ़, आपदा से संबंधित समीक्षात्मक बैठक का आयोजन किया गया। सर्व प्रथम जिला पदाधिकारी बैद्यनाथ यादव द्वारा जुलाई 2019 में आयी बाढ़ के कारणों से जिला प्रभारी सचिव को अवगत कराया गया। बैठक मे जिला पदाधिकारी द्वारा बताया गया कि परमान, बकरा, रतवा, नूना, पश्चिम कनकई, सूरसा नदी जो की वर्षाती नदी है, नेपाल में खासकर विराटनगर क्षेत्रों में अधिक बारिस होने के कारण नदीयो के जल स्तर बढ़ने से बाढ़ की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। बाढ़ के दौरान बाढ़ पीड़ितों के लिए जिला प्रशासन द्वारा विस्थापित परविारों को तत्काल शिविर के माध्यम से हर संभव सहायता प्रदान की गई। जिला प्रभारी सचिव को बाढ़ से पूर्ण प्रभावित पंचायत की सूची, बाढ़ से आंशिक रूप से प्रभावित पंचायत की सूची, जिले में उपलब्ध मोटर बोट एवं नाव उपलब्धता से संबंधित, पॉलिथिन सीट वितरण से संबंधित , सुखा राशन वितरण से संबंधित पथ प्रमंडल अररिया द्वारा बाढ़ में क्षतिग्रसत सड़कों का मरम्मति से संबंधित जानकारी से अवगत कराया गया। इस पर जिला प्रभारी सचिव द्वारा चार दिनों के अंदर खासकर क्षतिग्रस्त ग्रामीण सड़कों की मरम्मति कराये जाने का निर्देश दिया, ताकि आवागमन सूचारू रूप से चालू रहे। बैठक में बताया गया कि इस वर्ष आये बाढ़ से 12 लाख 28 हजार 456 लोग प्रभावित हुए हैं।अबतक दस लाख चार

सहायक डीएम ने लिया बाढ़ प्रभावित क्षेत्र का जायजा

अररिया जिला में आई बाढ़ के मद्देनजर सहायक डीएम अमृता बैंस ने 29 जुलाई को पलासी प्रखंड पहुँच कर बाढ़ प्रभावित पीपरा बिजवार के कोठी घाट का जायजा लिया। इस क्रम में उन्होंने बाढ़ से क्षतिग्रस्त बेलगछी, व चिरयारी रोड के मरम्मती कार्य का भी निरीक्षण किया। इस क्रम में उन्होंने साथ में उपस्थित अधिकारियों को क्षतिग्रस्त सड़को को शीघ्र मरम्मत करने का निर्देश दिए। इस के बाद उन्होंने नाव के सहारे बकरा नदी पार कर पीपरा बिजवार वार्ड नं.4 व 14 पहुँच कर बाढ़ प्रभावित परिवारों से पूछताछ भी की। इस दौरान सहायक डीएम अमृता बेंस ने बाढ़ पीड़ित लोगों से सर्वेकर्ताओ के बारे मे। जानकारी ली। इस दौरान बाढ़ पीड़ित परिवारों ने अपना अपना दर्द को सहायक डीएम को सुनाए। इस क्रम में उन्होंने प्रवेक्षीय पदाधिकारी अशोक पासवान से पीड़ित परिवारों के सूची संबंधित आवश्यक पूछताछ भी की। इस के बाद उन्होंने बकैनिया जाने वाली सड़क तथा पलासी से मदनपुर जाने वाली सड़क पर चिरयारी के पास क्षतिग्रस्त पुलिया के मरम्मती कार्य का जायजा लिए। इस के बाद अधिकारियों को कई आवशयक दिशा निर्देश दिए। इस से पूर्व सहायक डीएम अमृता बेंस ने बीडीओ चौम्बर मैं वरीय उप समाहर्ता व प्रखंड प्रभारी संजय कुमार व बीडीओ अविनाश झा से बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों की जानकारी ली। इस अवसर पर सीओ विजय कुमार गुप्ता,प्रमुख प्रतिनिधि रंजीत यादव, कार्यपालक अभियंता कामेश्वर सिंह, फौजदार सिंह,मुखिया प्रतिनिधि बलराम यादव, पर्यवक्षिय पदाधिकारी अशोक पासवान व पुलिसबल मोजूद थे।

डीएम ने की मुखियों के साथ सभा बैठक

अररिया जिला में आई बाढ़ को लेकर डीएम वैधनाथ यादव व एसडीओ रोजी कुमारी ने को पलासी प्रखंड पहुँच कर बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों का दौरा किया। इस क्रम में उनलोगों ने पीपरा बिजवार के क्षतिग्रस्त मुख्य प्रधानमंत्री सड़क, मोदीयेन धार का भी जायजा लिए। इस क्रम डीएम श्री यादव ने बाढ़ पीड़ितों से पूछताछ भी की। इस क्रम में बाढ़ पीड़ितों से क्षति हुई फसलों की जानकारी ली। इस दौरान पीपरा बिजवार पंचायत के मुखिया प्रतिनिधि बलराम यादव ने बकरा नदी मैं तट बंध बनाने की मांग की। इस के बाद डीएम प्रखंड मुख्यालय पहुँच कर सभा भवन में मुखियों के साथ आवश्यक बैठक की। इस क्रम में डीएम वैद्यनाथ यादव ने मुखियों को भावना में नही बहने की अपील की। उन्होंने बाढ़ प्रभावित के योग्य लाभार्थियो को ही आपदा के लाभ दिलाने की अपील की। डीएम श्री यादव ने कहा कि बाढ़ क्षति का आंकलन के लिये जिला से जांच टीम गठित की गई है। जो स्थानीय मुखियों व अन्य समिति के सदस्यों के सहयोग से वीडियो ग्राफी के द्वारा बाढ़ के क्षति का आंकलन कर रिपोर्ट देगी। डीएम श्री यादव ने कहा कि फसल क्षति के लिये कृषि विभाग द्वारा सर्वे कराया जा रहा है। उन्होंने कहा कि पीएचडी विभाग को क्षेत्रो मैं डीडीटी का छिड़काव करने तथा मेडिकल टीम गठित कर केम्प लेकर स्वास्थ्य जांच का निर्देश दिया गया है। डीएम ने कहा कि सभी क्षतिग्रस्त पुल पुलिया के निर्माण प्राथमिकी के आधार पर कल से शुरू किया जायेगा। इस अवसर पर बीडीओ अविनाश जग, सीओ विजय कुमार गुप्ता, पूर्व प्रमुख सदानंद यादव, डीएसपी के डी सिंह,मुखिया संघ अध्यक्ष प्रतिनिधि मुएशिद आलम, पूर्व जीप सदस्य इमरान अजीम, मुखिया मोहम्मद रागिब, सुरेश साह, रामश्वेर विश्वास, फिरोज आलम, मतीन आलम, मुखिया प्रतिनिधि हारून मौजूद रहे।

सभी प्रभावित परिवारों को मिले आपदा के लाभ

प्रखंड क्षेत्र में आई बाढ़ को लेकर डीएम वैधनाथ यादव व एसडीओ रोजी कुमारी ने पलासी प्रखंड पहुँच कर बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों का दौरा किया। इस क्रम में उनलोगों ने पीपरा बिजवार के क्षतिग्रस्त मुख्य प्रधानमंत्री सड़क, मोदीयेन धार का भी जायजा लिए। इस क्रम डीएम श्री यादव ने बाढ़ पीड़ितों से पूछताछ भी की। इस क्रम में बाढ़ पीड़ितों से क्षति हुई फसलों की जानकारी ली। इस दौरान पीपरा बिजवार पंचायत के मुखिया प्रतिनिधि बलराम यादव ने बकरा नदी मैं तट बंध बनाने की मांग की। इस के बाद डीएम प्रखंड मुख्यालय पहुँच कर सभा भवन में मुखियों के साथ आवश्यक बैठक की। इस क्रम में डीएम वैद्यनाथ यादव ने मुखियों को भावना में नही बहने की अपील की। उन्होंने बाढ़ प्रभावित के योग्य लाभार्थियो को ही आपदा के लाभ दिलाने की अपील की। डीएम श्री यादव ने कहा कि बाढ़ क्षति का आंकलन के लिये जिला से जांच टीम गठित की गई है। जो स्थानीय मुखियों व अन्य समिति के सदस्यों के सहयोग से वीडियो ग्राफी के द्वारा बाढ़ के क्षति का आंकलन कर रिपोर्ट देगी। डीएम श्री यादव ने कहा कि फसल क्षति के लिये कृषि विभाग द्वारा सर्वे कराया जा रहा है। उन्होंने कहा कि पीएचडी विभाग को क्षेत्रो मैं डीडीटी का छिड़काव करने तथा मेडिकल टीम गठित कर केम्प लेकर स्वास्थ्य जांच का निर्देश दिया गया है। डीएम ने कहा कि सभी क्षतिग्रस्त पुल पुलिया के निर्माण प्राथमिकी के आधार पर कल से शुरू किया जायेगा। इस अवसर पर बीडीओ अविनाश जग, सीओ विजय कुमार गुप्ता, पूर्व प्रमुख सदानंद यादव, डीएसपी के डी सिंह,मुखिया संघ अध्यक्ष प्रतिनिधि मुएशिद आलम, पूर्व जीप सदस्य इमरान अजीम, मुखिया मोहम्मद रागिब, सुरेश साह, रामश्वेर विश्वास, फिरोज आलम, मतीन आलम, मुखिया प्रतिनिधि हारून राशिद, शमीम अख्तर, पंकज मंडल, संतोष मंडल, रब्बान अंसारी, अंसार आलम, प्रमोद साह, अशोक पासवान आदि मौजूद थे।

हजार 709 परिवारों को सहायता अनुदान का लाभ दिया गया है। पथ निर्माण विभाग द्वारा बताया गया कि कुल क्षतिग्रस्त सड़क की संख्या 35 थी, जिसमें 28 को पूर्ण रूप से चालू किये गये हैं। जबकि पांच सड़क आशंकि रूप से चालू किये गये हैं। इसी तरह ग्रामीण कार्य विभाग कार्य प्रमंडल फारबिसगंज व कार्य प्रमंडल अररिया ने भी क्षतिग्रस्त सड़कों से अवगत कराया गया। । इस पर जिला प्रभारी सचिव द्वारा निर्देश दिया गया कि सभी अवरूद्ध सड़कों को जल्द से जल्द दुरूस्त करे। बाढ़ 2019 में प्रभावित पंचायतों की संख्या 129 बताया गया है। बाढ़ में डूबने से 12 लोगों की मृत्यु हुई है। जिसमें आठ लोगों को मुआवजा दे दिया गया है। शेष पीड़ित परिवारों को मुआवजा देने की अग्रेतर कार्रवाई की जा रही है। सचिव महोदय द्वारा निर्देश दिया गया कि तकनीकि पदाधिकारियों के साथ नियमित रूप से प्रतिदिन बैठक करें। साथ ही साथ नियंत्रण कक्ष का भी नियमित रूप से संचालन जारी रखें। संभावित बाढ़ को मद्देनजर रखते हुए प्रखंड स्तर पर प्रयाप्त मेटेरियल पूर्व से ही रखने का निर्देश दिया गया। जिला कृषि पदाधिकारी को निर्देश दिया गया कि बाढ़ में हुई बिचड़ा की क्षति की पूर्ति संबंधित किसानों को करना सुनिश्चित करें। इसके लिए गहन प्रचार प्रसार करने का निर्देश दिया गया, ताकि खेत परती न रह जाय। कार्यपालक अभियंता को निर्देश दिया एनएच 327 जो जोकीहाट होते हुए सिलीगुड़ी व किशनगंज को जाती है उसमें हुए कटाव को तीन-चार दिन के अंदर आवागमन हेतु तैयार किया जाय। कार्यपालक अभियंता सिचाई को निर्देश दिया गया कि जमीनदारी बांध को अपने देख रेख में पहले से दुरूस्त करना सुनिश्चित करेंगे। खाद्य पदार्थों की जांच के लिए ड्रगस्पेंक्टर को जिम्मेदारी सौंपी गई है। जिला आपूर्ति पदाधिकारी को निर्देश दिया गया कि खाद्य पदार्थ, डीजल, पेट्रोल आदि पर नियंत्रण रखें ताकि कालाबाजारी नहीं की जा सके। उक्त बैठक में जिला पदाधिकारी, पुलिस अधीक्षक धुरत सायली, उप विकास आयुक्त एनामुल हक अन्सारी, जिला आपदा पदाधिकारी शम्भू कुमार, ए डीएम अनिल कुमार ठाकुर, सिविल सर्जन सुरेश प्रसाद, जिला आपूर्ति पदाधिकारी विपिन कुमार यादव, जिला योजना पदाधिकारी विनोद कुमार जिला जनसंपर्क पदाधिकारी, तकनीकि विभाग से संबंधित सभी कार्यपालक अभियंता तथा संबंधित पदाधिकारी-गण उपस्थित थे।●

जमीनी विवाद को लेकर हत्या को दिया गया अंजाम

पीड़ित परिवार को दी जा रही जान मारने की धमकी

● सुरेश कुमार गुप्ता

मिली जानकारी के अनुसार जयनगर थाना क्षेत्र के कोरहयाँ गाँव वार्ड नं. सात निवासी मो. शौकत अली खान के पुत्र को घर से बुलाकर ले जाया गया, मेला देखने के नाम पर। उसके बाद उस लड़के का दर्दनाक एवं निर्मम तरीकों से हत्या कर शव को फेंक दिया गया। जयनगर थाना में प्राथमिकी संख्या-354/19 दर्ज है।

☞ **जमीनी विवाद :-** मिली जानकारीनुसार नामजद आरोपी मो. मुख्तार राइन कोरहिया निवासी वार्ड नं. सात एवं मृतक के पिता-मो. शौकत अली खान का पूर्व सन् 2014 ई. से ही जमीनी विवाद चला आ रहा है, कई बार सामाजिक बैठक भी हुई, लेकिन मो. मुख्तार राइन पंचायत एवं बैठक की बात नहीं मानी, तथा मारपीट किया। जयनगर थाना में प्राथमिकी दर्ज हुई। सन् 2015 में मो. शौकत अली खान के बेटों का अपहरण हुआ तथा जयनगर थाना कांड संख्या-238/15 दर्ज है एवं उस अपहरण कांड में भी मो. मुख्तार राइन के नामजद प्राथमिकी दर्ज हुआ। जमीन पर मिट्टीकरण को लेकर मो. शौकत अली खान के द्वारा जयनगर अनुमंडल दंडाधिकारी कार्यालय में 15.01.2018 को भी आवेदन दिया गया।

कोरहियाँ गाँव के ही खजुला खातुन ने मो. मुख्तार राइन पर जयनगर थाना में प्राथमिकी दर्ज करवाया, कांड संख्या-77/15 है। मो. मुख्तार राइन पर कोरहियाँ गाँव के ही दर्जनों लोगों ने जयनगर थाना एवं बिहार विद्युत कार्यालय जयनगर को लिखित आवेदन दिया, जिसमें बिजली कनेक्शन के नाम पर लाखों की ठगी का आरोप लगाया

गिरफ्तार मुजरिम

मृतक मो. सद्दाम

मृतक का फाइल फोटो

गया। अपहरण कांड में जाँच नामजद आरोपी हैं तथा 307 धारा में प्राथमिकी दर्ज में आठ आदमी नामजद है, दिनांक 01.05.2015 के आवेदन में मो. सागीर एवं आइसा खातुन को अधमरा कर फेंक दिया गया था, महिनों की इलाज के बाद स्वस्थ हो सका बताते चलें कि तीनों मामला मधुबनी व्यवहार न्यायालय में लम्बित है।

☞ **घटना :-** कोरहियाँ गाँव वार्ड नं.-सात में दो मोटर साईकिल पर सवार चार लोगों ने मृतक मो. सद्दाम को मेला देखने के लिए संध्या को बुलाकर ले गया एवं उसी दिन रात्रि के 7/30 बजे मृतक के पिता को खबर मिला कि उनका लड़का का शव झाड़ी में देखा गया है। तत्काल जयनगर थाना को सूचित कर घटना स्थल पर दर्जनों ग्रामिणों के साथ गया तो पाया गया कि मृतक मो. सद्दाम हे तथा शौक अली खान का लड़का है।

जयनगर पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम करा कर परिजन के हवाले सौंपा तथा जयनगर थाना में मृतक के पिता मो. शौकत अली खान के द्वारा प्राथमिकी दर्ज करवाया गया एवं चार लोगों को नामजद किया गयां जयनगर थाना में प्राथमिकी संख्या-354/19 दर्ज हुआ। पुलिस ने प्राथमिकी दर्ज करने के पश्चात् त्वरित कार्यवाही करते हुए एक व्यक्ति को गिरफ्तार कर जेल भेजा। नामजद आरोपी में से दूसरा आरोपी को मधुबनी कोर्ट के बाहरी क्षेत्र से मृतक के परिजनों के द्वारा पकड़कर मधुबनी टाउन थाना को सुपूर्द कर दिया गया। नामजद दो आरोपी अभी भी पुलिस की पकड़ से बाहर फरार है। गाँव में तनाव का माहौल कायम है। प्राथमिकी दर्ज नाम से एक मो. अजमल को पुलिस गिरफ्तार किया तो दूसरा मो. एहसान को मधुबनी से पकड़कर पुलिस के हवाले किया गया, फिलहाल दोनों गिरफ्तार लोग मधुबनी मंडल कारा में बन्द है। मो. मुख्तार एवं मो. मुन्ना फरार चल रहा है।

☞ **मृतक :-** मो. सद्दाम मिलनसार लड़का था एवं 17 वर्ष का था तथा जयनगर में दसवीं वर्ग का छात्र था, मृतक अगले साल मैट्रिक का परीक्षा देने की तैयारी कर रहा था, पढ़ाई में हमेशा अन्य विद्यार्थियों से तेज था तथा अच्छा मार्क्स लाता था। मृतक मो. सद्दाम मिलनसार लड़का था। मृतक नौ भाई बहन था, जिसमें पाँच भाई एवं चार बहन।

☞ **मृतक के माता-पिता :-** मृतक मो. सद्दाम के पिता मो. शौकत अली खान ने बतलाया कि सन् 2014 से ही मो. मुख्तार से जमीनी विवाद चला आ रहा है। मो. मुख्तार दबंग एवं अपराधी प्रवृति के होने के साथ-साथ कई संदिग्ध गतिविधि में शामिल सदस्य हैं एवं नाजायज धंधों के कारोबार में संलिप्त है। मो. मुख्तार पूर्व से भी कई अनहोनी घटना कर चुका है तथा हमेशा साजिश रचता रहता है, एवं आये दिन बोलचाल की भाषा में धमकी दिया करता था और साजिश कर चार लोगों ने मिलकर हमारे लड़के का दर्दनाक तरीकों से कत्ल किया तथा प्रशासनिक पकड़ से बाहर फरार चल रहा है। जयनगर पुलिस प्रशासन भी मौन है तथा कार्य में शिथिलता लाये हुए है।

☞ **मृतक की माता :** मृतक के माता के साथ-साथ भाई-बहनों की भी हालत इस मार्मिक घटना को लेकर खराब है तथा रो-रोकर बुरा हाल है। मृतक के माता आइसा खातुन ने बतलाया कि मो. मुख्तार राइन हमेशा बोलचाल की भाषा में बोलता था कि मैं तुम्हारे घर के सदस्यों का कत्ल कर दूँगा एवं साजिश रचकर कत्ल कर दिया, पूर्व से भी जयनगर थाना में मो. मुख्तार के नाम, मारपीट, अपहरण सहित अन्य मामला दर्ज है एवं मामला न्यायालय में लम्बित है।

रो-रोकर आइसा खातुन ने कहा कि मुझे न्याय चाहिए एवं दोषी व्यक्ति को सजा, मुझे भारत के कानून पर भरोसा है, लेकिन यहाँ की पुलिस सुस्त, नाकाम है। अपराधी के सदस्यों के साथ आंतरिक सम्बन्धा बनाए हुए हैं। पुलिस के नजरों में अपराधी हैं पर पकड़ नहीं रही है। मृतक का भाई. मो. जाविर (पत्रकार) ने कहा कि मुझे न्याय पर भरोसा है, लेकिन पुलिस पर नहीं, पुलिस के कार्य में ढीलापर है। नामजद आरोपी के घर केवल सच के जिला ब्यूरो ने सम्पर्क किया तो कुछ भी बताने से इन्कार कर घर का दरवाजा बन्द कर लिया, जयनगर थानाध्यक्ष ने बतलाया कि अनुसंधान जारी है, एवं घटना के हर बिन्दु पर जाँच पड़ताल किया जा रहा है, दोषी व्यक्ति जल्द होंगे सलाखों के पीछे, दो कि गिरफ्तारी हो गई है, दो के लिए जगह-जगह छापेमारी की जा रही है। वही मृतक के पिता न्याय के लिए भटक रहे हैं। ●

टैटू-जनजातीय गोदने का स्वरूप

● रीता सिंह

गोदना का महत्व वर्तमान में शरीर के अमिट आभूषणों के रूप में है। इस कला ने समय के साथ लंबी यात्रा की है। गोदना जिप्सी या आदिवासी रीतिरिवाज की कला के लालित्य का इतिहास है। गोदने का आज के जमाने में प्रचलित नाम टैटू है। यह अंग्रेजी भाषा का शब्द है। टैटू का जन्म ताहितियन से हुआ है। ताहितियन प्रशांत महासागर का द्वीप समूह है। प्राचीन समय में समुदी जहाज वहाँ से आते-जाते थे। जहाज वहाँ लंगर डालते थे। आराम के क्षणों में नाविकों ने टैटू कला का प्रयोग किए। वे अपनी यात्रा में आए ज्वार-भाटा के अनुभवों को अपनी त्वचा पर बनाने लगे। जो धीरे-धीरे टैटू कला के नाम से विकसित होने लगा। प्रमाणिक तौर पर इसका व्यवहारिक रूप मिस्र में देखने को मिला। टेटू या गोदने में पूरी की पूरी महानगरीय संस्कृति देखने को मिलती है। न्यूजीलैंड के मोरि आदिवासी अपने चेहरे और कूल्हे पर गहरी पेंचदार गाल-गोल ज्वार-भाटे जैसी आकृतियाँ आज भी गुदवाते हैं। माउंटहेगन न्यू गुएना में तो चाहे पुरूष हो या महिला टैटू उसके सजने-संवरने का अभिन्न हिस्सा रहा है। यह बात अलग है कि हर देश और उन कबीले में टैटू से सजने के पीछे विभिन्न उद्देश्य रहे हैं। कही सिर्फ स्वयं को सजा-संवारकर दूसरों को आकर्षित करना तो कहीं एक-दूसरे से संबंध स्थापन के लिए संप्रेषण और संवाद की भाषा बनना। भारत के संपूर्ण जनजातीय क्षेत्र में गोदना शारीरिक अलंकरण के रूप में लोकप्रिय है। एक तरह से गोदना उनके शरीर पर छलकता रहता है। आदिवासियों का मानना है कि गोदना उनके शरीर में जलवायु प्रतिरोधक शक्ति देता है।

सामाजिक महत्व के कारण गोदने की कुछ चिन्हित आकृतियाँ प्रतीक के रूप में मानी जाती है। छत्तीसगढ़ क्षेत्र में भील युवतियों के द्वारा विवाह के पूर्व आंखों के दोनों किनारों पर दो आड़ी लकीरों द्वारा चिरल्या अथवा आड़े गुदवाए जाते हैं। इससे एक ओर आँखों को पैरा आभास देकर लंबी आँखों का सौंदर्यबोध प्रदान करते हैं साथ ही यह भील का जातीय चिन्ह भी है। गोदना से जुड़ी भक्ति भावना एवं आराध्य के प्रति स्नेह भी स्पष्ट होता है। आदिवासी स्त्रियाँ अपने शरीर पर 'टोटम (गोत्र चिन्ह) भी गोदवाती है। उनका मानना है कि टोटम होने से उनके पूर्वजों की मृतक आत्माएं संकट के समय उनकी रक्षा करती है। वेरियर ऐलविन ने अपनी पुस्तक 'मिथ्स ऑफ मिडिल इंडिया' में गोदना के प्रचलन के बारे में एक प्रचलित कथा के बारे में लिखा है कि - 'एक बार महादेव के द्वारा निमंत्रित भोज पर सभी देवतागण अपनी पत्नियों के साथ और वहाँ गोंड देवता भी उपस्थित थे। सभी देवियों पार्वती के साथ भूमि पर बैठी वार्तालाप कर रही थीं। भोज की समाप्ति पर प्रस्थान के लिए तैयार गोंड देवता द्वारा भीड़ में अपनी पत्नी को पहचानने में हुई भूल के कारण उन्होंने पार्वती के कंधे पर हाथ रखकर चलने के लिए कहा- इस घटना से पार्वती जी तो क्रोधित हुई पर वस्तुस्थिति समझकर महादेव हँसने लगे। तब पार्वती ने एक युक्ति सोची, जिससे यह भूल फिर न दोहराई जाए। उन्होंने प्रत्येक जाति के लिए पृथक-पृथक गोदना निर्धारित कर दिये, जिन्हें देवियों के अंगों पर गुदवाया गया। अत: पृथक पहचान हेतु भविष्य में सभी देवियां इन चिन्हों को अपने अंगों पर गुदवाने लगी।

घने जंगलो में निवास करने वाली बेगा जनजाति में आज भी गुदने सुई से ही गोदे जाते हैं। इनके यहाँ प्रचलन में विभिन्न अंगों पर गोदने के अलग-अलग नाम है, जैसे-बाह का गुदना, पीठ का गुदना आदि। कारकू स्त्रियाँ कुंवारेपन में ही विभिन्न अंगों को विविध गुदने से अलंकृत कराती है। धार्मिक गुदने में पुरूषों में हनुमान, कृष्ण, शंकर आदि की आकृतियाँ और महिलाओं में मोर, मछली, फूल, चाँद आदि के गोदने प्रचलित है। गोदना सदैव प्यार का प्रतीक रहा है और सुहाग का भी। शुरू में टैटू बनाने की प्रक्रिया काफी जटिल थी। गोदने की तकनीक जगह के अनुसार बदलती रही। पुराने समय में एस्कीमोस इसके लिए हड्डी का प्रयोग करते थे। वे काजल जैसे रंग को सुई से त्वचा के अंदर गोद कर भर कर बारी पतली रेखाएं बनाते थे। उनसे ऐसे चित्र बनाते थे, जो जीवन भर कायम रहते थे। जापान के लोग काजल की जगह गोदने में कई रंगों का प्रयोग करते थे। उनकी सुई हड्डी की नहीं वरन, धातु की बनी होती थी। भारत में प्रथम महायुद्ध के बाद से बिजली की सुई का प्रयोग होने लगा। आज भी अफ्रीका, आस्ट्रेलिया की संस्कृति में अपनी त्वचा पर गोदने से घाव का निशान बनाना आम बात है। सूडान में जिन लड़कों को धर्म की दीक्षा दी जाती है, उनके माथे पर गोदने से छह लकीरें घाव जैसी बनाई जाती है। माथे पर जीवन भर रहने वाले इस निशान से सूडान के धर्म गुरू को आसानी से पहचाना जा सकता है।

पहले जमाने में लोग, खासकर महिलाएं श्रृंगार के रूप में गोदना गुदवाती थी। दुनिया के अनेक समाजों में गोदना एक रिवायत की तरह चलन में है। वही अब टैटू के रूप में फैशन में शामिल हो गया है। खासकर युवा वर्ग टैटू का दीवाना है। टैटू का बाजार अब काफी फैल चुका है। टैटू का व्यवसाय आज फर्श से अर्श तक पहुँच गया है। पहले टैटू कम या अनपढ़ लोगों का फैशन माना जाता था, लेकिन आज यह एक पॉप कल्चर बन गया है, जिसे हर कोई अपनाना चाहता है। किसी की याद में टैटू बनवाना खूब चलन में है। आज के समय में गोदना इतना लोकप्रिय हो गया है कि इसके लिए देश के अलग-अलग राज्यों में टैटू फेस्टिवल आयोजित किए जाते हैं। अब टैटू कोई छोटा-मोटा नौसिखियों का व्यवसाय नहीं रह गया है। इसके लिए बाकायदा पाठ्यक्रम चलाए जाते हैं। अब चिपकाने वाले रंग-बिरंगे बने-बनाए गोदने की डिजाइन बाजार में उपलब्ध है। कई बड़ी कंपनियों ने इसे अपने उत्पादन के विज्ञापन का माध्यम बनाया है। रंग और ब्रश के द्वारा थोड़ी देर टिकने वाले टैटू अपने शरीर पर बनवाना रिवाज बनता जा रहा है। अब तो प्रतिदिन की वेशभूषा के अनुसार नित नए टैटू बना लिए जाते हैं। भारतीय फिल्मों में भी इसका खूब प्रचलन है। बॉलीवुड के कलाकार जो भी टैटू अपने शरीर पर बनवाते हैं वह तुरंत चलन में आ जाता है। उनके टैटू तो आसानी से निकल जाते हैं जो उनकी देखा-देखी जो लोग स्थायी टैटू अपने शरीर पर गोदवाते हैं वह महंगा भी है और तकलीफदेह भी। वैसे अब जमाना हाइटेक का है। लोग साफ-सफाई से त्रिआयामी टैटू यारियलिस्टिक गोदने गुदवा रहे हैं। पर आज भी कोई गोदना यदि किसी विशेषज्ञ से नहीं बनवाया गया तो इसके गंभीर परिणाम हो सकते हैं। मानना पड़ेगा कि बच्चे हों या बड़े सबके टैटू बनवाने के शौक ने इस प्रागैतिहासिक काल से चली आ रही देह चित्रांकन की आदिम कला को फैशन की अगली पंक्ति में लाकर खड़ा क दिया है। ●

सूचना मंत्री ने किया जल-जीवन हरियाली अभियान का शुभारंभ

● अमित कुमार/त्रिलोकी नाथ प्रसाद

बीते 5 अगस्त को सूचना भवन परिसर में सूचना एवं जनसंपर्क मंत्री श्री नीरज कुमार ने **''जल–जीवन–हरियाली''** अभियान का शुभारंभ किया। इस अवसर पर माननीय मंत्री ने अपने हाथों से परिसर में पौधे लगाए और पौधों को मिट्टी–पानी भी दिया। माननीय मंत्री ने पत्रकारों को संबोधित करते हुए बताया कि माननीय मुख्यमंत्री नीतीश कुमार पर्यावरण–असंतुलन के प्रति अत्यंत संवेदनशील हैं तथा इसके दुष्परिणामों के प्रति सजगता हेतु सभी को सजग एवं जागरूक रहो की प्रेरणा प्रदान करते रहते हैं। श्री नीरज कुमार ने पर्यावरण असंतुलन की भीषणता के विषय में बताया कि पूरी दुनिया में भू–जल की बढती कमी, बेहद गर्मी, वर्षा की अल्पता, मौसम असंतुलन आदि के चिंताजनक परिणामों से जनजीवन अस्त–व्यस्त हो रहा है। अतः समय रहते इसपर चितंन करने की वर्तमान में अत्यंत जरूरत है। इस दिशा में पहला कदम है– अधिकाधिक पौधारोपण। वृक्ष रहेंगे तो हम रहेंगे। अतएव हम सबको **''जल–जीवन–हरियाली''** अभियान को दैनिक जीवन में अपनाना होगा। सरकार के संकल्प को पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन विभाग भली भाँति साकार करने हेतु अपने स्तर से अग्रसर है लेकिन यह संकल्प जन–जन को अपनाना पड़ेगा तभी जल–जीवन बचेगा, हरियाली आएगी और साथ में खुशहाली और समृद्धि आएगी। इस अवसर पर सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग के सभी पदाधिकारी एवं कर्मी ने ''**इको सखा**'' (पर्यावरण संरक्षण संगठन) के तत्वावधान में बढ़चढ कर पौधारोपण अभियान में भाग लिया।

''इको सखा'' के संरक्षक–सह–निदेशक सूचना एवं जन–सम्पर्क विभाग, डॉ0 चन्द्रशेखर सिंह ने भी पौधा रोपन किया और कहा कि प्रत्येक व्यक्ति को इस अभियान में बढ़चढ़ कर हिस्सा लेना चाहिए ताकि पर्यावरण का संरक्षण हो सके। विशेष अवसर पर ''**इको सखा**'' के अध्यक्ष श्री रवि भूषण सहाय ने पर्यावरण की महत्ता पर प्रकाश डालते हुये कहा कि ''वन–पर्यावरण'' की रक्षा करने का संकल्प लेने का समय है, क्योकि जलवायु परिवर्तन से उत्पन्न विभीषिका अब साफ दिख रही है। पर्यावरण का कोई विकल्प नहीं है। ''**इको सखा**'' के मुख्य संयोजक श्री शिव शंकर लाल श्रीवास्तव द्वारा ''पेड़ मेरी जान'' के संकल्प को आत्मसात् करने के संकल्प लेने का भी अनुरोध किया गया। विभाग के संयुक्त सचिव श्री यशस्पति मिश्र, उप सचिव श्री संजय कृष्णा, विशेष कार्य पदाधिकारी श्री अशोक कुमार, सहायक निदेशक श्री लाल बाबु, डॉ0 नीना झा एवं श्री राम बदन बरूआ द्वारा भी पौधा रोपन किया गया। ''**इको सखा**'' के तत्वावधान में विभाग की महिला पदाधिकारियों एवं कर्मियों में विशेष उत्साह देखा गया। ''**इको सखा**'' (पर्यावरण संरक्षण संगठन) द्वारा राज्य में चलाये जा रहे सघन वन महोत्सव एवं माननीय मुख्यमंत्री बिहार की सोच–**''जल–जीवन–हरियाली''** के अनुरूप सूचना भवन प्रांगण में वृक्षारोपण कार्य आयोजित किया गया। आज के कार्यक्रम में उत्साह के साथ आंवला, कटहल, आम अमरूद, पाम एवं अन्य पौधों का रोपन किया गया। ●

निधन :- 30/07/2014

श्रद्धांजलि

परमपूज्य मेरी माँ स्व० राजमती देवी जी की 5वीं पुण्यतिथि पर शत्-शत् नमन, चन्दन, वंदन के साथ उनकी आत्मा की शांति के लिये सदा ईश्वर से प्रार्थना करती हूँ। रोम, रोम, बसने वाली माँ तुझे प्रणाम।

-: निवेदक :-

रीता सिंह

केवल सच पत्रिका प्रतिनिधि

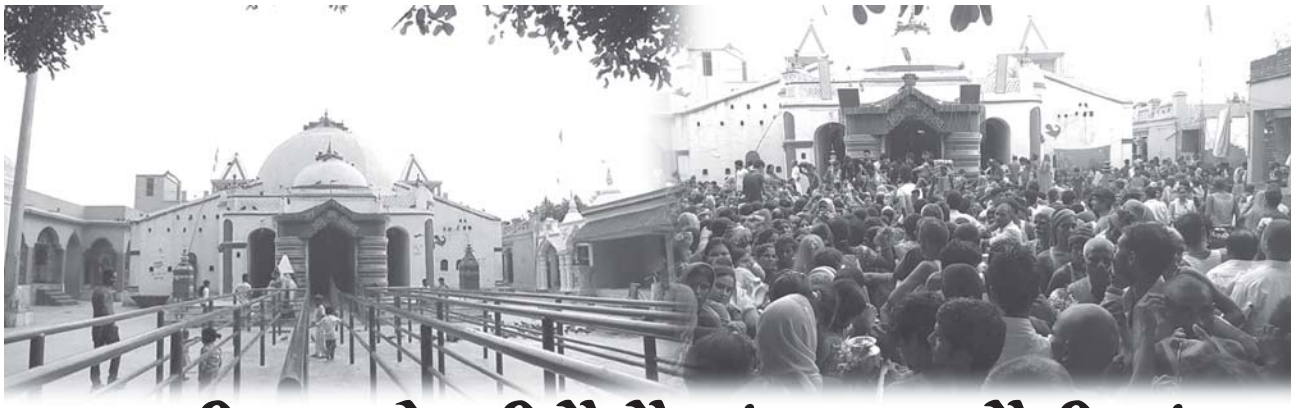

प्रभु श्रीराम ने की है बैकुंठनाथ गौरी शंकर मंदिर में पूजा अर्चना

● **प्रदीप सिन्हा/मनीष कमलीया**

बिहार के पटना से लगभग 40 किलोमीटर पूरब एस एच 106 सड़क के निकट और गंगा नदी के किनारे बैकुंठधाम बैकटपुर में यह शिवलिंग प्राचीन काल से स्थित है। इस मन्दिर में शिवलिंग के रूप में शिवजी के साथ साथ माता पार्वती भी बिराजमान है। साथ ही इस शिवलिंग में 1200 छोटे छोटे शिवलिंग बने हुए है। जो इस शिवलिंग को सबसे अलग और अदभुत बनाता है।

☞ **बैकटपुर मन्दिर की विशेषताएं :-** जानकारों के अनुसार यह शिवलिंग महाभारत काल के जरासंध से जुड़ा हुआ है। ऐसा कहा जाता है कि जरासंध शिव जी का परमभक्त था। वह राजगृह से गंगा नदी के किनारे बना इस मन्दिर में पूजा करने के लिए आता था। वह अपनी बाँह में शिव जी की आकृति का बना एक ताबीज पहनता था। उसे शिव जी से आशीर्वाद प्राप्त था कि जब तक उसके बाँह में यह ताबीज रहेगा उसे कोई मार नही सकता है। लेकिन श्रीकृष्ण ने छल से उस ताबीज को उसके बाँह से अलग करके गंगा नदी में प्रवाह कर दिया था। जहाँ पर यह ताबीज गिरा उसे कौड़िया खाँड़ कहा जाता था।

☞ **बैकटपुर मन्दिर का पुनः निर्माण कब हुआ? :-** बर्षो बाद अकबर के समय मे सेनापति रहे राजा मानसिंह जब बंगाल विद्रोह को खत्म करने के लिए जलमार्ग से जा रहे थे तो उनकी नौका यहाँ फँस गयी थी। जिसके कारण उन्हें यहीं पर रात बिताना पड़ा था। रात्रि में भगवान भोलेनाथ उनके सपने में आये और उन्होंने मन्दिर को पुनःनिर्माण करने को कहा तब राजा मानसिंह ने उसी समय मन्दिर बनाने का आदेश दिया। राजा मानसिंह के आदेश पर मन्दिर का पुनःनिर्माण किया गया। और जब वे बंगाल जीतकर बापस आये तब उन्होंने इस मन्दिर में पूजा अर्चना किया।

☞ **राजनेता क्यों करते है इस मन्दिर में पूजा? :-** राजा मानसिंह के बंगाल

जितने के बाद ऐसी मान्यता है कि जो भी राजनेता इस मन्दिर में सच्चे मन से पूजा अर्चना करते है उनकी राजनीतिक में जीत होती है। इस लिए इस मन्दिर में राजनेता पूजा करने के लिए आते है। बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार, पटना साहिब लोकसभा क्षेत्र के सांसद रविशंकर प्रसाद, बख्तियारपुर विधानसभा क्षेत्र के विधायक रणविजय सिंह इत्यादि कई सारे राजनेता इस मन्दिर में पूजा करने आते है।

☞ **बैकटपुर मन्दिर में पूजा कब करना चाहिए? :-** वैसे तो इस मन्दिर में हर रोज वाहन पूजन, मुंडन संस्कार, विवाह इत्यादि होते रहता है। लेकिन सावन के महीना में इस मन्दिर के शिवलिंग पर जलाभिषेक करने का विशेष महत्व है। इस महीना में शिवभक्तों की भीड़ बढ़ जाती है। जिसकी तैयारी पहले से ही कि जाती है। मन्दिर को विशेष रूप से सजाया जाता है। शिवभक्तों की भीड़ को नियंत्रित करने के लिए विशेष तैयारी की जाती है। मन्दिर जाने बाले रास्ते मे दुकानें लगाई जाती है। सावन का पूरा महीना यहाँ मेले में तब्दील हो जाता है।

☞ **बैकटपुर मन्दिर कैसे पहुँचे :-** यदि आप दूसरे राज्य से हवाई मार्ग से यहाँ आते है तो यहाँ का सबसे निकटतम हवाई अड्डा पटना है। पटना से बैकटपुर मन्दिर की दूरी लगभग 40 किलोमीटर पूरब है। यदि आप सड़क मार्ग पटना बख्तियारपुर फोरलेन से आते है तो जगमाल बीघा से लगभग 2 किलोमीटर उत्तर है। यदि आप रेलमार्ग से आते है तो यहाँ का सबसे निकटतम रेलवे स्टेशन खुसरूपुर है। खुसरूपुर रेलवे स्टेशन से इस मन्दिर की दूरी लगभग 2 किलोमीटर है। इस तरह हवाई, रेल और सड़क मार्ग से यहाँ पहुंचा जा सकता है। सुधांशू कुमार पांडेय बैकुंठधाम मंदिर प्रेम यूथ फाउंडेशन के सैंकड़ो स्वयंसेवक मंदिर में सेवा देते है। गाँधीवादी प्रेम जी ने केवल सच को बताया कि यह मंदिर सरकारी उदासीनता का दंश झेल रहा है, इसे पर्यटन मानचित्र पर स्थापित करने की जरूरत है। ●

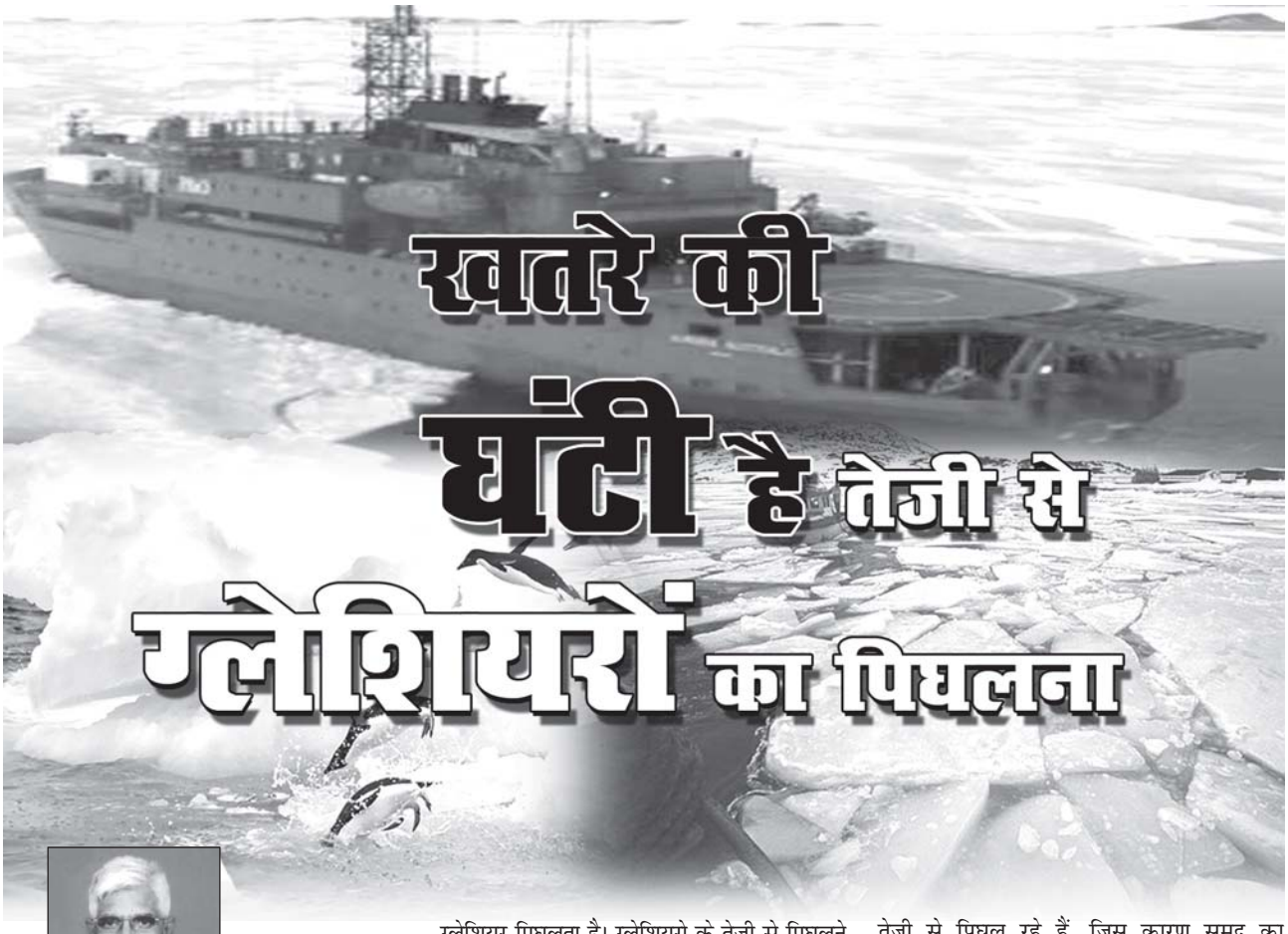

खतरे की घंटी है तेजी से ग्लेशियरों का पिघलना

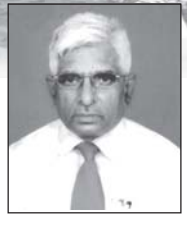

● ललन कुमार प्रसाद

दो यूरोपीय विश्व विद्यालय के वैज्ञानिकों के ताजा अध्ययन के आधार पर धरती की रक्षा कवच कहे जाने वाले ग्लेशियरों का पिघलना इस कदर जारी है कि अब इंसानों द्वारा जो भी कदम उठाये जायेंगे, इसे रोक पाना संभव नहीं है। कम से कम अगले सौ साल तक यानि 2118 तक 30% से अधिक ग्लेशियरो का इसी प्रकार से पिघलना जारी रहेगा। आज से भी अगर कॉर्बन उत्सर्जन में कमी लायी जाये तो इसका असर होते-होते एक सदी बीत जायेगी। लेकिन यदि कॉर्बन के उत्सर्जन में पर्याप्त कमी लायी जाये तो ग्लेशियरो पर असर देखने को मिल सकता है। ग्लेशियरोलॉजिस्ट जॉर्ज कैसर का कहना है कि एक किलो कॉर्बन के उत्सर्जन होने पर 15 किलो ग्लेशियर पिघलता है। ग्लेशियरो के तेजी से पिघलने का मतलब है पीने की पानी की कमी, कृषि उत्पादन पर खतरा, सुनामी और तूफान की तबाही, बाढ़ और बिमारी जैसी समस्याओं में बढ़ोतरी इत्यादि। अर्थात्, पिघलते ग्लेशियर आज सम्पूर्ण विश्व के लिए एक खतरा बन गये हैं।

कैम्ब्रिज में ब्रिटिश अंटार्कटिका सर्वेक्षण के ग्लेशियरोलॉजिस्ट हैमिश डी प्रिचर्ड ने एक अलग अध्ययन में पाया है कि पहाड़ों में ग्लेशियर बर्फबारी से जितना जल संग्रहण करते हैं, उससे 1.6 गुणा अधिक तेजी से पिघल रहे हैं। वैज्ञानिकों ने पाया है कि अंटार्कटिका के ग्लेशियर तेजी से पिघल रहे हैं, जिस कारण समुद्र का जलस्तर तेजी से बढ़ रहा है। नतीजा समुद्री तटों के किनारे बसे शहरों के समुन्दर में समां जाने का खतरा बढ़ता जा रहा है। साथ ही सुनामी और तूफान से तबाही मचने की संभावना अधिक बढ़ती जा रही है। अर्थात् बढ़ते ग्लोवल वार्मिंग का यही हाल रहा तो भविष्य में यह इंसान के लिए भारी तबाही का कारण बन सकती है। 1990 में 53 बिलियन मीट्रिक टन (53 अरब मीट्रिक टन) वर्फ पिघली थी और 2012 में 159 बिलियन मीट्रिक टन पिघली। अंतर्राष्ट्रीय टीम के 84 एक्सपर्ट ने 24 सेटेलाईट सर्वे के रिजल्ट का बारिकी से जाँच करने पर पाया कि 2012 से 2017 के बीच अंटार्कटिका में सलाना 219 बिलियन मीट्रिक टन की दर से वर्फ पिघल रही थी, जो उसके एक दशक पहले 73 बिलयन मीट्रिक टन सलाना थी। अर्थात् अंटार्कटिका में ग्लेशियरो के पिघलने की गति में तीन गुणा से भी ज्यादा इजाफा हुआ है। ग्लेशियरो की शोध से जुड़े वैज्ञानिकों के मुताबिक पिछले 25 साल में तीन

ग्लेशियर के विलक्षण कारनामे

पहाड़ों की गोद से लेकर समुद्र की सैया तक की यात्रा के इनके कारनामे अत्यंत विलक्षण होते हैं। प्राचीनकालीन हिमयुग के ग्लेशियर ज्यो-ज्यों अपने पर्वतीय घर पीछे छोड़ते गए, त्यो-त्यो मार्ग में अपनी कार-गुजारियों की छाप भी छोड़ते गए। कहीं तो पहाढ़ी ढ़लानों पर से मिट्टी, वनस्पति और झाड़-झंखाड़ का एकदम सफाया कर दिया तो कही तंग घाटियों और मैदानों में अनमोल मिट्टी और खनिज पदार्थों के खजाने बिछा दिए, कही अनेक नदियों के मुँह मोड़कर रख दिए तो कहीं नई नदियां धरती के नक्शे पर बना दिए।

अत्यंत मंथर गति से सरकने वाले ये ग्लेशियर चाल में जितने सुस्त होते हैं, शक्ति और सामर्थ्य में उतने ही बढ़े-चढे होते हैं। घाटियां और पहाड़ की खोहों में से गुजरते समय ग्लेशियर का कुछ पानी उन खोहों तथा दरारों में भरा रह जाता है, लेकिन सूर्य ढ़ल जाने के बाद रात्रि के समय वहां का तापमान हिमांक के नीचे गिर जाता है तो खोहों और दरारों में भरा वही पानी जम जाता है। हम जानते हैं कि पानी जब जमकर वर्फ बनता है, तब फैल जाता है और अधिक जगह घेरता है। फलस्वरूप बड़ी-बड़ी चट्टाने यों टूटकर गिरती है, मानों कोई शक्तिशाली डायनामाइट काम कर रहा हो।

अक्सर तो किनारे के पहाड़ के पत्थर, चट्टाने, आदि भी टूट-टूटकर ग्लेशियर के साथ सरकती रहती है। छोटे-छोटे टुकड़ों के अलावा बड़े-बड़े टुकड़े भी इनमें शामिल होते हैं। कुछ तो कई टन वजनी होते हैं

हजार बिलियन मीट्रिक टन से भी अधिक बर्फ पिघलकर समुद्र में समां चुकी है, जिससे समुद्र का जलस्तर कुछ ऊपर उठा है। ग्रीनलैंड में समान्यत: मई महीने के आखिरी में बर्फ पिघलना शुरू हो जाती है, लेकि इस साल मई के शुरू से ही बर्फ पिघलने लगी है, जो चार महीने से लगातार पिघल रही है। 1950 के बाद इस साल सबसे ज्यादा बर्फ पिघली है। इस साल 1 अगस्त को ग्रीनलैंड में सबसे ज्यादा गर्म दिन दर्ज किया गया। उस दिन उत्तरी अंटलांटिक महासागर स्थित ग्रीनलैंड में सिर्फ एक दिन में 1100 करोड़ टन बर्फ पिघल गई। पिघले हुए हिस्से से एक महीने में समुद्र के जलस्तर में 0.1 मिली मीटर बढ़ने की आशंका है।

वर्तमान में ग्लेशियरो ने भूमि के करीब 9.7 फिसदी भाग (1 करोड़ 36 लाख वर्ग किलोमीटर) को घेर रखा है। अर्थात् वर्तमान में पृथ्वी का एक करोड़ 36 लाख वर्ग किलोमीटर क्षेत्र हिम के चादरों से ढ़का रहता है, जहां ग्लेशियर पाये जाते हैं। दक्षिणी और उत्तरी ध्रूव प्रदेशों के महाद्वीप तो सैकड़ों हजारों मीटर मोटी हिम चादरों से अच्छादित है। आल्पस (स्वीडजरलैंड) की पर्वत श्रृंखलाओं में करीब दो हजार ग्लेशियर हैं। दक्षिण अलास्का के ऊँचे पहाड़ों में हजारों ग्लेशियर देखे जा सकते हैं। अलास्का का हूबर्ड ग्लेशियर विश्व के विशाल ग्लेशियरो में से एक है, जिसकी लम्बाई 130 किलोमीटर है। गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड के 1994 के अनुसार विश्व का सबसे विशाल ग्लेशियर लैम्बर्ट ग्लेशियर है। जो ऑस्ट्रेलिया, अंटार्कटिका क्षेत्र में स्थित 700 किलोमीटर लंबा और 64 किलोमीटर चौड़ा है।

ग्रीनलैंड, कनाडा के पास अटलांटिक और आर्कटिक महासागर के बीच स्थित है। ग्रीनलैंड में बर्फ की चादरे काफी बड़ी है, जो 6,60,000 वर्ग मील में फैली हुई है। आज यही वर्फ की चादरे 81 फिसदी ग्रीनलैंड को घेरे हुई है। जिसमें धरती के शुद्ध निकायों में से 8 शामिल है।

हिन्दुकुश हिमालय क्षेत्र विशाल ग्लेशियर बनाते हैं, जो भारत, चीन, नेपाल और भूटान में स्थित 650 ग्लेशियर पश्चिम से पूर्व तक करीब 2000 वर्ग किलोमीटर में फैले हुए हैं। अंटार्कटिका (दक्षिणी ध्रूव) और आर्कटिक (उत्तरी ध्रूव) के तीसरा सबसे बड़ा क्षेत्र है, जहां इतनी बर्फ है। इसलिए हिमालयी ग्लेशियर क्षेत्र को तीसरा ध्रूव भी कहते हैं। पानी का मीनार माना जाने वाला यह हिमालय क्षेत्र पृथ्वी के ताजा पानी का करीब 40% हिस्सा वहन करता है। हिमालयी ग्लेशियर क्षेत्र में अंटार्कटिका और आर्कटिक से कम बर्फ है, लेकिन आबादी के लिहाज से सबसे ज्यादा उपयोग यही के ताजा जल से होता है। लैंडमार्क की रिपोर्ट के मुताबिक ग्लोबल वार्मिंग के चलते एशिया के इस सबसे बड़े ग्लेशियर का एक तिहाई हिस्सा पिघल चुका है। 1970 में ही यहाँ की 15 फिसदी बर्फ पिघल चुकी थी। यहाँ से निकलने वाली नदियां अफगानिस्तान, बाग्लादेश, भूटान, चीन, भारत, म्यांमार, नेपाल और पाकिस्तान में करीब 3500 किलोमीटर तक लंबे क्षेत्र में फैली हुई हैं। बर्फ के पिघलने से यांग्ती, मेकोन्ग, सिन्धु और गंगा सहित कई नदियों का प्रवाह प्रभावित होने लगा है। करीब 160 करोड़ लोग इन्ही नदियों के सहारे अपनी प्यास बुझाते हैं। ग्लेशियर से निकलने वाली नदियों पर भारत,

चीन, नेपाल और भूटान की 80 करोड़ आबादी निर्भर है। इन नदियों से सिंचाई, पेयजल और विद्युत उत्पादन किया जाता है। केन्द्रीय जल आयोग के अनुसार गंगा, सिंधु और ब्रह्मपुत्र नदी घाटियों में पानी की उपलब्धता में 40 फिसदी की कमी आयी है। याद रहे हिमालय से निकलने वाली ये तीनों नदियां पूरे उत्तरी भारत से लेकर मध्य भारत तक के लोगों के लिए जीवन रेखा है। जंगलों की स्थिति दर्शाने वाली 2015 के एक रिपोर्ट में बताया गया था कि भारत के उत्तर और पूर्वोत्तर क्षेत्र में 628 वर्ग किलोमीटर जंगलों के कटाव के कारण नदियों का प्रवाह कम हो गया है। जो स्थिति गंगोत्री ग्लेशियर की है, लगभग वही स्थिति यमुनोत्री ग्लेशियर का है। यमुनोत्री ग्लेशियर गंगोत्री ग्लेशियर के मुकाबले काफी छोटी है। इसलिए उसका पिघलते जाना ज्यादा परेशान करने वाला नहीं है।

★ **क्या है ग्लेशियर?** :- ग्लेशियर बर्फ की उस नदी को कहते हैं, जो गुरूत्व भार के कारण संचयन क्षेत्र से बाहर की ओर यानि पहाड़ की ढ़लान पर बहुत ही धीरे-धीरे सरकती है। प्राय: ग्लेशियर प्राचीन निर्मित घाटियों के सहारे गतिशील होते हैं तथा मार्ग में अपने साथ गति करते हुए कंकड़-पत्थर के माध्यम से अपरदन क्रिया (इरोजन) करते हैं। ये लगातार ऊँच से निम्न स्थल की ओर बढ़ते हैं और विशिष्ट घाटी भित्तियों में परिबद्ध होते हैं।

ग्लेशियर (हिमनद) दूसरे नदियों की तरह नई घाटी नहीं बना सकते, पर दूसरी नदियों की बनायी संकरी और गहरी घाटियों को काट एवं घिसकर चौड़ी तथा गहरी अवश्य बना देते हैं। इसलिए जिस घाटी में ग्लेशियर एक बार बह चुका हो, उसे पहचानना बहुत सरल है। ऐसा इसलिए की घाटी चौड़ी और घिसी हुई होती है।

★ **ग्लेशियरों की भूमिका** :-

☞ ग्लेशियर सदियों से बर्फ के रूप में वर्षा जल का संग्रहण करके जल विज्ञान प्रणाली के माध्यम से जल संतुलन कायम रखते हैं।

☞ पानी के प्राकृतिक भंडार के रूप में ये ग्लेशियर मानव समाज के लिए काफी मुल्यवान हैं। ये ग्लेशियर गर्मियों में नदियों को लंबे समय तक सूखने से रोकते हैं।

☞ उत्तरी और दक्षिणी ध्रूवों के आसपास बहुत अधिक ठंडक होने से वहां पानी लगभग नहीं के बराबर बरसता है। मसलन, अंटार्कटिका में प्रतिवर्ष 2.5 से०मी० से भी कम वर्षा होती है। ऐसी जगहों पर सदा बर्फ गिरती है, इससे स्पष्ट है कि ग्लेशियर को छूकर बहने वाली ठंडी हवा दुनियां के मौसम को भी गहरे में प्रभावित करती है।

★ **कैसे होती है ग्लेशियरो की उत्पत्ति?** :- ऊँचे हिम क्षेत्रों में हिम के निरंतर जमाव के रूपांतरण से ग्लेशियरों की उत्पत्ति होती है। बात यह है कि हिम क्षेत्रों में पूरे वर्ष बर्फ जमी रहती है और निरंतर हिमपात के कारण हल्का एवं नरम रूई के समान हिम की परतों का क्रमश: जमाव भी होता रहता है। जैसे-जैसे ताजा हिम गिरता है और पिछले वर्षो के हिम पर जमा होता जाता है, वैसे-वैसे नीचे की परतों पर क्रमश: जमती हुई परतों का दबाव बढ़ता जाता है। इस तरह हिम की ऊपरी परतों का वजन और दबाव ज्यों-ज्यों बढ़ता जाता है, त्यों-त्यों नीचे का हिम गल-गलकर और तुरंत ही पुन: जम-जमकर ठोस बर्फ में परिवर्तित होता जाता है। ऐसी तह जब एक पहाड़ के रूप में सैकड़ों मीटर ऊँची और हजारों-लाखों टन भारी हो जाती है, तब भी उस हिम चट्टान की तले की कुछ बर्फ ऐसे ही रह जाती है, जो पूरी तरह जम नहीं पाती। बस वही अर्धतरल बर्फ ऊपर की हिम चट्टान को तिराकर नीचे की ओर सरका देती है और पीछे-पीछे स्वयं भी सकते लगती है। इस तरह स्वभाविक रूप से प्रवाहित विशालकाय बर्फ की राशि को ही ग्लेशियर या हिमनद कहते हैं। हिमवरण केन्द्रीय भाग में मोटा और किनारों पर पतला हो तो उसे सभी दिशाओं में ग्लेशियर के रूप में सरकते बनता है। पर्वतीय भागों में ग्लेशियर घाटियों में उतर आते हैं और घर्षण से उन्हें गहरी और चौड़ी बना डालते हैं।

इस तरह हम पाते हैं कि ग्लेशियर के दो भाग स्पष्टतया परिलक्षित होते है-

☞ उत्तरी भाग, जिसे विभंग क्षेत्र (जोन ऑफ फ्रैक्चर) कहते हैं।

☞ नीचला भाग, जिसे प्रवाह क्षेत्र (जोन आफॅ फ्लो) कहते हैं।

विभंग क्षेत्र की मोटाई प्राय: 20 से 50 मीटर होती है और यह भंगुर (फ्रेजाई)प्रकृति का होता है। नीचला भाग यानि प्रवाह क्षेत्र में ऊपरी भाग यानि विभंग क्षेत्र के भारी दबाव के कारण प्लास्टिकता उत्पन्न हो जाती है। इसी कारण ग्लेशियर गतिमान होता है। नीचला भाग, ऊपरी भाग को अपने साथ लेकर सरकने लगता है। ग्लेशियर तब तक नीचे की ओर सरकता है, जब तक की उसका नीचला सिरा पर्वत की ढ़लान के उस स्थान तक नहीं पहुंच जाता, जहां का तापमान गर्मी के दिनों में वर्फ को पिघला सकता हो। वहां पहुंचकर ग्लेशियर पिघलने लगता है और उसका पानी धाराओं तथा नदियों के रूप में बहने लगता है और बराबर बहता रहता है। इन नदियों में हिम के बड़े-बड़े टुकड़ें तैरते हुए चलते हैं जो ''प्लावी हिमशैल'' के नाम से जाने जाते हैं।

यदि कोई ग्लेशियर समुद्र के किनारे समाप्त होता है तो उसके बड़े-बड़े टुकड़े टूटकर उससे अलग होकर आइसवर्ग के रूप में समुद्र में तैरने लगते हैं। इस तरह हम पाते हैं कि आइसवर्ग

भारत के कुछ प्रमुख ग्लेशियरों के सिकुड़ने का लेखा-जोखा

ग्लेशियरों के नाम	अवधि	कब से कब तक	सिकुड़न (लम्बाई में)
गंगोत्री ग्लेशियर	4 वर्षों में	1991-1995 के बीच	800 मीटर
पिंडरी ग्लेशियर	108 वर्षों में	1849-1957 के बीच	1350 मीटर
सिगड़ी ग्लेशियर	2 वर्षों में	1986-1988 के बीच	80 मीटर

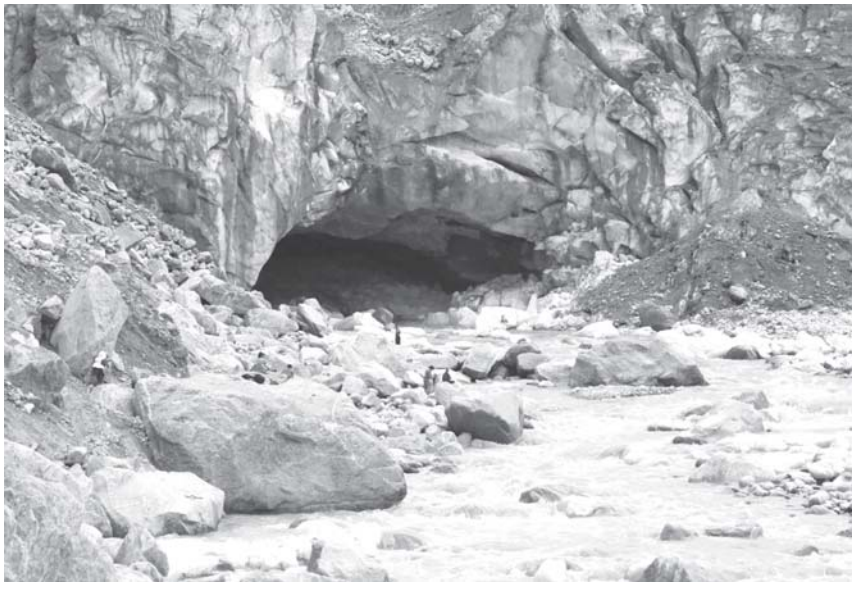

का जन्म तब होता है, जब ग्लेशियर समुद्र के किनारे पहुंच जाते हैं। आइसवर्ग का 1/10 भाग सागर तल पर दृष्टिगोचर होता है और शेष जलमग्न रहता है।

★ **ग्लेशियर की गति :-** ग्लेशियर बहुत धीरे-धीरे आगे बढ़ता है। इसकी गति कुछ सेंटी मीटर से लेकर 30 मीटर तक प्रतिदिन होती है, जो बर्फ की राशि तथा स्थलाकृति की प्रवणता (ग्रैडियंट) पर निर्भर करती है। किसी भी ग्लेशियर की गति तापमान, बर्फ का भार, सतह की ढ़ाल तथा सतह की घर्षण पर निर्भर करता है। वैज्ञानिकों के मुताबिक यदि ग्लेशियर के नीचे चट्टान है तो यह चिपचिपा होगा और धीरे-धीरे बढ़ेगा, लेकिन यदि पानी और छोटे-छोटे कंकड़ है तो ग्लेशियर बहुत तेजी से आगे बढ़ेगा। साथ ही जलवायु और संभरण के अनुसार ग्लेशियर की गति में परिवर्तन भी होता रहता है। उदाहरर्णाथ बाल्टोरो ग्लेशियर का वेग 1.76 मीटर प्रति दिन है और फेडचेन्को ग्लेशियर का वेग 0.45 मीटर प्रति दिन। आल्पस क्षेत्र के ग्लेशियर 0.1 मीटर से 0.4 मीटर प्रति दिन की गति से अग्रसर होते हैं। पामीर और हिमालय क्षेत्र के ग्लेशियरों का वेग 2 से 4 मीटर प्रतिदिन है। ग्रीनलैंड के ग्लेशियरों की गति सर्वाधिक पायी गयी है। ये 4-40 मीटर प्रतिदिन की गति से प्रवाहित होते हैं। उदाहरणार्थ यूपरनिविक ग्लेशियर की गति 38 मीटर प्रति दिन है।

ग्लेशियर की गहराई एवं गति सर्वत्र समान्य नहीं होती है। ग्लेशियर के मध्य में बर्फ की मोटाई अधिक होती है और इस भाग का प्रवाह गति भी अपेक्षाकृत अधिक होती है। किनारे के दोनो भागों में बर्फ की मोटाई कम होती है और इन भागों की प्रवाह गति भी अपेक्षाकृत कम होती है। बात यह है कि मध्य भाग की अपेक्षा किनारे के भागों में घाटी के पार्श्वो से उत्पन्न घर्षणी प्रतिरोध होता है, जिससे मध्य भाग की अपेक्षा किनारे के भागों का वेग कम होता है। घाटी पार्श्वो से उत्पन्न इसी घर्षणी प्रतिरोध के चलते ग्लेशियर का अग्र भाग हमेशा उत्तल आकार का होता है, जिसे प्रोथ यानि तूंड कहते हैं, जो जल में परिवर्तित होता रहता है। यह आवश्यक नहीं है कि ग्लेशियर का टूंड अपनी जगह पर स्थिर रहे, समय-समय पर ये आगे-पीछे खिसकते रहते हैं। ग्लेशियरों के तूंड से ही स्थायी (पेरेनियल) नदियों की उत्पत्तिका होती है।

★ **हिम रेखा (स्नोव लाईन) क्या है? :-** हिम आवरण का वह निम्नतर तल जिसके नीचे ग्रीष्म ऋतु में हिम पिघलने लगता है, हिम रेखा कहलाती है। अर्थात् ग्रीष्म ऋतु में हिम क्षेत्र के जिस तल तक हिम पिघलता है, वही सीमा हिम रेखा कहलाती है। यही कारण है कि हिम रेखा के नीचे स्थित बद्रीनाथ, केदारनाथ आदि स्थलों में जाड़े में जितना हिमपात होता है, ग्रीष्म ऋतु में अथवा वर्षा काल के आरंभ में वह सारा हिम पिघलकर नदी मार्गो से जल के रूप में नीचे बह जाता है। लेकिन हिम रेखा से ऊपर स्थित क्षेत्रों में हिम का जमाव वृहत मात्रा में ही बना रहता है। हिमरेखा की ऊँचाई प्रत्येक स्थान पर समान नहीं होती है। अर्थात् विभिन्न क्षेत्रों में हिम रेखा की ऊँचाई भिन्न-भिन्न होती है। सागर तल के बराबर से लेकर 6400 मीटर तक हिम रेखा की ऊँचाई अंकित की गई है। ध्रुवीय प्रदेशों से भू-मध्य रेखा की ओर बढ़ने पर हिम रेखा की ऊँचाई भी क्रमशः बढ़ती जाती है। यही कारण है कि अंटार्कटिका क्षेत्र में हिम रेखा की ऊँचाई निम्नतः होती है। समुद्र तल के समकक्ष यानि अंटार्कटिका में हिमरेखा समुद्र तक की ऊँचाई पर होती है। आर्कटिक क्षेत्र में भी हिम रेखा की ऊँचाई प्रायः समुद्रतल के समकक्ष ही होती है। पश्चिमी हिमालय में हिम रेखा की ऊँचाई 4500 से 6000 मीटर है और पूर्वी हिमालय में 4000 से 5000 मीटर, क्योंकि पूर्व भाग में आद्रता अधिक रहने के कारण हिमपात अधिक होता है। अर्थात् किसी भी पर्वतीय क्षेत्र में हिम रेखा की ऊँचाई स्थलाकृति और जलवायु पर निर्भर करती है।

★ **ग्लेशियर के प्रकार :-**

ग्लेशियर मुख्यतः तीन प्रकार के होते हैं :-

☞ **घाटी या पर्वतीय ग्लेशियर :-** वह ग्लेशियर जो घाटी में स्थित हो, उसे घाटी ग्लेशियर कहते हैं। ऐसे ग्लेशियर पुरानी घाटी में पाये जाते हैं और शीर्ष पर अवस्थित हिम क्षेत्र में उत्पन्न होते हैं तथा घाटियों से होकर वर्फ जिव्हा (आईस टांग) के रूप में नीचे खिसकते रहते हैं। वैसे इस तरह के ग्लेशियर आल्पस और हिमालय की पर्वत श्रेणियों में पाये जाते हैं, इसलिए इन्हें पर्वतीय

ग्लेशियर से जुड़े ऐसे पद जिनका केवल नाम ही इस लेख में आया है।

☞ **हिम क्षेत्र :-** सदैव हिम से परिपूर्ण क्षेत्र को हिम क्षेत्र कहते हैं। ये दो प्रकार के होते हैं-एक स्थायी हिम क्षेत्र और दूसरा अस्थायी हिम क्षेत्र।

☞ **स्थायी हिम क्षेत्र :-** जिस हिम क्षेत्र की वर्फ कभी नहीं पिघलती है, उस हि क्षेत्र को स्थायी हिम क्षेत्र कहते हैं, जैसे-अंटार्कटिका, ग्रीनलैंड, इत्यादि।

☞ **अस्थायी हिम क्षेत्र :-** ऐसा हिम क्षेत्र जहां पर ऋतु परिवर्तन के साथ हिम क्षेत्र का प्रसार एवं संकुचन होता है। ऑस्ट्रेलिया इसका प्रमुख उदाहरण है।

☞ **प्रवणता :-** किसी ढ़ाल का झुकाव जैसे किसी नदी की तली का या गिरि-पार्श्व का। इसे भिन्न या प्रतिशत या कोणों में व्यक्त किया जाता है।

☞ **घाटी :-** दो ऊँची पहाड़ी या दो ऊँचे पहाड़ों के बीच के तंग रास्ते को घाटी कहते हैं, जैसे-खैबर की घाटी। इसे दर्रा भी कहते हैं।

☞ **बेसिन :-** बेसिन का शाब्दिक अर्थ है पानी रखने का पात्र। जमीन का वह भाग, जिसके चारो ओर पहाड़ और बीच में मैदान हो, बेसिन कहलाता है। तमाम पहाड़ों का पानी वहाँ आ जाता है। दरअसल यह भूपृष्ठ के धंसने के फलस्वरूप भूपर्पटी में बना तश्तरीनुमा बहुत बड़ा गर्त है।

ग्लेशियर भी कहा जाता है। फिर ऐसे ग्लेशियर यूरोप की आल्पस पर्वत श्रेणियों में बहुतायत में पाये जाते हैं। अत: ऐसे ग्लेशियर को अल्पाइन ग्लेशियर भी कहा जाता है।

संरचना के अनुसार घाटी ग्लेशियर दो प्रकार के होते हैं-1. सरल ग्लेशियर 2. जटिल ग्लेशियर या बहुसंशलेशी ग्लेशियर। जब केवल एक ही ग्लेशियर का प्रवाह होता है तो ऐसे ग्लेशियर को सरल ग्लेशियर कहते हैं। आल्पस और कोकेशस क्षेत्रों में ऐसे ग्लेशियर बहुतायत में पाये जाते हैं। जब एक से अधिक ग्लेशियरों का सम्मिलित प्रवाह होता है तो ऐसे ग्लेशियर को जटिल या बहुसंशलेशी ग्लेशियर कहते हैं। मसलन भारत का सियाचीन ग्लेशियर, बाल्टोरो ग्लेशियर, तेराम शेर ग्लेशियर और रेमो ग्लेशियर। इन तीनों ग्लेशियरों को मिलाकर सियाचीन ग्लेशियर कहा जाता है। आल्पस क्षेत्र के अलेट्स्क ग्लेशियर, मर-डी-ग्लेस ग्लेशियर इत्यादि भी इसके उदाहरण है। अलास्का का हूबर्ड ग्लेशियर, उत्तरी अमेरिका का सबसे लंबा घाटी ग्लेशियर है।

☞ **गिरिपदीय ग्लेशियर :-** पर्वतों के पाद पर घाटी ग्लेशियरों के अंतिम छोरों के सम्मिलन से निर्मित ग्लेशियर को गिरिपदीय ग्लेशियर कहते हैं। ऐसे ग्लेशियर पहाड़ की तलहटियों तक ही सीमित रहते हैं, मानो अपने पर्वतराज का चरण धो रहे हो, इसलिए इन्हें तलहटीय ग्लेशियर भी कहा जाता है। अलास्का का मलास्पीना और बेरिंग ग्लेशियर इसके प्रमुख उदाहरण हैं। मलास्पीना ग्लेशियर लगभग 3800 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला हुआ है। दूसरे शब्दों में विस्तृत हिम क्षेत्रों में जब ग्लेशियर कई दिशाओं से गति करता हुआ पहाड़ के आधार पर एकत्रित होते हैं और कालोपरान्त हिम की एक विशाल राशि एकत्रित हो जाती है तो उसे गिरिपदीय ग्लेशियर कहते हैं। वास्तव में ऐसे ग्लेशियर का निर्माण तभी संभव होता है जब ग्लेशियर का मार्ग पहाड़ी आधार से होकर गुजरे तथा वहां पर इनके खिसकने की आवश्यक परिस्थितियां मौजूद हो। कभी-कभी ऐसी ग्लेशियर का निर्माण तो हो जाता है लेकिन ताप वृद्धि के कारण पिघलाव आरंभ हो जाता है और इसलिए वहां से ऐसे ग्लेशियर सरिता के रूप में प्रवाहित होने लगते हैं।

गिरिपदीय ग्लेशियर को पठारी ग्लेशियर भी कहते हैं, क्योंकि पर्वतों के पठारों का विस्तृत क्षेत्र कही-कही वर्फ से पूर्णत: अच्छादित रहता है। स्केण्डीनेविया के पर्वतीय क्षेत्र में ऐसे पठारी ग्लेशियर बहुतायत में है। दक्षिण नार्वे का जस्टढ़ाल ग्लेशियर, जो लगभग 943 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला हुआ है, पठारी ग्लेशियर का एक उदाहरण है।

☞ **महाद्वीपीय ग्लेशियर :-** जब कोई विस्तृत भू-भाग हिम के मोटे आवरण से अच्छादित हो तो उसे महाद्वीपीय ग्लेशियर कहते हैं, क्योंकि उसमें से वर्फ बाहर की ओर अनेक दिशाओं में गतिमान रहती है। दरअसल महाद्वीपीय ग्लेशियर अधिकांशत: मध्य में ऊँचा होता है, जिस कारण उसमें से चारों ओर हिम-स्खलन की क्रियाएं घटित होती रहती है, इसे हम हिम चादर या हिम टोप भी कहते हैं। समान्यतया हिम चादर की तुलना में हिम टोप छोटा होता है। अंटार्कटिका या दक्षिण ध्रूव प्रदेश और ग्रीनलैंड इसके ज्वलंत उदाहरण है। अंटार्कटिका में संसार की सबसे बड़ी हिम चादर है जो लगभग 1 करोड़ 30 लाख वर्ग किलोमीटर में फैली हुई है। वैसे अंटार्कटिका का कुल क्षेत्रफल 1 करोड़ 40 लाख वर्ग किलोमीटर है। इसी तरह ग्रीनलैंड का कुल क्षेत्रफल 20 लाख वर्ग किलोमीटर है। जिसमें से 18 लाख 70 हजार वर्ग किलोमीटर क्षेत्र हिम चादर से ढ़का हुआ है।

हिम चादर में बर्फ की मोटाई असधारण होती है और इसके सतह की आकृति तल-उत्तल होती है। अर्थात् हिम चादर की मोटाई मध्य में अधिक और किनारों की ओर क्रमश: कम होती चली जाती है। हिम चादर की सतह से स्पष्टत: ऊपर निकले हुए सतह को नूनाटक कहते हैं।

महाद्वीपों से समुद्र की ओर प्रवाहित होते हुए कभी-कभी वर्फ के विशाल खंड समुद्र में विसर्जित हो जाते हैं। समुद्र में तैरते हुए इन भीमकाय हिमखंडों को आईसवर्ग कहते हैं। अंटार्कटिका से बाहर की ओर महासागर में बहते हुए इन हिमखंडों की मोटाई 200 से 300 मीटर तक होती है। हिमखंडों के रूप में बहते हुए बर्फ के एक टुकड़े का क्षेत्रफल कभी-कभी छोटे से देश जैसे लक्सेमबर्ग के बराबर होता है, लेकिन मीलों लंबे-चौड़े इन हिमखंडों का बहुत बड़ा हिस्सा (1/10 भाग) पानी की सतह के ऊपर रहता है, जिससे वे दूर से दिखाई नहीं देते हैं।

भारतीय क्षेत्र में स्थित ग्लेशियरों का राज्यवार लेखा-जोखा

राज्यों के नाम	राज्यों में स्थित ग्लेशियरों की संख्या	ग्लेशियरों द्वारा घिरे क्षेत्र का क्षेत्रफल	ग्लेशियरों का औसत आकार
जम्मू और कश्मीर	3136	32,000 वर्ग कि०मी०	10.24 वर्ग कि०मी०
उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखण्ड	917	3550 वर्ग कि०मी०	3.87 वर्ग कि०मी०
हिमचल प्रदेश	450	912 वर्ग कि०मी०	3.35 वर्ग कि०मी०
अरूणाचल प्रदेश	162	228 वर्ग कि०मी०	1.41 वर्ग कि०मी०
सिक्किम	450	912 वर्ग कि०मी०	1.59 वर्ग कि०मी०

फलस्वरूप कभी-कभी जहाज उनसे टकराकर टूट जाते हैं। इसलिए अंटार्कटिका जाने के लिए साधारण जहाज की जगह आइसब्रेकर जहाज का इस्तेमाल किया जाता है। बात यह है कि आइसब्रेकर जहाज की बनावट सधारण जहाज से कुछ भिन्न होती है और उसमें बहुत ही शक्तिशाली इंजन लगे होते हैं। इन्ही कारणों से आइसब्रेकर जहाज वर्फ की 3.4 मीटर ऊँची परत के ऊपर दहाड़ता हुआ चढ़ जाता है और जहाज के वजन से वर्फ टूट जाती है।

★ **भारत में ग्लेशियर का विस्तार :-** विश्व में ग्लेशियरों का विस्तार ध्रूवीय प्रदेशों को छोड़कर 50 हजार वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में है और सर्वाधिक विस्तार हिमालय में है। विराट हिमालय के उतंग शिखरों तथा उसके अंचलों में भी ग्लेशियरों का सम्राज्य है। सम्पूर्ण हिमालय क्षेत्र में कोई 15 हजार ग्लेशियर हैं, जिनमें से अधिकतर की लम्बाई 6 किलोमीटर के आस-पास है। सम्पूर्ण हिमालय क्षेत्र में ग्लेशियरों का सर्वाधिक विस्तार भारत में ही है। भारतीय भू-वैज्ञानिक सर्वेक्षण विभाग के अध्ययन बताते हैं कि भारत में कुल 5220 ग्लेशियर हैं, जो हमारे देश के हिमालय क्षेत्र के 38039 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैले हुए हैं। ये ग्लेशियर मोटे तौरपर तीन नदी बेसिनों में बंटे हुए हैं-सिंधु, गंगा और ब्रह्मपुत्र। सिंधु बेसिन में सबसे ज्यादा 3538 ग्लेशियर हैं और सबसे कम 662 ग्लेशियर ब्रह्मपुत्र बेसिन में हैं। गंगा बेसिन में 1020 ग्लेशियर है। सतलज नदी घाटी क्षेत्र 1426 वर्ग किलोमीटर में फैला हुआ है, जहां छोटे-बड़े मिलकर कुल 2026 ग्लेशियर हैं। इस क्षेत्र में सबसे बड़ा ग्लेशियर तिब्बत में स्थित है, जिसका क्षेत्रफल 668 वर्ग किलोमीटर है।

ये सभी ग्लेशियर भारत के पांच राज्यों में स्थित हैं। ये राज्य हैं-जम्मू और कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश, सिक्किम और अरूणाचल प्रदेश। भारत के दो सर्वाधिक लंबे ग्लेशियर है-गंगोत्री ग्लेशियर और काराकोलम क्षेत्र का सियाचीन ग्लेशियर। इनकी लम्बाई क्रमश: 66 और 75.6 किलोमीटर है। सियाचीन ग्लेशियर 75.6 किलोमीटर लंबा और 8 किलोमीटर चौड़ा है। भारत के हिमालय क्षेत्र के अन्य महत्वपूर्ण ग्लेशियर है-हिस्पर ग्लेशियर (61 कि०मी० लंबा), बाल्टोरी ग्लेशियर (58 कि०मी० लंबा), रेमो ग्लेशियर (40 कि०मी० लंबा), संतोपथ ग्लेशियर (30 कि०मी० लंबा), कुमायूं हिमालय में मिलाप ग्लेशियर (16 कि०मी० लंबा), इत्यादि।

विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में समुद्र तल से हिम रेखा की ऊँचाई

क्षेत्रों के नाम	- हिम रेखा की ऊँचाई
अंटार्कटिका क्षेत्र (दक्षिणी ध्रूव) में	- समुद्र तल के समकक्ष
आर्कटिक क्षेत्र (उत्तरी ध्रूव) में	- समुद्र तल के समकक्ष
दक्षिणी ग्रीनलैंड में	- 900 मीटर
दक्षिणी नार्वे एवं दक्षिणी अलास्का में	- 1500 मीटर
आल्पस की पर्वत श्रृंखलाओं में	- 2700-2800 मीटर
कॉकेशस में	- 2700-3700 मीटर
मध्य एशिया में	- 3000-5500 मीटर
हिमालय, तिब्बत और भूमध्यरेखीक क्षेत्र में	- 4800-6000 मीटर
दक्षिणी अमेरिका के एण्डीज पर्वत श्रृंखलाओं में	- 6400 मीटर

★ **सतही व भू-जल की कमी होने से भी बढ़ रहा है हिमालय का तापमान :-** अनवरत बढ़ते कॉर्बन उत्सर्जन के चलते उत्पन्न ग्लोवल वार्मिंग के कारण हिमालय पर जमी बर्फ तेजी से पिघल रही है। जानकार मानते हैं कि एक तरफ हिमालय पर जमी बर्फ तेजी से पिघल रही है तो वही दूसरी तरफ भारत सहित पड़ोसी देशों में तेजी से भू-जल का दोहन हो रहा है। इससे भू-जल का स्तर काफी तेजी से नीचे जा रहा है। सतही व भू-जल की कमी से भी तापमान में वृद्धि हो रही है, जिसका सीधा असर हिमालय पर पड़ रहा है। हिमालय पर जमीन वर्फ के तेजी से पिघलने पर धरती के पारिस्थित तंत्र (इको सिस्टम) में बड़ा बदलाव देखने को मिलने लगा है। पिछले 40 वर्षों के भारत, चीन, नेपाल और भूटान के हिमालयी क्षेत्रों के सेटेलाइट से जुटाये गये आंकड़ों के अध्ययन के आधार पर यह निष्कर्ष सामने आया है कि बढ़ते तापमान के कारण 21वीं सदी के शुरूआत से ही हिमालय के ग्लेशियरों की पिघलने की दर दोगुनी हो गयी है। सायंस एडवांसेस जर्नल में प्रकाशित शोध के अनुसार 1975 से 2000 के बीच ये ग्लेशियर प्रति वर्ष 10 इंच घट रहे थे, लेकिन 2000 से 2016 के दौरान प्रति वर्ष 20 इंच घटने लगे। 'इंटरेशनल कमीशन फॉर स्नोव एण्ड आइस' के अध्ययनकर्ताओं की रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 1935 से 1956 तक गोमुख ग्लेशियर 5.25 हेक्टेयर, 1952 से 1965 तक 3.65 हेक्टेयर, 1962 से 1971 तक 12 हेक्टेयर, 1977 से लेकर 1990 तक 19.6 हेक्टेयर पिघल कर समाप्त हो चुका था। अर्थात् 1935 से 1990 तक गोमुख ग्लेशियर 30.5 हेक्टेयर पिघलकर छोटा हो चुका था। फिर वर्ष 1990 से लेकर 2006 तक 28.8 हेक्टेयर पिघलकर समाप्त हो चुका था। अर्थात् वर्ष 1935 से लेकर 2006 तक गोमुख ग्लेशियर पिघलकर

59.6 हेक्टेयर छोटा हो चुका था। शोधकर्ता बताते हैं कि वर्ष 1935 से लेकर 2018 तक गोमुख ग्लेशियर गंगोत्री से करीब 19 किलोमीटर पीछे खिसक चुका है। इसरो, वाडिया हिमालयर भू-विज्ञान संस्थान, देहरादून और अन्य संस्थानों ने खुलासा किया है कि हिमालय क्षेत्र के ग्लेशियर प्रति वर्ष 20 मीटर की दर से पीछे खिसक रहे हैं। अमेरिका के जासूसी उपग्रह द्वारा हिमालय क्षेत्र के 650 ग्लेशियरों की खिंची गई तस्वीरों से पता चला है कि हिमालय क्षेत्र हर साल औसतन 8 अरब लीटर पानी खो रहा है, जिससे 32 लाख ओलंपिक स्वीमिंग पुल के जल के बराबर माना जा सकता है। हालात यह है कि पूरी दुनियां ने मिलकर यदि हिमालय के ग्लेशियरों को बचाने का प्रयास नहीं किया तो अभूतपूर्व जलवायु संकट का सामना पूरी दुनियां को करना पड़ेगा।

विश्व के कुछ प्रमुख बड़े ग्लेशियर

ग्लेशिरो के नाम	–	उनकी लम्बाई
अलास्का का हूबर्ड ग्लेशियर	–	120 कि०मी०
ग्रीनलैंड का पीटरमैन ग्लेशियर	–	128 कि०मी०
ऑस्ट्रेलिया का लैम्बर्ट ग्लेशियर	–	700 कि०मी०
अलास्का का मालस्पीना ग्लेशियर	–	100 कि०मी०
भारत का सियाचीन ग्लेशियर	–	75.6 कि०मी०
भारत का गंगोत्री ग्लेशियर	–	66 कि०मी०
भारत का हिस्पर ग्लेशियर व बिअफों की संयुक्त लम्बाई	–	122 कि०मी०
भारत का बाल्टोरा ग्लेशियर	–	58 कि०मी०

★ **विकास के नाम पर पहाड़ियों के अंधाधूंध दोहन को रोकना होगा** :- हिमालय क्षेत्र देश का सबसे संवेदनशील क्षेत्र है। पिछले दो दशकों से हिमालय को दो तरफा मार झेलनी पड़ रही है। अनवरत बढ़ते तापमान से जहां एक ओर हिमालय के ग्लेशियरों के पिघलने की गति बढ़ रही है, वही दूसरी ओर शीतकालिन वर्षा का समय पर न होने से ग्लेशियरों के अस्तित्व पर प्रतिकूल असर पड़ रहा है। हिमाचल प्रदेश हो या उत्तराखण्ड, सभी जगह ताबड़तोड़ तरीके से ढ़ांचागत विकास की होड़ बनी हुई है। सड़कों का जाला कुछ इस तरह से पनपा है कि हर गांव और कस्बों को जोड़ना जैसे सबसे बड़ा कर्तव्य हो, इतना ही नहीं ऐसे उद्योगों को स्थापित करने की अनुमति दी गई है, जिनके उत्पादन पहाड़ों को खोदकर बनाये जाते हैं, जैसे-सीमेंट, चूना पत्थर या अन्य खनन उत्पाद। परिस्थितियां ऐसी ही बनी रही तो केदारनाथ जैसी प्रलयंकारी प्राकृतिक आपदाएं हिमालय के हर क्षेत्र में घटने लगेगी और तब बहुत देर हो चुकी होगी। इसलिए हिमालय के हर क्षेत्र के विकास में संवेदनशीलता बरते जाने की आवश्यकता है। अर्थात् विकास के नाम पर पहाड़ियों के अंधाधूंध दोहन को रोकना होगा।

★ **एक सुखद भगौलिक स्थिति** :- दुनियां के तमाम ग्लेशियर ग्लोवल वार्मिंग के चपेट में है, यानि सिकुड़कर छोटे हो रहे हैं तथा पूरी तरह से लुप्त भी हो रहे हैं। लेकिन हिमालय के काराकोरम रेंज के ग्लेशियर इसके अपवाद हैं। यह एक सुखद भगौलिक स्थिति है। करीब 20 हजार वर्ग किलोमीटर में फैले इस रेंज के ग्लेशियरों के दुनियां के सबसे बड़े ग्लेशियरों का घर कहा जा सकता है। शोध के अनुसार काराकोरम रेंज के ग्लेशियर बढ़ रहे हैं। ग्लेशियर के बढ़ने का यह एक मात्र उदाहरण है। इस पर विश्वास करना थोड़ा कठिन है। ऐसा इसलिए की हिमालय के गोद में बसे उत्तराखण्ड की ढ़ेर सारे नदी नाले और प्राकृतिक स्त्रोत सुखने के कगार पर है। चूकि नदी-नालों के अनवरत जलमय रहने का सीधा संबंध उनके जलस्त्रोत ग्लेशियरों पर निर्भर करता है। इस विषय को लेकर कई शोध-पत्र प्रकाशित हो चुके हैं, जो ग्लेशियरों के आकार में गुणात्मक बदलाव की बात करते हैं। काराकोरम रेंज के ग्लेशियरों के आकार में वृद्धि की सबसे पहले 2005 में नोटिस की गई थी। तब से यह दुनियां के तमाम हाइड्रोलॉजिस्ट के लिए कौतूहल का विषय बना हुआ है। हाल के दिनों में प्रकाशित एक शोध में ब्रिटेन के न्यूकैसल यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर हेले फावलर ने बताया है कि काराकोरम रेंज में ग्लेशियरों के आकार में बढ़ने कास सीधा संबंध हिमालय के ऊपरी लेयर में हो रहे जलवायु परिवर्तन से है। उन्होंने बताया है कि इस पर्वत श्रृंखला के ऊपर एक अलग किस्म का एयर सर्कुलेशन सिस्टम विकसित होता है, जिससे इस पर्वत श्रृंखला के ऊपर हवा का दबाव ठंड़ की अपेक्षा गर्मी के मौसम में ज्यादा होता है। हवा के दबाव में हो रहे बदलाव का कारण वैज्ञानिक भारतीय मानसून को मानते हैं। उनका मानना है कि मानसून के दिनों में काराकोरम रेंज के ऊपर चलने वाली हवाएं और अधिक ठंड हो जाती है, जो अंतत: ग्लेशियर के बढ़ने का कारण बनती है। इस रेंज में गर्मी और जाड़े के मौसम में तापमान में बदलाव बहुत ही कम होता है, जिससे ग्लेशियर को श्री-डी उपग्रह द्वारा ली गई तस्वीरों के जरीय 2000-2008 के नक्शों की तुलना करके इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि इस आठ साल की अवधि के दौरान ग्लेशियर की बर्फ में कोई कमी नहीं आयी है बल्कि 0.11 मिलीमीटर प्रति वर्ष की दर से बढ़ रही है।

★ **जल्द ही खत्म हो जायेगा मीठे पानी का सबसे बड़ा आइसवर्ग** :- ध्रुवों पर पायी जानी वाली जमी हुई बर्फ, ग्लेशियर और आइसवर्ग

हिमालय की कुछ घाटियों के क्षेत्रफल		
घाटी	वर्ष	हिम क्षेत्र
यमुना	2013-14	46%
	2017-18	51%
भागीरथी	2013-14	77%
	2017-17	80%
अलकनंदा	2013-14	72%
	2017-18	85%
धौली गंगा	2013-14	92%
	2017-18	95%
गोरी गंगा	2013-14	76%
	2017-18	88%

दुनियां में मीठे पानी के सबसे बड़े स्त्रोत हैं। आइसवर्ग पानी में तैरते हुए बर्फ के बहुत बड़े-बड़े टुकड़े होते हैं। एक समान्य आकार का आइसवर्ग करीब 20 बिलियन गैलन (210 बिलियन लीटर) पानी का बना हुआ होता है। आइसवर्ग का केवल 10% हिस्सा पानी की सतह के ऊपर दिखता है, शेष 90% हिस्सा पानी की सतह के नीचे डूबा हुआ रहता है। इसी धोखे की वजह से विश्व प्रसिद्ध टाइटैनिक जहाज एक विशालकाय आइसवर्ग से टकड़ाकर दो टूकड़े हो गया था।

अंटार्कटिका में जहां भी नजर दौड़ायेंगे, वहां बर्फ ही बर्फ नजर आयेगी। लेकिन, गर्म होते वातावरण के कारण वहां की बर्फ धीरे- धीरे पिघल रही है। इस वजह से लगभग 19 साल पहले यानि 2000 में एक बड़ा आइसवर्ग बी-15 अंटार्कटिका के रोस आइस सेल्फ से अलग हो गया था। इंटरनेशनल स्पेस स्टेशन (आईएसएस) ने आइसवर्ग बी-15 की एक तस्वीर ली है। नासा के वैज्ञानिकों ने बताया है कि उन्होंने इससे बड़ा आइसवर्ग नहीं देखा है, क्योंकि इसका आकार 10 हजार वर्ग किलोमीटर है। वैज्ञानिकों के मुताबिक 19 सालों तक तैरता हुआ यह आइसवर्ग इसलिए नहीं पिघला की यह अंटार्कटिका के ठंडे पानी में तैर रहा था, लेकिन वैज्ञानिकों ने बताया है कि यह आइसवर्ग धीरे-धीरे भू-मध्य रेखा के करीब पहुंच रहा है। जहां ज्यादा गर्मी होने की वजह से यह पूरी तरह से पिघल सकता है।

✯ अब आइसवर्ग के बर्फ का पानी पियेगा संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) :- संयुक्त अरब अमीरात में पानी की बड़ी समस्या है। इसका नाम सूखाग्रस्त देशों की टॉप-10 लिस्ट में है। बताया जाता है कि आने वाले 24 वर्षों में यहां इतना सूखा पड़ सकता है कि लोगों का जीवन दूभर हो जायेगा। इस बात को ध्यान में रखकर यूएई की राजधानी आबूधाबी की एक कंपनी आइसवर्ग से पीने का पानी निकालने की योजना तैयार की है। दरअसल एक सामान्य आकार का आइसवर्ग 20 करोड़ लीटर पानी का बना होता है। इसलिए समान्य आकार के आइसवर्ग से दस लाख लोगों के लिए पांच साल तक पीने के पानी का इंतजाम किया जा सकता है। दस लाख क्वींटल के आइसवर्ग में 74 अरब लीटर पानी होता है। इसलिए यूएई की कंपनी ने आइसवर्ग बी-15 से पानी बनाने के प्रोजेक्ट पर 2019 से काम करना शुरू कर दिया है। इसके लिए आइसवर्ग बी-15 को 12600 किलोमीटर दूर अंटार्कटिका से खिंचकर यूएई की समुद्र तट तक लाने में लगभग एक वर्ष लगेंगे। यूएई के समुद्र तट पर लाने के बाद आइसवर्ग को छोटे-छोटे टुकड़ों में काटकर बॉक्स में भर दिया जायेगा। सूरज की रौशनी से जब वर्फ पिघलेगी तो उससे निकलने वाला पानी एक अलग टैंक में एकत्रित कर लिया जायेगा, फिर इसी पानी का प्यूरीफाई करके पीने के लिए इस्तेमाल किया जायेगा। 2020 तक पूरा होने वाली इस प्रोजेक्ट पर 5 करोड़ डॉलर यानि 344 करोड़ रूपये खर्च आने की उम्मीद है। इतना ही, जब इस आइसवर्ग को यूएई के समुद्र तट के समीप रखा जायेगा तो वहां के वातावरण में नमी बढ़ जायेगी, जिससे बारिश होने की संभावना बढ़ेगी। अभी यूएई में सलाना सिर्फ 100 मिली लीटर बारिस होती है, जो पर्याप्त से काफी कम है।

✯ तेजी से पिघल रहा है टोटेन ग्लेशियर :- पूर्वी अंटार्कटिका का सबसे बड़ा ग्लेशियर है टोटेन ग्लेशियर। इसका आकार पूरे फ्रांस से भी बड़ा है। पिछने कुछ वर्षों से यह ग्लेशियर तेजी से पिघल रहा है। वैज्ञानिकों का दावा है कि यह आकार में बहुत बड़ा होने के कारण यह ग्लेशियर बहुत ज्यादा संवेदनशील है। अर्थात् दुनियां में होने वाले बदलाव का असर इस ग्लेशियर पर बहुत जल्दी और बहुत ज्यादा होता है। एक जलवायु शोधकर्ता जोर्ग शेफर का मानना है कि बड़े आइसवर्ग आसानी से पिघलकर समुद्र में नहीं समाते हैं। ये काफी उथल-पुथल मचाते हैं, इसलिए टोटेन ग्लेशियर के पिघलने का गंभीर असर पूरी दुनियां पर पड़ सकता है।

✯ ग्लेशियरों के पिघलने के खतरे :- ग्लेशियरों के पिघलने से ऊँची पहाड़ियों में झीलों का निर्माण होता है। इनके टुटने से ढ़लान पर

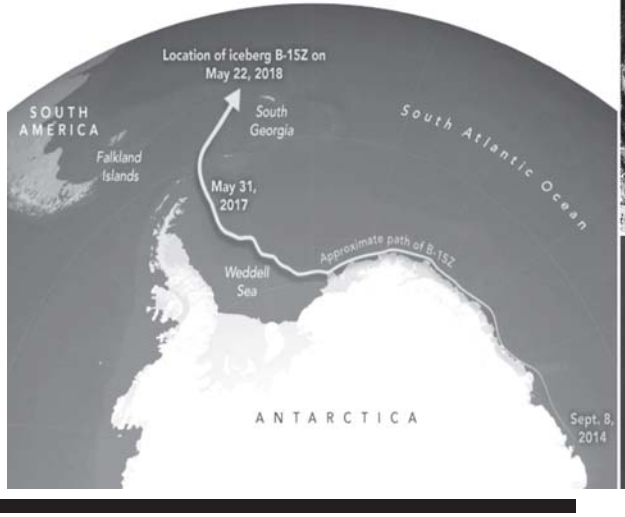

बसी आबादी के लिए प्रलयंकारी बाढ़ का खतरा उत्पन्न हो जाता है। ग्लेशियरों से चीन सीमा पर बनी झीले हिमाचल के निचले क्षेत्र में केदारनाथ जैसी तबाही मचा सकती है। मसलन, मनाली से करीब 100 किलोमीटर दूर स्थित स्पीति वैली में गीपांगगत ग्लेशियर के सिस्सू नाले पर बनी झील को ही ले लिजिए। यह झील पहले 27 हेक्टेयर में थी, जो अब बढ़कर 118 हेक्टेयर में फैल चुकी है। इसे ब्लास्ट कर भविष्य के खतरे को टाला जा सकता है। हिमाचल प्रदेश विज्ञान एवं पर्यावरण परिषद के प्रधान वैज्ञानिक अधिकारी डॉ० एस.एस. रांधवा ने कहा है कि सतलज नदी घाटी हिमाचल में भी पड़ता है, लेकिन यह तिब्बत (चीन) से शुरू होता है। इसे स्पीति बेसिन और बास्पा बेसिन के ग्लेशियरों से पानी मिलता है। ग्लेशियरों से सबसे ज्यादा झीलें सतलज बेसिन में चीन सीमा के आर-पार बन रही है। गीपांगगत ग्लेशियर के आगे सिस्सू नाले पर बनी इस झील को यथाशीघ्र वैज्ञानिक तरीके से ब्लास्ट किया जाना बहुत जरूरी है।

जल संकट से जूझने वाले हमारे देश में हिमालय के वर्फीले आवरण के सिकुड़ने को लेकर थोड़ा गंभीरतापूर्वक सोचने की जरूरत है, क्योंकि हिमालय ग्लेशियर के पिघलने से करोड़ों लोगों की जल सुरक्षा तथा खाद्य सुरक्षा दाव पर है। धरातल पर उपलब्ध कुल पानी का 2.6% हिस्सा पानी पीने योग्य है और जिसका इस्तेमाल रोजमर्रा के लिए किया जाता है-1.08% पानी दक्षिणी और उत्तरी ध्रूवों पर वर्फ के रूप में जमा हुआ है तथा 1.52% पानी नदियों-झीलों और झरनों के रूप में उपलब्ध है। 2.6% के अलावा 1.6% मीठा पानी धरती की कोख में उपलब्ध है। ध्रुवों पर ग्लेशियरों के रूप में जमी वर्फ पिघलती रहती है, जिससे की इन ग्लेशियरों से निकलने वाली नदियों में सालों भर पानी की आपूर्ति होती रहती है। ग्लेशियरों पर वर्फ कुदरती रूप में जमती रहती है, जिससे की पिघल- पिघलकर पानी के रूप में अलग होती वर्फ की भरपायी होते रहती है। लेकिन अब ऐसा नहीं हो पा रहा है, क्योंकि ग्लोवल वार्मिंग के चलते ग्लेशियर बर्फबारी से जितना जल-संग्रहण करते हैं, उससे 1.6 गुणा अधिक तेजी से पिघलते हैं। नतीजा, ग्लेशियर सिकुड़ कर छोटे होते जा रहे हैं और अंततः लुप्त होते जा रहे हैं, जिससे ग्लेशियरों से निकलने वाली नदियों में जल की आपूर्ति में लगातार कमी होती जा रही है।

ग्लेशियर और अच्छादित बर्फ का अधिकांश हिस्सा ग्रीनलैंड और अंटार्कटिका में है, इसमें दुनियां का 70% स्वच्छ जल निहित है। यह बात और है कि इनमें से अधिकांश स्त्रोत इंसान के इस्तेमाल से परे हैं। इस्तेमाल के लिए उपलब्ध स्वच्छ जल में भू-जल की भागीदारी 90% है। पूरी दुनियां में करीब 150 करोड़ लोग पेयजल की आपूर्ति के लिए इसी पर आश्रित हैं। कुल वैश्विक भू-जल का 72% (लगभग तीन चौथाई) भारत, चीन, अमेरिका, पाकिस्तान सहित दस देशों में होता है, लेकिन पूरी दुनियां में भारत भू-जल का सबसे बड़ा उपभोक्ता है। विश्व बैंक के 2012 की रिपोर्ट के अनुसार भू-जल के कुल वैश्विक इस्तेमाल का एक चौथाई से भी ज्यादा हिस्सा भारत करता है। भारत के ग्रामीण इलाके के जरूरत के पानी का 85% हिस्सा पानी की आपूर्ति भू-जल के द्वारा की जाती है और शहरी इलाकों की जरूरत का 55% पानी की आपूर्ति भू-जल से किया जाता है। ऐसा इसलिए की भारत एक कृषि प्रधान देश है और देश के ज्यादातर हिस्से में सिंचाई की कोई खास व्यवस्था नहीं है। भारत में सुरक्षित भूरू-जल का भंडार पिछले दस वर्षों में 70 बीसीएम (बिलियम क्युबिक मीटर) यानि 70 अरब घन मीटर से घटकर 36.5 बीसीएम रह गया है। ऐसा इसलिए की देश में जितने भू-जल का दोहन होता है, उसका 62 फिसदी से भी कम पानी वापस धरती की कोख में लौटाया जाता है। अर्थात् अंधाधूंध भू-जल के दोहन के चलते पिछले 60 वर्षों में भू-जल का स्तर साढ़े तीन गुणा से भी अधिक नीचे चला गया है। नतीजा आजादी के बाद के महज 71 वर्षों में प्रति व्यक्ति प्रति वर्ष सतही और भू-जल दोनो मिलाकर उपलब्ध जल की मात्रा में 25% की कमी हो गयी है। साथ ही आबादी में बेतहाशा वृद्धि के चलते पिछली एक सदी में पानी की खपत में छः गुणा ज्यादा बढ़ोतरी हो गई है। ऐसे में ग्लेशियरों को तेजी से पिघलने से बचाने हेतु असरदार, कारगर, व्यवहारिक और वैज्ञानिक उपायों को बगैर किसी विलंब के अमल में लाया जाना नितांत अनिवार्य हो गया है।

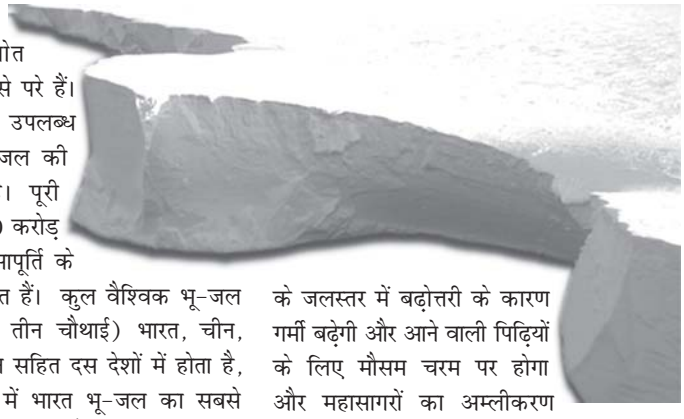

अंटार्कटिका और हिमालय के ग्लेशियरों के तेजी से पिघलने के चलते समुद्री तटों के किनारे बसे शहरों के समुद्र में समां जाने का खतरा बढ़ गया है। समुद्री तटों के किनारे बसे शहरों के लिए सुनामी तथा तूफान से तबाही मचने का खतरा भी बढ़ता जा रहा है। मूंगा चट्टाने मरने लगी है। हमारे जीवन के लिए इस जलवायु परिवर्तन का असर हीट वेब के रूप में झेलना पड़ रहा है। ग्लेशियरों के पिघलने से समुद्र के जलस्तर में बढ़ोत्तरी के कारण गर्मी बढ़ेगी और आने वाली पिढ़ियों के लिए मौसम चरम पर होगा और महासागरों का अम्लीकरण जारी रहेगा।

निरंतर बढ़ते वायु प्रदूषण के कारण धरातल का वातावरण गर्म होता जा रहा है, जिसके कारण धरातल के गर्माने से संसार के सभी ग्लेशियर सिकुड़ते जा रहे हैं। इस तरह सिकुड़कर पीछे हटने से उनके अस्तित्व को ही मिट जाने का खतरा पैदा हो गया है। फलस्वरूप प्रकृति और पर्यावरण के लिए भी खतरा उत्पन्न हो गया है। मसलन हिमालय के भारतीय क्षेत्र के पांच राज्यों में स्थित ग्लेशियरों को ही ले लिजिए। भारतीय भू-वैज्ञानिक सर्वेक्षण विभाग के वैज्ञानिकों द्वारा किये गये अध्ययन से पता चला है कि वर्तमान में यहाँ के ग्लेशियर प्रति वर्ष 12-50 मीटर की दर से सिकुड़ रहे हैं। अगर भविष्य में इसी डर से सिकुड़ते रहे तो आने वाले 250-300 के बीच भारतीय क्षेत्र में स्थित सभी ग्लेशियर खत्म हो जायेंगे। अर्थात् सम्पूर्ण हिमालय क्षेत्र के सभी 15 हजार ग्लेशियरों का अस्तित्व समाप्त हो जायेगा।

अगर वास्तव में ऐसा हुआ तो भविष्य में प्रकृति और पर्यावरण संतुलन के लिए गंभीर खतरा उत्पन्न हो जायेगा। इसलिए भविष्य में पर्यावरण संतुलन और इंसानी अस्तित्व के समक्ष आने वाले गंभीर संकट को देखते हुए अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न देशों की सरकारों द्वारा कारगर नीतियां बनाया जाना ग्लेशियरों के संरक्षण हेतु अविलंब कारगर नीतियां बनाया जाना और उनका ईमानदारी पूर्वक संपादन किया जाना अत्यंत आवश्यक हो गया है। अर्थात् हम जानते हैं कि क्या हो रहा है और क्या किये जाने की जरूरत है। फिर भी हम ईमानदारीपूर्वक तत्परता से ठोस और कारगर प्रयास नहीं कर रहे हैं। इस तरह रोने-धोने से कुछ भी सकारात्मक नहीं होने वाला है। ●

(लेखक फायर एण्ड सेफ्टी विशेषज्ञ हैं।)
मो०:- 9334107607
वेबसाईट :- www.psfsm.in

● संजीव कान्त मिश्र
(ज्योतिषाचार्य)

ज्योतिष विज्ञान का लक्ष्य प्राकृतिक पदार्थों के प्रत्येक परमाणुओं का परिशीलन एवं विश्लेषण करना है, क्योंकि प्रत्येक वस्तु का आधार परमाणु है। परमाणु का आकार सौर्यमंडल से मिलता जुलता है।

मानव शरीर चुंकि असंख्य परमाणुओं के सम्मिलन का एक स्वरूप है। इसलिए सौर्यमण्डल में परिक्रमा करने वाले सूर्यादि ग्रहों का प्रभाव हमारे शरीर स्थित सौर्यमण्डल पर पड़ता है।

सौर्यमण्डल एवं शरीर स्थित सौर्यमण्डल में स्थित ग्रहों में सबसे महत्वपूर्ण सूर्य है। सूर्य संसार की आत्मा है। प्रकृति का केंद्र है। प्रकृति की समस्त शक्तियां सूर्य से प्राप्त होती है। जिस तरह आत्मा के बिना शरीर का अस्तित्व नहीं हो सकता, उसी तरह जगत की सत्ता सूर्य पर निर्भर है। जिस प्रकार भौरा अपना जीवन रस प्राप्त करने के लिए फूलों के चारों तरफ मंडराता है। ठीक उसी प्रकार पृथ्वी अपनी जीवन रक्षा के उपयुक्त सामग्री पाने के लिए सूर्य की परिक्रमा किया करती है। शारीरिक रसों का परिपाक सूर्य की गर्मी से होता है। शक्तियों का विकास, अंगों का विकास उसी शक्ति पर निर्भर है।

जब हम इस सौर्यमण्डल में कोई बीज रोपते हैं, तो सूर्य के प्रकाश के बिना बीज का अंकुरण नहीं हो सकता, चाहे कितनी अच्छी मिट्टी क्यों न हो, जल की भी समुचित व्यवस्था हो। परन्तु सूर्य के प्रकाश के बिना बीज का अंकुरण नहीं हो सकता। ठीक उसी तरह हमारे शरीर के सौर्यमण्डल में यदि सारे ग्रह युवावस्था में, उच्च का हो और उन पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो, परन्तु सूर्य यदि वाल्यावस्था, मृतावस्था या नीच का हो। तो हमारा शारीरिक विकास, मानसिक विकास, व्यवहारिक विकास, नैतिक एवं सैद्धांतिक विकास अवरूद्ध हो जाएगा और हमारा जो कार्यक्षेत्र होगा उसमें सफलता नहीं मिलेगी।

परन्तु हमारे शरीर के सौर्यमण्डल में यदि सूर्य युवावस्था में हो या उच्च का होकर 0 डिग्री से 10 डिग्री के बीच हो, केन्द्र में हो या मूल त्रिकोण में स्थित हो। तब हम जो भी मनोकामना का बीच रोपेंगे,उसका विशाल वृक्ष तेयार होगा। जिसका फल हम स्वयं तो खायेगें ही बल्कि हमारे कई पीढ़ी के लोग भी इसके फल और छाया का लाभ उठाएंगे। हमारे कहने का तात्पर्य यह है कि हमारे शरीर के सौर्यमण्डल में यदि सूर्य मजबूत स्थिति में हो तो हमारा जो भी कार्यक्षेत्र होगा उसमें अच्छी सफलता मिलेगी। चाहे शिक्षा का क्षेत्र हो, चाहे व्यापार का क्षेत्र हो या नौकरी का क्षेत्र हर क्षेत्र में अच्छी सफलता मिलेगी एवं अच्छा विकास होगा।

ज्योतिष विज्ञान के अनुसार सौर्यमण्डल में स्थित सूर्यादि ग्रहों में विभिन्न प्रकार के रसायनिक तत्व पाये जाते हैं। इन रसायनिक तत्वों का प्रभाव हमारे शरीर स्थित सौर्यमण्डल पर भिन्न-भिन्न प्रकार से पड़ता है। जिस प्रकार से ये तत्व हमारे शरीर में उपस्थित होते हैं। उसी प्रकार हमारे शरीर स्थित सौर्यमण्डल को प्रभावित करते हैं।

जिस प्रकार विभिन्न प्रकार के तत्वों के विभिन्न मात्रा में मिलने पर अलग-अलग पदार्थ बन जाते हैं। ठीक उसी तरह शरीर के सौर्यमण्डल में विभिन्न प्रकार के तत्वों के विभिन्न मात्रा में मिलने पर जातक का शारीरिक, मानसिक, नैतिक, व्यवहारिक, सैद्धान्तिक एवं आध्यात्मिक विकास अलग-अलग होगा। हम दूध को अलग-अलग कई पात्रों में रख दें। उसमें से एक पात्र में दही, दूसरे पात्र में ईमली, तीसरे पात्र में नमक, चौथे पात्र में शक्कर डालकर कुछ समय तक छोड़ दें। फिर देखें क्या परिवर्तन होता है। सभी पात्रों का दूध अलग-अलग स्थिति में होगा और उसके गुण तथा रूप आपस में बिल्कुल भिन्न होंगे। चूना और हल्दी को इकट्ठा कर दें तो उसका रंग लाल

हो जायेगा। नारियल तेल में रतन-ज्योति बूटी डाल दें तो उसका रंग भी लाल हो जायेगा। इन चारों चीजों में किसी का रंग लाल नहीं था। परन्तु मिश्रण होते ही रंग बदल गया। रंग कोई स्वतंत्र वस्तु नहीं है। वह विभिन्न प्रकार के रसायनिक तत्वों के आपस में विभिन्न मात्रा में मिश्रण का परिणाम है।

ठीक उसी प्रकार शरीर के सौर्यमण्डल में विभिन्न प्रकार के तत्वों के भिन्न-भिन्न मात्रा में मिलने पर जातक का स्वभाव सैद्धान्तिक दृष्टिकोण से, व्यवहारिक दृष्टकोण से, आत्मिक दृष्टिकोण से, नैतिक दृष्टिकोण से अलग-अलग होता है। उसके रूप, रंग, गुण, स्वभाव, कद-काठी एवं चरित्र अलग-अलग होता है। इन्हीं तथ्यों पर ज्योतिष-विज्ञान प्रकाश डालता है।

ज्योतिष शब्द ज्योति से बना है। ज्योति का सीधा शाब्दिक अर्थ है-प्रकाश, उजाला, रोशनी एवं चमकं सौर्यमण्डल में स्थित ग्रह-नक्षत्रों हम पृथ्वीवासियों को ज्योति प्रदान करते हैं। मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृषिक, धनु, मकर, कुम्भ और मीन राशि वाले तारक समूह जिन्हें ज्योतिष-विज्ञान में राशियों की संज्ञा दी गई है। यह भी हमें ज्योति प्रदान करते हैं। अत: आकाशीय पिंडों से निकलने वाली यह ज्योति-रश्मियाँ अपने बल एवं कोणात्मक दूरी या अंतर के अनुसार हम व्यक्तियों को भिन्न-भिन्न प्रकार से प्रभावित करती है। हम व्यक्तियों के जीवन के विभिन्न पहलुओं पर इन ज्योति-रश्मियों के प्रभाव का अध्ययन करने वाले विषय का नाम ही ज्योतिष विज्ञान है।

ज्योतिष-विज्ञान का अन्य नाम ज्योति: शास्त्र हे, जिसका अर्थ है, प्रकाश देने वाला या प्रकाश के सम्बंध में बतानेवाला शास्त्र अर्थात जिस शास्त्र से जीवन-मरण का रहस्य और जीवन के सुख-दु:ख के सम्बंध में पूर्ण प्रकाश मिले। वह ज्योतिष विज्ञान है।

ज्योतिष विज्ञान में तत्वों के आधार पर वर्तमान जीवन का निर्माण कर प्रकाश-स्वरूप, ज्योति-स्वरूप ब्रह्म का सान्निध्य प्राप्त किया जा सकता है। अत: ज्योति-विज्ञान की ज्योति से पूर्ण प्राणमय, मनोमय, प्रकाशमय एवं समस्त कामनाओं और विषयों के अधिष्ठानभुत बह्म का ध्यान करके सौर्यमण्डल से व्याप्त ऊर्जा को अपने अन्दर ग्रहण कर अपने जीवन को सफल बनावें। ज्योतिष-विज्ञान मानव जीवन की अनेक समस्याओं उन्नति और अबनती, आत्मविकास और ह्रास, आत्मिक और अनात्मिक भावों तथा रहस्यों के व्यक्त करने के साथ-साथ इन सबों का प्रत्यक्षीकरण करता है। भारतीय ज्योतिष का रहस्य इसी करण अति गुढ़ है। जीवन के आलोच्य सभी विषयों का प्रतिपाद्य विषय बनाना ही इस बात का साक्षी है कि जीवन का विश्लेषण करने वाला शास्त्र है।

प्राचीन काल में ज्योति-विज्ञान को स्कंधत्रय (क) होरा (2) सिद्धांत (3) संहिता में विभक्त किया गया था। परन्तु बाद में इसे पंच स्कंधात्मक रूप में अपनाया गया। इसका विश्लेषण किया जाय तो आज का मनोविज्ञान, जीवविज्ञान, पदार्थ विज्ञान, रसायन विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान इत्यादि इसी के अंतर्गत हो जाते हैं। पंच स्कंधात्मक ज्योतिष-विज्ञान के अन्तर्गत इनका अध्ययन किया जाता है - (क) होरा, (ख) सिद्धांत (ग) संहिता (घ) प्रश्नशास्त्र (ड़) शकुनशास्त्र

(क) होरा - इसके अंतर्गत जन्मकुंडली के द्वादश भावों में स्थित ग्रहों के सुख-दुख, उन्नत-अबनति, भाग्योदय आदि समस्त शुभाशुभों का वर्णन इस शास्त्र में मिलता है।

(ख) सिद्धांत - इसमें त्रुटी से लेकर कल्प पर्यन्त काल की गणना, चन्द्र-सौ मासों का निरूपण, व्यक्त-अध्यक्त गणितों का प्रयोजन, विविध प्रश्नोत्तर विधि, तुरीय नलिका इत्यादि यंत्रें के निर्माण विधि का वर्णन किया गया है। प्राचीनकाल में इसकी परिभाषा सिद्धांत गणित के रूप में ककी जाती थी। आदिकाल में अंकगणित द्वारा अहर्गण साधन किये जाते थे। पूर्व मध्यकाल में इसकी परिभाषा ज्यों के त्यों रही। उत्तर-मध्यकाल में इसे तीन भागों में विभक्त किया गया - (क) सिद्धांत (ख) तंत्र (ग) करण।

(क) सिद्धांत - जिसमें सृष्ट्यादि से इष्ट दिन पर्यन्त अहर्गण बनाकर ग्रह गणित किया जाय।

(ख) तंत्र - जिसमें युगादी से इष्ट दिन पर्यन्त अहर्गण बनाकर ग्रह गणित किये जाय।

(ग) करण - जिसमें कल्पित युग का इष्ट वर्ष मानकर उस के भीतर ही किसी अभीष्ट दिन का अहर्गण लाकर ग्राहनयन किया जाय।

(3) संहिता - इसके अंतर्गत भूशोधन, दिक्-शोधन, मेलापक, गृहोंपकरण, गृहारंभ, गृहप्रवेश, जलाशय-निर्माण, मांगलिक कार्यों के मुहूर्त, उल्कापात, ग्रहों के उदयास्त का फल, ग्रहण का फल-इत्यादि बातों का निरूपण विस्तार पूर्वक किया जाता है।

(4) प्रश्नशास्त्र - यह तत्काल फल बतानेवाला शास्त्र है। इसमें प्रश्नकर्त्ता के प्रश्न करने के समय स्थित लग्न के आधार पर तथा प्रश्नकर्त्ता के उच्चारित अक्षर के आधार पर एवं प्रश्नकर्त्ता के स्वर के आधार पर फल का प्रतिपादन होता है। इसे भी तीन भागों में बॉटा गया है-

(क) प्रश्नाक्षर सिद्धांत
(ख) प्रश्नलग्न सिद्धांत
(ग) स्वरविज्ञान सिद्धांत

(5) शकुनशास्त्र - इसके अंतर्गत प्रत्येक कार्य के पूर्व शुभाशुभ पर विचार किया जाता है।

अत: ज्योतिष-विज्ञान का मुख्य उपयोग यह है कि ग्रहों के स्वभाव और गुणों का अध्ययन करके कार्यकारणजन्य अनुमान से अपनी भावी सुख-दुख प्रवृति को पहले से अवगत कर अपने कार्यों के प्रति सजग रहना चाहिए। जिससे आगामी दु:ख को सुख में परिणत किया जा सके। ●

बकरीद, स्वतंत्रता दिवस एवं रक्षाबंधन के शुभ अवसर पर
बेलछी पंचायत की समस्त जनता को हार्दिक शुभकामनाएँ।

-: निवेदक :-

मृत्युंजय प्रसाद

मुखिया सह उपाध्यक्ष

ग्राम-मोकिमपुर, बेलछी पंचायत, चण्डी, नालंदा

कानूनी सलाह

शिवानंद गिरि
(अधिवक्ता)
Ph.- 9308454485
7004408851
E-mail :-
shivanandgiri5@gmail.com

☆ आज आप जानिए कि मुस्लिम विधि के दो संप्रदायों में क्या प्रमुख अंतर होते है?

मुस्लिम विधि के अनुसार मुस्लिम में दो संप्रदाय है। पहला शिया संप्रदाय और दूसरा सुन्नी संप्रदाय विवाह के संबंध में शिया संप्रदाय में मुला या अस्थाई विवाह वैध माना जाता है, जबकि मुला विवाह या स्थाई विवाह सुन्नी सम्प्रदाय में वैध नहीं होता है। विवाह के लिए केवल पिता तथा पितामह वैध अभिभावक माने जाते हैं। दूसरों द्वारा तय किया गया विवाह अवैध माना जाता है। जबकि सुन्नी संप्रदाय में पिता तथा पितामह के अलावा भाई तथा अन्य संबंधी एवं माता तथा मातृ पक्ष के संबंधी मामा आदि द्वारा किया हुआ विवाह मान्य होता है। शिया संप्रदाय में विवाह विच्छेद के लिए दो गवाहों की आवश्यकता पड़ती है, जबकि विवाह के समय गवाहों की आवश्यकता नहीं होती है। दूसरी तरफ सुन्नी संप्रदाय में विवाह दोनों पक्षों में असमानता के आधार पर निरस्त किया जा सकता है। शिया संप्रदाय में दोनों पक्षों में असमानता के कारण निरस्त नहीं किया जा सकता है। सुन्नी संप्रदाय में माननीय निवृति रिटायरमेंट को मानते हैं, जबकि शिया संप्रदाय में मानव निवृति रिटायरमेंट के सिद्धांत को नहीं माना जाता है। शिया संप्रदाय में विवाह संबंध केवल 2 प्रकार के हो सकते हैं। मानव या शुनय जबकि दूसरी तरफ सुन्नी संप्रदाय में विवाह संबंध तीन प्रकार के ही हो सकते हैं। मानव अनियमित तथा शुनय। शिया संप्रदाय में आवश्यकता प्राप्त करने के पूर्व सभी कार्य निष्प्रभावी माने जाते हैं दूसरी तरफ सुन्नी संप्रदाय में आवश्यकता द्वारा किए गए विवाह संबंध केवल अनियमित माने जाते हैं। शिया संप्रदाय में यदि इज्जत की अवधि के समय स्त्री पुरूष समागम करें तो विवाह सदा के लिए वर्जित हो जाता है, जबकि सुन्नी संप्रदाय में इज्जत की अवधि में स्त्री के साथ उस पति से विवाह सदा के लिए वर्जित नहीं होता है। मेहर के मामले में शिया संप्रदाय में मेहर की निम्नतम सीमा निर्धारित नहीं की गई है, जबकि सुन्नी संप्रदाय में मेहर की निम्नतम सीमा 10 दिरहम है। शिया संप्रदाय में अधिक से अधिक मेहर की सीमा 500 दिरहम रखी गई है, जबकि सुन्नी संप्रदाय में अधिकतम की कोई सीमा नहीं है। शिया संप्रदाय में विपरीत शर्त की अनुपस्थिति में मेहर की अदायगी तुरंत ही समझी जाती है जबकि सुन्नी संप्रदाय में विपरीत शर्त की अनुपस्थिति में कुछ भाग तुरंत दें और कुछ बाद में आस्था गीत माना जाता है। तलाक के संबंध में शिया संप्रदाय में तलाक मौखिक रूप से अरबी भाषा में होती है, जबकि सुन्नी संप्रदाय में तलाक मौखिक व लिखित हो सकती है। सिया में तलाक में दो गवाहों की उपस्थिति आवश्यक होती है, जबकि सुन्नी में दो गवाहों की उपस्थिति जरूरी नहीं है। शिया कानून के अनुसार मदिरा के नशे में या अन्य नशे में या बलपूर्वक जोर डालकर घोषित कराया हुआ तलाक वैधता मान्य नहीं माना जाता है। वह निष्प्रभावी होता है, जबकि सुन्नी कानून में नशे जोर या बलपूर्वक जोर डालकर कराया हुआ तलाक भी प्रभावी होता है। शिया कानून केवल तलाक उल सुन्नत को ही तलाक की मान्य कोटी मानता है, जबकि सुनिधि तलाक और सुना तथा तलाक उन दोनों को ही मान्य मानती है। स्पष्ट भाषा में तलाक निष्प्रभावी शिया संप्रदाय में होता है, जबकि सुन्नी संप्रदाय में स्पष्ट भाषा में तलाक प्रभावी नहीं होता है। यदि साबित हो जाए कि वह इच्छा पूर्वक किया गया था। गार्जियनशिप के मामले में शिया संप्रदाय में माता लड़के के लिए 2 वर्ष तक तथा लड़की के लिए 7 वर्ष तक गार्जियन अधिनियम के अधिकार नहीं होती है, क्योंकि संप्रदाय में लड़के लिए 7 वर्ष तक तथा लड़की के लिए जब तक वह व्यस्त ना हो जाय अभिभावक ताकि अधिकार नहीं होती है। विचारों से उत्पन्न बच्चा या संप्रदाय में मातृहीन समझा जाता है, जबकि संप्रदाय में मातृत्व स्त्री में समझा जाता है, जिसने बच्चा पैदा किया है, चाहे जिस प्रकार से हो भरण-पोषण के संबंध में शिया संप्रदाय के अनुसार पिता का पोषण करना बाध्यकारी नहीं है। यदि वह कम आने योग्य है। सुन्नी संप्रदाय में यदि पिता का योग भी है तो भी उसका पोषण बेटी की जिम्मेदारी होती है। सुन्नी संप्रदाय में पोषण की जिममेदारी सभी पर बराबर-बराबर होती है, जबकि संप्रदाय में पोषण करने वालों की संख्या अधिक है तो उन पर प्रतियोगिता तथा आमदनी के अनुसार होता है। बिना जायदाद का कब्जा दिए अमान्य होता है। केवल घोषणा मात्र जरूरी नहीं है। यह कानून शिया संप्रदाय पर लागू होता है, जबकि सुन्नी संप्रदाय में केवल घोषणा सही हो जाता है। दान के संबंध में शिया संप्रदाय में विभाजित हिस्से का दान मान्यहोता है। यदि उसका बंटबारा हो सकता है। जबकि सुन्नी संप्रदाय मेंरात में आई विवादित हिस्सा में किसी का दान माना जाता है। सोफा का अधिकार केवल सहभागी हूँ के बीच में मान्य है और वह भी जब सहभागी दो से अधिक नहीं होते हैं। ऐसा शिया संप्रदाय मानते हैं जबकि सुन्नी संप्रदाय में सहभागी के अलावा पड़ोसी तथा सुखाधिकार वाले व्यक्ति भी छुपा के अधिकारी हो सकते हैं। वसीयत के संबंध में शिया संप्रदाय में प्रत्येक व्यक्ति अपनी रियासत संपत्ति के तिहाई भाग का पूर्ण मालिक होता है। उसे यह बिना उत्तराधिकारीओं की अनुमति के भी वसीयत कर सकता है, जबकि सुन्नी संप्रदाय में उत्तराधिकारीओं की अनुमति आवश्यक होती है। शिया संप्रदाय में यदि वसीयत करने वाले से पहले वह व्यक्ति जिसे संपत्ति वसीयत की गई है मर जाए तो संपत्ति उसके उत्तराधिकारी को मिलती है। बसर्ते वसीयत करने वाला वसीयत रद्द ना कर दे, जबकि सुन्नी विधि के अनुसार यदि वसीयत द्वारा संपति प्राप्त करने वाला वसीयत करने वाले से पहले मर जाता है तो संपति वसीयत करने वाले को ही वापस हो जाती है। शिया विधि में जीवन का लिक की मान्यता है, जबकि सुन्नी विधि में जीवन का लिक संपति की मान्यता नहीं है। उत्तराधिकारी के संबंध में शिया विधि के अनुसार दूरस्थ संबंधी स्वयं हिस्सेदार तथा अवशिष्ट के रूप में संपत्ति प्राप्त करते हैं, जबकि सुन्नी विधि के अनुसार दूरस्थ संबंधी हिस्सेदार तथा अवशिष्टओं के साथ-साथ संपत्ति प्राप्त करते हैं। शिया विधि के अनुसार बढ़ा संतान द्वारा समस्त संपत्ति पर उत्तराधिकार की प्रथा कुछ अंशों में माननीय है, क्योंकि बड़ा पुत्र ही अपने मृत पिता की तलवार पहनने के कपड़े घोड़ा अंगूठी तथा कुरान का उत्तराधिकारी होता है, दूसरी तरफ सुन्नी विधि में बड़े पुत्र के अधिकार की प्रथा मान्य नहीं है। इस सिद्धांत के अनुसार बड़े संतान की पिता की समस्त संपत्ति का उत्तराधिकारी माना जाता है। शिया संप्रदाय में संतान रहित विधवा शिया स्त्री पति की अचल संपति में हिस्सा पाने का हकदार नहीं होती है। सुन्नी संप्रदाय में ऐसी कोई रोक-टोक नहीं होती है। संतान रहित विधवा अचल संपत्ति की उत्तराधिकारी हो सकती है, शिया संप्रदाय में केवल पति ही प्रत्यावर्तन का हकदार होती है। स्त्री नहीं सुन्नी संप्रदाय में पति एवं पत्नी दोनों प्रत्यावर्तन के अधिकारी होते हैं। शिया संप्रदाय में किसी व्यक्ति की जान बुझकर हत करने वाला मृतक की संपत्ति के उत्तराधिकार से वंचित कर दिया जाता है। सुन्नी संप्रदाय में उस व्यक्ति को बिल्कुल उत्तराधिकार से निकाल दिया जाता है, चाहे हत्या जानबुझकर की गई हो या अनजाने में।

''मांझी-लार रोड नई रेल लाईन'' आज भी क्षेत्र के लोगों का एक सपना ही है

देश के प्रथम राष्ट्रपति देने वाला बिहार का सिवान जिला राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी खास पहचान रखता है। स्वतंत्रता आन्दोलन में भी इस जिले की अहम् भूमिका रही है तथा यहाँ के अनेकों सपूतों का नाम देश के इतिहास में दर्ज है। इसी सिवान जिले के सिसवन, रघुनाथपुर, गुठनी एवं दरौली ऐसे प्रखंड हैं, जो आजादी के बाद भी विकास की बाट जोह रहे हैं। गौरतलब है कि इन प्रखंडों की भौगोलिक स्थिति भी ऐसी है, जिसके कारण इस क्षेत्र के लोग विकास की मुख्य धारा से जुड़ने के लिए आज भी संघर्षरत हैं। घाघरा नदी के कारण प्रतिवर्ष आने वाली बाढ़ भी इस क्षेत्र के विकास में बाधक है। जहाँ तक यातायात की बात है तो मुख्यत: सड़क मार्ग से ही निजी बसों, ऑटोरिक्शा और निजी वाहनों पर ही लोग आश्रित हैं। सड़कों की बदहाली के कारण लोगों की यात्राएं अत्यंत जटिल एवं कष्टप्रद है। आज भी इस क्षेत्र की कृषि, व्यावसायिक, स्वास्थ्य एवं शिक्षा के क्षेत्र में वांछित प्रगति नहीं हो सकी है। उपरोक्त परिस्थितियों के कारण ही आजादी के बाद से ही क्षेत्र के बुद्धिजीवि, राजनैतिक एवं सामाजिक कार्यकर्त्ता सारण जिले के मांझी रेलवे स्टेशन से सिसवन, रघुनाथपुर, दरौली एवं गुठनी होते हुए उत्तर प्रदेश के लार-रोड रेलवे स्टेशन तक नई रेल लाईन बिछाने हेतु निरंतर मांग करते रहे हैं। दुर्भाग्यवश आज भी इस क्षेत्र के लोगों के लिए यह नई रेल लाईन एक सपना ही है। समय-समय पर क्षेत्र के लोगों द्वारा अपनी इस मांग हेतु आन्दोलन भी किया जाता रहा है, किन्तु नतीजा आज भी शून्य ही है। इंटक, बिहार के संगठन मंत्री एवं रघुनाथपुर निवासी श्री अखिलेश कुमार पाण्डेय जी एक उभरते हुए नौजवान नेता हैं, जो अपने क्षेत्र में विभिन्न सामाजिक समस्याओं के समाधान हेतु निरंतर सक्रिय रहते हैं। अपने सरल-सहज स्वभाव एवं सहयोगात्मक रवैये के कारण श्री पाण्डेय लोगों के बीच काफी लोकप्रिय हैं। श्री पाण्डेय ने ''मांझी-लार रोड नई रेल लाईन'' के कार्य को मूर्त रूप देने के लिए इसे व्यापक जन-आन्दोलन का रूप देने का काम करके इस चिर-प्रतीक्षित माँग में जान फूँक दी है। इन्हीं मुद्दों पर **अखिलेश कुमार पाण्डेय** से **आलोक रंजन श्रीवास्तव** ने बातचीत की। प्रस्तुत है इसके कुछ मुख्य अंश :-

★ मांझी-लार रोड नई रेल लाईन की माँग को लेकर आन्दोलन से जुड़ने का ख्याल कैसे आया?

वास्तव में इस नई रेल लाईन परियोजना की माँग का बीजारोपण आजादी के बाद ही मेरे परदादा स्व. महाराज पाण्डेय, जो कि जाने-माने स्वतंत्रता सेनानी थे, के नेतृत्व में मेरे घर से ही हुई। स्व. महाराज पाण्डेय के साथ-साथ इस अभियान में क्षेत्र के जाने-माने लोगों तथा स्व. रामबचन पाण्डेय, स्व. जगन्नाथ सिंह, पूर्व मंत्री स्व. रामानंद यादव इत्यादि ने मिलकर तत्कालीन रेल मंत्री स्व. केदार पाण्डेय से इस नई रेल लाईन को आरम्भ करने की माँग की थी। मैं बचपन से ही इस परियोजना की माँग से जुड़ी गतिविधियों से अवगत होता रहा हूँ। यही कारण रहे कि मैं आज भी इस नई रेल लाईन परियोजना को साकार करने हेतु प्रयासरत हूँ ताकि अपने पूर्वजों के अधूरे सपनों को पूरा होते देख सकूँ, साथ ही क्षेत्र के लोगों को भी विकास की मुख्यधारा से जुड़ने में मदद मिल सके।

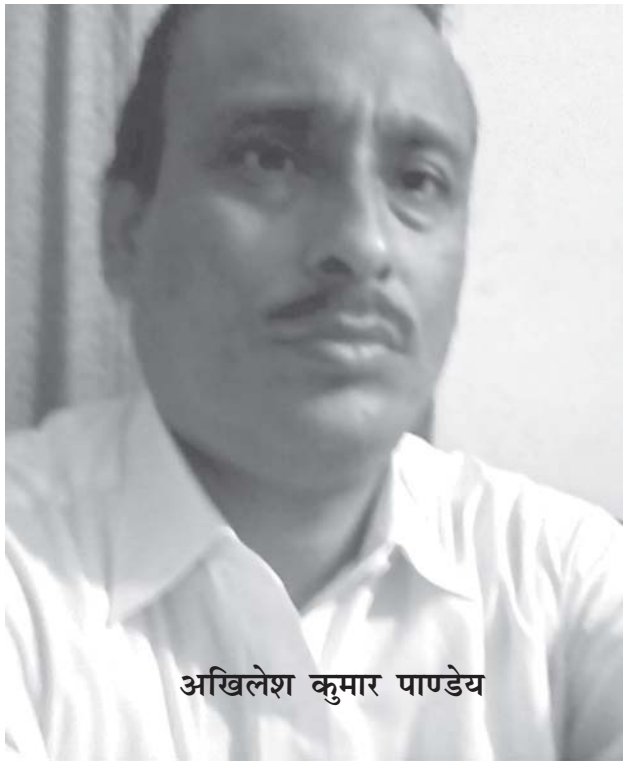

अखिलेश कुमार पाण्डेय

★ किन-किन क्षेत्रों को लाभ मिलेगा?

यह नई रेल लाईन सारण जिले के मांझी रेलवे स्टेशन से आरम्भ होकर ताजपुर, सिसवन, चैनपुर, टारी, नेवारी, रघुनाथपुर, पतार, दरौली, सेलुअर, गुठनी इत्यादि क्षेत्र के निवासी लाभान्वित होंगे साथ ही बिहार एवं उत्तर प्रदेश राज्य के लोगों को भी विभिन्न अवसरों पर एक दूसरे से मिले-जुलने में सहूलियत होगी।

★ आम लोग इस नई रेल लाईन परियोजना से कैसे लाभान्वित होंगे?

यातायात की विषम समस्याओं से जूझ रहे इस क्षेत्र के लोग कृषि, वाणिज्य-व्यापार, स्वास्थ्य एवं शिक्षा जैसी बुनियादी सुविधाओं से वंचित हैं। सबसे विकट स्थिति लड़कियों की शिक्षा को लेकर है, जिन्हें उच्च शिक्षा के लिए घर से दूर यथा बनारस, गोरखपुर या पटना में रहना पड़ता है, जो आर्थिक एवं सुरक्षा की दृष्टि से सर्वथा प्रतिकूल है। महिलाओं एवं बच्चों को भी स्थानीय स्तर पर बेहतर स्वास्थ्य सुविधायें उपलब्ध नहीं रहने के कारण उन्हें भी सुदूर शहरों का रूख करना पड़ता है, जिसमें समय एवं पैसों की बर्बादी होती है। क्षेत्र में वाणिज्य एवं व्यापार का भी बुरा हाल है। बेहतर व्यवसाय और रोजगार के लिए लोगों को घर-द्वार त्यागना पड़ता है। नई रेल लाईन परियोजना के आने से इन सारी समस्याओं से निजात मिलेगी और पूरा क्षेत्र सर्वांगीण विकास की ओर उन्मुख होगा।

★ इस क्षेत्र के लोगों की मुख्य आजीविका कृषि है। कृषकों को इस परियोजना से क्या लाभ मिलेगा?

यातायात की विषम समस्याओं के चलते कृषक अपने उत्पादों को बाजारों तक पहुँचाने में सक्षम नहीं है। ऐसी स्थिति में पूरा कृषक समुदाय बिचौलियों की गिरफ्त में है। नई रेल लाईन के चालु होने की स्थिति में कृषक सीधे तरीके से विभिन्न मंडियों में स्वयं जाकर अपने उत्पादों की बेहतर मूल्यों पर बिक्री करेंगे, जिससे उनकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी।

★ इस आन्दोलन में आप अपनी भूमिका के बारे में बताएँ?

वास्तव में नई रेल लाईन की माँग क्षेत्र के जन-जन की माँग है और पूरा आन्दोलन एक जन-आन्दोलन की शक्ल में ही होगा। मेरी भूमिका सिर्फ इस आन्दोलन को अपने संपर्कों, प्रभावों एवं अनुभवों के आधार पर सही दिशा में नेतृत्व प्रदान करने मात्र ही होगी जहाँ मैं अपने पूर्व के छात्र आन्दोलन से अर्जित अनुभवों का सदुपयोग कर पाऊँगा।

★ आन्दोलन का स्वरूप कैसा होगा?

जैसा कि मैंने बताया कि इस नई रेल लाईन परियोजना की माँग पूरे क्षेत्र की जनता की आवाज है, जो हमारे दादा-परदादा के जमाने से चली आ रही है। क्षेत्र की सारी जनता एकमत से इसे हासिल करने की लड़ाई में शामिल हैं। इस आन्दोलन में सभी वर्गों/समुदायों के लोगों का सक्रिय सहयोग मिल रहा है। साथ ही साथ राजनीति, सामाजिक, कृषक, महिला, व्यवसायी वर्गों एवं छात्रों का भरपूर सहयोग मिल रहा है।

★ आन्दोलन को लेकर इसकी तैयारियों पर प्रकाश डालें?

''मांझी-लार रोड नई रेल लाईन संघर्ष मोर्चा'' के बैनर तले आक्रामक आन्दोलन की तैयारी ग्राम पंचायत एवं प्रखंड स्तर पर चल रही है और सभी स्तरों पर अलग-अलग नेतृत्व की जिम्मेवारी सक्रिय लोगों को दी गई है। समय-समय पर बैठकें भी आयोजित की जा रही है, ताकि आन्दोलन की विभिन्न गतिविधियों का सही आंकलन हो सके।

★ सरकार के स्तर पर परियोजना हेतु कोई पहल हुई?

दिनांक 24.02.2010 को संसद में वर्ष 2010-11 का रेल बजट प्रस्तुत करते हुए तत्कालीन रेल मंत्री सुश्री ममता बनर्जी ने मांझी से रघुनाथपुर, दरौली एवं गुठनी होते हुए लार रोड तक कुल 92 किलोमीटर नई रेल लाईन के निर्माण के लिए सर्वे का काम आरम्भ करने की घोषणा की, दिनांक 24.06.2010 को रेलवे बोर्ड, रेल मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा पूर्व रेलवे को सर्वे का कार्य आरम्भ करने हेतु अधिसूचना भी जारी कर दी गई।

★ परियोजना की वर्त्तमान स्थिति क्या है?

दिनांक 26.08.2014 को रेल मंत्रालय द्वारा विगत 10 वर्षों में पूरी की गई नई रेल लाईन परियोजनाओं के कार्य कार्यों से सम्बंधित रिपोर्ट जारी की गई। इस रिपोर्ट में क्रमांक-537 पर मांझी से रघुनाथपुर, दरौली एवं गुठनी होते हुए लार रोड तक कुल 92 किलोमीटर नई रेल लाईन से जुड़ी जानकारी उपलब्ध है। इस रिपोर्ट के अनुसार सर्वे का कार्य वर्ष 2011-12 में पूरा कर लिया गया है तथा यह परियोजना उत्तर-पूर्व रेलवे के अधीन दर्शायी गई है, जिसकी अनुमानित लागत राशि 742 करोड़ आंकी गई है। इस रिपोर्ट के मुताबिक सर्वे का कार्य पूरा कर इसे जाँच हेतु सौंपी जा चुकी हे। उल्लेखनीय है कि इस मुद्दे को स्थानीय सांसद माननीय श्री ओम प्रकाश यादव जी द्वारा भी 26 अगस्त, 2011 को संसद के तत्कालीन सत्र में जोरदार तरीके से उठाया जा चुका है, किन्तु सर्वे के बाद आगे कोई प्रगति नहीं दिख रही है।

★ लोगों का यह सपना कब तक सच होगा?

पूर्व के आन्दोलनों के विपरीत, वर्तमान आन्दोलन ज्यादा संगठित एवं व्यापक है, जिस तरह से लोगों का सहयोग प्राप्त हो रहा है, मैं समझता हूँ कि इस बार हमारी लड़ाई निर्णायक रहेगी और स्थानीय जन प्रतिनिधियों के साथ-साथ माननीय प्रधानमंत्री जी एवं माननीय रेलमंत्री जी तथा सम्बद्ध रेल प्रशासन के समक्ष हम अपनी माँग के लिए अनवरत रूप से प्रयत्नशील रहेंगे।

BUIDCo
Building Better Tomorrow

बिहार शहरी आधारभूत संरचना विकास निगम लि०

(बिहार सरकार का उपक्रम)

पश्चिमी बोरिंग केनाल रोड, राजापुर, पटना - 800001

फोन नं०-91.612.2506109/208, फैक्स नं०- 91-612-2506132,

Email id-*mdbuidco@gmail.com*

बुडको ; एक नजर में

राज्य के शहरी क्षेत्रों में आधारभूत संरचनाओं के अभाव एवं उनके विकास में हो रहे विलम्ब पर निजात पाने के उद्देश्य से बिहार सरकार द्वारा 16 जून 2009 को ''बिहार शहरी आधारभूत संरचना विकास निगम लि० (बुडको)'' का गठन किया गया था। ''बुडको'' बिहार सरकार की एक नोडल कार्यकारी एजेन्सी है, जिसके माध्यम से बिहार राज्य के विभिन्न शहरों के अधीन JnNURM, NGRBA, ADB, World Bank एवं राज्य सरकार सम्पोषित शहरी विकास योजनाओं का क्रियान्वयन किया जा रहा है। सारांशित रूप से उल्लेखनीय है कि अपने स्थापना के पश्चात् अल्प अवधि में ही बुडको बिहार नगर निकायों के विकासोन्मुखी योजनाओं का सफल कार्यान्वयन करते हुए अपने ''मिशन'' की ओर अग्रसर है।

''बुडको बेहतर कल के लिए''

सामाजिक एवं बौद्धिक क्षेत्र में रोजगार का सुनहरा अवसर

केवल सच सामाजिक संस्थान और श्रुति कम्युनिकेशन ट्रस्ट अपने भविष्य के आगामी योजनाओं में सामाजिक एवं बौद्धिक सुधार के क्षेत्र में पुर्नजागरण के शंखनाद हेतु बिहार और झारखण्ड राज्य के मेधावी/सक्षम/योग्य/दक्ष एवं कर्मठ नवयुवकों को अपने टीम में वैतनिक/अवैतनिक रूप से जुड़ने के लिए अवसर प्रदान करना चाहती है। उक्त स्वयंसेवी संस्थान मुख्य रूप से 'अपना घर' (वृद्धाश्रम आवास योजना), परिवार परामर्श केन्द्र, शिक्षा का संक्षिप्त पाठ्यक्रम (मूल रूप से निर्धन/बेसहारा लड़कियों हेतु) और विभिन्न मुद्दों पर जागरूकता कार्यक्रम पर ध्यान केन्द्रीत करना चाहती है। इन कार्यक्रमों से जुड़कर नवयुवक सामाजिक क्षेत्र में अपनी हिस्सेदारी सुनिश्चित कर सकते हैं। उक्त संगठन इसके लिए टीम वर्क के तहत कार्य करना चाहती है, जिसके अंतर्गत राष्ट्रीय समन्वयक के अधीन वार्ड/ पंचायत/ प्रखण्ड/ अनुमण्डल/जिला समन्वयकों की नियुक्ति भी करना चाहती है। इस संस्थान से जुड़कर इच्छुक नवयुवक उक्त पदों पर अपनी भागीदारी सुनिश्चित कर सकते हैं।

संस्थान

shruti कम्युनिकेशन ट्रस्ट

श्रुति कम्युनिकेशन ट्रस्ट

भारतीय ट्रस्ट अधिनियम 1882 के तहत संचालित

निबंधन संख्या : 22333/2008, आयकर निबंधित : 12 ए ए/2012-13/2549-52 | 80 जी (5)/तक०/2013-14/1073

www.shruticommunicationtrust.org

केवल सच सामाजिक संस्थान

भारतीय सोसायटी एक्ट 21, 1860 के तहत निबंधित

निबंधन संख्या : 1141 (2009-10), आयकर निबंधित : 12 ए ए/2012-13/2505-8 | 80 जी (5)/तक०/2013-14/1060-63

KEWAL SACH SAMAJIK SANSTHAN

www.ks3.org.in

Regd. Office:- East Ashok Nagar, House No.-28/14, Road No.-14, kankarbagh, Patna- 8000 20 (Bihar)
Jharkhand State Office:- Sector - 1, Block - 22, Flat No.- 303, Khelgaon Houseing Colony, Hotwar, Ranchi
Mob.- 9431073769

महाराजा अग्रसेन केवल सच सम्मान-2019

दिनांक
15 सितम्बर 2019
स्थान
रिम्स सभागार
समय
3 PM

ब्रजेश मिश्र
संस्थापक सह संपादक
केवल सच ग्रुप

केवल सच
Kewal Sach TIMES
www.kewalsachtimes.com
Kewalsachlive.in
वेब पोर्टल न्यूज
24 घंटे आपके साथ
www.kewalsachlive.in

प्रायोजक-श्रुति कम्युनिकेशन ट्रस्ट

प्रधान कार्यालय- पूर्वी अशोक नगर, रोड नं.-14, मकान सं. 14/28, कंकड़बाग, पटना-800020 (बिहार)
झारखण्ड कार्यालय- खेलगाँव हाउसिंग कॉम्प्लेक्स, सेक्टर-1, ब्लॉक-22, फ्लैट नं.-303, होटवार, राँची (झारखण्ड)

सम्पर्क करें :- 9431073769, 8340360961